سُورَةُ المُلْكِ

सूरतुल मुल्क-६७

सूरः मुल्क* मक्का में अवतरित हुई, इसमें तीस आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

تَبَٰرَكَ ٱلَّذِي بِيَدِهِ ٱلۡمُلۡكُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ١

(१) अति शुभ है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है[1] तथा जो प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

ٱلَّذِي خَلَقَ ٱلۡمَوۡتَ وَٱلۡحَيَوٰةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلٗا

(२) जिसने जीवन तथा मृत्यु को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें

---

*इसकी प्रधानता में अनेक हदीसें आयी हैं, जिनमें से कुछ सहीह अथवा हसन हैं। एक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की किताब में एक सूरह है जिसमें मात्र ३० आयतें हैं। यह इंसान की सिफ़ारिश करेगी यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया जायेगा।" (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा तथा मुसनद अहमद २\२९९,३२१) दूसरी रिवायत में है। "कुरआन पाक की एक सूरत है, जो अपने पढ़ने वाले की ओर से लड़ेगी यहाँ तक कि उसे स्वर्ग में प्रवेश दिलायेगी।" (मजमउज़ ज़वायेद ७\१७२, ज़करहुल अलबानी फ़िल जामेइस सग़ीर न॰ ३६४४) तिर्मिज़ी की एक रिवायत में यह भी वर्णन किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में सोने से पहले सूरह अलिफ़॰लाम॰मीम॰ अस-सजदा, तथा सूरः मुल्क अवश्य पढ़ते थे। (अबवाबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन) एक रिवायत अल्लामा अलबानी ने अस-सहीहा में उद्धृत की है سُورَةُ تَبَارَكَ هِيَ المَانِعَةُ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ "सूरह मुल्क क़ब्र की यातना से रोकने वाली है" (न॰ ११४० भाग ३ पृष्ठ १३१) अर्थात जो उसे पढ़ता रहेगा आशा है कि क़ब्र की यातना से सुरक्षित रहेगा, प्रतिबंध यह है कि वह इस्लाम के आदेशों एवं अनिवार्यताओं का पालन करता रहे।

[1]تَبَارَكَ तबारक بَرَكَةٌ से है النَّمَاءُ والزِّيَادَةُ बढ़ने तथा अधिक होने के अर्थ में है। कुछ ने अर्थ किया है सृष्टि के गुणों से सर्वोच्च तथा महान تفاعل का रूप अतिशय के लिए है। "उसी के हाथ में राज्य है" अर्थात प्रत्येक प्रकार का सामर्थ्य तथा प्रभुत्व उसी को प्राप्त है, वह सृष्टि में जैसे चाहे, जो चाहे करे, कोई उसे रोक नहीं सकता। वह राजा को रंक तथा रंक को राजा बना दे, निर्धन को धनी तथा धनी को निर्धन कर दे, कोई उसकी हिक्मत तथा इच्छा में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾

से अच्छे कर्म कौन करता है,[1] तथा वह प्रभाव-शाली एवं क्षमा करने वाला है।

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَٰنِ مِن تَفَاوُتٍ ۖ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ﴿٣﴾

(३) जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (तो हे देखने वाले ! अल्लाह) दयावान की उत्पत्ति में कोई असंगति न देखेगा,[2] पुन: पलटकर देख ले कि कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है।[3]

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿٤﴾

(४) फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी दृष्टि तेरी ओर हीन (तथा विवश) होकर थकी हुई लौट आयेगी।[4]

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِّلشَّيَاطِينِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿٥﴾

(५) और नि:संदेह हमने आकाशीय संसार को दीपों (तारों) से सुशोभित किया तथा उन्हें शैतानों को मारने का साधन बना दिया [5] और शैतानों के लिए हमने (नरक में जलाने वाली) यातना तैयार कर दिया।

---

[1]आत्मा एक ऐसी अदृश्य वस्तु है कि जिस शरीर से उसका सम्बन्ध तथा लगाव हो जाये वह जीवित कहलाता है तथा जिस शरीर से उसका सम्बन्ध टूट जाये वह मौत से मिल जाता है। अल्लाह ने यह सामयिक जीवन-क्रम इसलिए स्थापित किया है ताकि वह परीक्षा ले कि इस जीवन का सही प्रयोग कौन करता है ? जो उसे ईमान तथा आज्ञा-पालन के लिए प्रयोग करेगा उसके लिए उत्तम फल है तथा दूसरों के लिए यातना।

[2]अर्थात कोई विपरीतता, कोई टेढ़ापन तथा कोई कमी नहीं, अपितु वह पुर्णत: सीधे एवं सामान्य हैं, जो इसका संकेत देते हैं कि इन सबका रचयिता केवल एक है, अनेक नहीं।

[3]कई बार देखने से कुछ कमी तथा दोष निकल आता है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि बार-बार देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देती है ?

[4]यह अधिक बल देने के लिये है जिसका आशय अपने विशाल सामर्थ्य तथा एकता को अधिक स्पष्ट करना है।

[5]यहाँ तारों के दो लक्ष्य बताये गये हैं, एक आकाशों की शोभा क्योंकि वह दीपों के समान जलते दिखाई देते हैं। दूसरे, यदि शैतान आकाशों की ओर जाने का प्रयास करते हैं तो यह आग बनकर उन पर गिरते हैं। तीसरे, उनका यह उद्देश्य है जिसे दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है कि उनसे जल-थल में मार्ग का संकेत मिलता है।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑥

(६) तथा अपने प्रभु के साथ कुफ्र करने वालों के लिए नरक की यातना है, तथा वह क्या ही बुरा स्थान है।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ⑦

(७) जब उसमें ये डाले जायेंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे तथा वह उबाल खा रहा होगा।[1]

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑧

(८) (प्रतीत होगा कि अभी) क्रोध के मारे फट पड़ेगी,[2] जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जायेगा उससे नरक के दरोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था ?[3]

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ⑨

(९) वे उत्तर देंगे कि नि:संदेह आया तो था, परन्तु हमने उसे झुठलाया तथा कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी अवतरित नहीं किया। तुम बहुत बड़े कुपथ में ही हो।[4]

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑩

(१०) तथा कहेंगे कि यदि हम सुनते होते अथवा समझते होते तो नरकवासियों में

---

[1] شَهِيق उस ध्वनि को कहते हैं जो गधा प्रथम वार निकालता है, यह अत्यन्त वुरी ध्वनि होती है। नरक भी गधे की भाँति चीख चिल्ला रहा तथा आग पर रखी हाँडी के समान खौल रहा होगा।

[2] अर्थात क्रोध तथा रोष के मारे उसके एक भाग एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे। यह नरक काफ़िरों को देखकर क्रोधित हो जायेगा। जिसकी समझ अल्लाह तआला उसके भीतर पैदा कर देगा। अल्लाह तआला के लिए नरक के भीतर वोध तथा संवेदन पैदा कर देना कोई कठिन नहीं है।

[3] जिसके कारण आज तुम्हें नरक की यातना का स्वाद चखना पड़ा है।

[4] अर्थात हमने पैग़म्बरों को मानने की जगह उनका इंकार कर दिया, आसमानी किताबों को नहीं माना, यहाँ तक कि अल्लाह के पैग़म्बरों से हमने कहा कि तुम बड़ी गुमराही में लिप्त हो।

(सम्मिलित) न होते ।[1]

(११) तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया ।[2] अब ये नरकवासी हट जायें (दूर हों) ।[3]

فَاعْتَرَفُوا بِذَنۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ ﴿١١﴾

(१२) नि:संदेह जो लोग अपने प्रभु से बिने देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए क्षमा है तथा बड़ा बदला है ।[4]

إِنَّ ٱلَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِٱلْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

(१३) तथा तुम अपनी बातों को चुपके से कहो अथवा ऊँचे स्वर में,[5] वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी भली-भाँति जानता है ।[6]

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ ٱجْهَرُوا بِهِۦٓ ۖ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١٣﴾

---

[1]अर्थात ध्यान से सुनते तथा उनकी बातों एवं उपदेशों को मानते, इसी प्रकार अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से भी सोचने समझने का काम लेते तो आज हम नरकवासियों में सम्मिलित न होते ।

[2]जिसके कारण यातना के पात्र बने, तथा वह है कुफ़्र (अविश्वास) तथा अम्बिया अलैहिमुस्सलाम (ईशदूतों) को झुठलाना ।

[3]अर्थात अब उनके लिए अल्लाह तथा उसकी दयालुता से दूरी ही दूरी है । कुछ कहते हैं कि سُحْقٌ (सुहक) नरक की एक वादी का नाम है ।

[4]यह काफ़िरों तथा झुठलाने वालों के मुक़ाबले में ईमानवालों का तथा उन वरदानों का वर्णन है जो उन्हें क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह के पास प्राप्त होगा । بِالْغَيْبِ का एक भावार्थ यह है कि उन्होंने अल्लाह को देखा तो नहीं, किन्तु पैग़म्बरों को मानते हुए वह अल्लाह की यातना से डरते रहे । दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि लोगों की निगाहों से ओझल, अर्थात एकांत में अल्लाह से डरते रहे ।

[5]यह काफ़िरों से फिर संबोधन है । अभिप्राय यह है कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में छुपकर बातें करो अथवा खुलकर, सब अल्लाह के ज्ञान में है, उससे कोई बात छिपी नहीं ।

[6]यह चुपके एवं स्वर से की जाने वाली बात को जानने का कारण बताया जा रहा है कि वह तो मनोगत विचारों तक से अवगत है, तो तुम्हारी बातें किस प्रकार उससे छिपी रह सकती हैं ? प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात नहीं रह सकतीं ।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

(१४) क्या वही न जाने जिसने पैदा किया ?[1] फिर वह सूक्ष्मदर्शी एवं जानने वाला भी हो ।[2]

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

(१५) वह वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (एवं वशीभूत) बनाया[3] ताकि तुम उसके मार्गों पर आवागमन करते रहो[4] तथा उस की प्रदान की हुई जीविका को खाओ-पिओ,[5] उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है ।

أَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾

(१६) क्या तुम इस बात से निर्भय हो गये हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे तथा सहसा धरती कंपित हो उठे ।[6]

---

[1]अर्थात सीनों एवं हृदय में पैदा होने वाले विचार का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, तो किया वह अपनी सृष्टि से अज्ञान रह सकता है, प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात नहीं रह सकता ।

[2]"لَطِيف" का अर्थ है सूक्ष्मदर्शी, "अर्थात जिसका ज्ञान इतना सूक्ष्म है कि मनोगत बातों को भी वह जानता है ।" (फ़तहुल क़दीर)

[3]"ذَلُول" का अर्थ है अधीन, जो तुम्हारे आगे झुक जाये, सिर न फेरे । अर्थात धरती को तुम्हारे लिए कोमल तथा सरल कर दिया है । उसे इतनी कड़ी नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर आवाद होना तथा यातायात कठिन हो ।

[4]"مَنَاكِب" बहुवचन है "مَنْكِب" का जिसका अर्थ है ओर । यहाँ अभिप्राय मार्ग तथा दिशायें हैं यह आज्ञा औचित्य के लिए है, अर्थात उसके मार्गों में चलो ।

[5]अर्थात धरती की उपज से खाओ, पिओ ।

[6]अल्लाह जो आकाशों पर अर्थात सर्वोच्च आसन पर उच्चय है, यह काफ़िरों को डराया जा रहा है कि आकाशों का मालिक अल्लाह जब चाहे तुम्हें धरती में धंसा दे । अर्थात वही धरती जो तुम्हारा निवास-स्थान तथा तुम्हारी जीविका का भण्डार एवं उद्गम है, अल्लाह उसी धरती को जो अति शान्त है, गति तथा कंपन में लाकर तुम्हारे विनाश का कारण बना सकता है ।

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾

(१७) अथवा क्या तुम इस बात से निर्भीक हो गये हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे ?[1] फिर तो तुम्हें ज्ञात हो ही जायेगा कि मेरा डराना कैसा था[2]

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾

(१८) तथा उनसे पूर्व के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा प्रकोप कैसा कुछ हुआ ?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

(१९) क्या ये अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए तथा (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते,[3] उन्हें (अल्लाह) परम दयालु ही (वायुमण्डल तथा आकाश में) थामे हुए है।[4] निःसंदेह प्रत्येक वस्तु उसकी दृष्टि में है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾

(२०) अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके।[5] काफ़िर तो पूर्णरूप से धोखे ही में हैं।[6]

---

[1]जैसे उसने लूत की जाति तथा असहाबुल फ़ील (हाथी वाले अबरहा तथा उसकी सेना) पर बरसाये तथा पत्थरों की वर्षा से उनका विनाश कर दिया।

[2]परन्तु उस समय यह ज्ञान व्यर्थ होगा।

[3]अर्थात पखेरू जब हवा में उड़ता है तो वह पंख पसार लेता है तथा कभी उड़ने के बीच पंखों को सिकोड़ लेता है। यह फैलाना صَفٌّ (सफ़्फ़) तथा सिकोड़ना قَبْضٌ (क़ब्ज़) है।

[4]अर्थात उड़ान के समय इन पक्षियों को थाम रखने वाला कौन है, जो उन्हें धरती पर गिरने नहीं देता। यह अल्लाह दयावान ही के सामर्थ्य का एक नमूना है।

[5]यह प्रश्न डाँट फटकार के लिये है। جُندٌ का अर्थ है सेना, जत्था, अर्थात कोई सेना तथा जत्था ऐसा नहीं है जो तुम्हें अल्लाह की यातना से बचा सके।

[6]जिसमें उन्हें शैतान ने ग्रस्त कर रखा है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

(२१) यदि अल्लाह (तआला) अपनी जीविका रोक ले, तो(बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जीविका चलायेगा ?[1] बल्कि (काफ़िर) तो उद्दण्डता एवं विमुख होने पर दृढ़ हो गये हैं ।[2]

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

(२२) अच्छा वह व्यक्ति अधिक मार्गदर्शन पर है जो अपने मुख के बल औंधा होकर चले[3] अथवा वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे मार्ग पर चल रहा हो ?[4]

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

(२३) कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया[5] तथा तुम्हारे कान, आँखें

---

[1]अर्थात अल्लाह वर्षा न करे, अथवा धरती ही को उपज से रोक दे, अथवा तैयार फसलों को नाश कर दे, जैसाकि कभी-कभी ऐसा करता है जिसके कारण तुम्हारे खाद्य का क्रम रुक जाये । यदि अल्लाह ऐसा कर दे तो क्या कोई और है जो अल्लाह की इस इच्छा के विपरीत तुम्हें जीविका प्रदान कर दे ?

[2]अर्थात शिक्षा तथा सदुपदेश की इन बातों का उन पर कोई प्रभाव नहीं होता, अपितु वह सत्य से विमुखता तथा घृणा ही में बढ़ते चले जा रहे हैं, शिक्षा ग्रहण करते हैं न चिन्ता-मनन करते हैं ।

[3]मुँह के बल औंधे चलने वाले को दायें-बायें तथा आगे कुछ नहीं दिखता, न वह ठोकरों से सुरक्षित रहता है । क्या ऐसा व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है ? निश्चय वह नहीं पहुँच सकता । इसी प्रकार संसार में अल्लाह की आज्ञा का पालन न करने वाला व्यक्ति परलोक की सफलता से वंचित रहेगा ।

[4]जिसमें कोई टेढ़ापन न हो तथा उसे आगे एवं दायें-बायें भी दिख रहा हो । खुली बात है कि यह अपने नियमित लक्ष्य तक पहुँच जायेगा । अर्थात अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला परलोक में सफल (प्रसन्न) रहेगा । कुछ कहते हैं कि यह मोमिन तथा काफ़िर दोनों की स्थिति का वर्णन है जो उनकी प्रलय के दिन होगी । काफ़िर मुँह के बल नरक में ले जाये जायेंगे तथा मोमिन सीधे अपने पगों पर चलकर स्वर्ग में जायेंगे । जैसे काफ़िरों के बारे में अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ﴾

"हम उन्हें क़यामत के दिन मुँह के बल एकत्र करेंगे ।" (सूर: बनी इस्राईल-९७)

[5]अर्थात पहली बार पैदा करने वाला अल्लाह ही है ।

وَالْأَفْـِٔدَةَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

एवं दिल बनाये ।[1] तुम बहुत ही कम कृतज्ञता व्यक्त करते हो ।[2]

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) कह दीजिए कि वही है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया तथा उसकी ओर तुम एकत्रित किये जाओगे ।[3]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा (काफिर) पूछते हैं कि वह वायदा कब प्रकट होगा यदि तुम सच्चे हो (तो बताओ) ?[4]

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾

(२६) (आप) कह दीजिए इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है ।[5] मैं तो स्पष्ट रूप से सावधान कर देने वाला हूँ ।[6]

---

[1]जिनसे तुम सुन सको, देख सको तथा अल्लाह की रचना में चिंतन-मनन कर उसका ज्ञान प्राप्त कर सको । तीन शक्तियों की चर्चा किया है, जिनसे इंसान देखने, सुनने तथा समझने की चीज़ों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है । यह एक प्रकार से तर्क की पूर्ति भी है तथा अल्लाह के इन उपकारों पर कृतज्ञता न दिखाने की निन्दा भी । इसी कारण आगे फ़रमाया, "तुम बहुत ही कम कृतज्ञता दिखाते हो ।"

[2]अर्थात شكراً قليلاً अथवा زمناً قليلاً कम कृतज्ञता से तात्पर्य उनकी ओर से कृतज्ञता का न होना है । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात इंसानों को रचकर धरती पर फैलाने वाला भी वही है तथा प्रलय के दिन सबको एकत्र भी उसी के पास होना है, किसी अन्य के पास नहीं ।

[4]काफ़िर यह उपहास स्वरूप तथा प्रलय को असंभव समझते हुए कहते थे ।

[5]उसके सिवा कोई नहीं जानता । दूसरे स्थान पर फ़रमाया:

﴿قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي﴾

"आप कह दीजिए कि इसका ज्ञान केवल मेरे प्रभु ही के पास है ।" (अल-आराफ़-१८७)

[6]अर्थात मेरा काम तो उस परिणाम से डराना है जो मुझे झुठलाने के कारण तुम्हारा होगा । दूसरे शब्दों में मेरा काम सावधान करना है, परोक्ष की ख़बरें बताना नहीं, परन्तु यह कि जिस के सम्बन्ध में अल्लाह स्वयं मुझे बता दे ।

(२७) जब ये लोग उस[1] (वादे) को निकटतम पा लेंगे, उस समय इन काफ़िरों के मुख बिगड़ जायेंगे[2] तथा कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे ।[3]

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ۝٢٧

(२८) (आप) कह दीजिए ! कि ठीक है यदि मुझे तथा मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) नष्ट कर दे अथवा हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफ़िरों को कष्टदायी यातना से कौन बचायेगा ?[4]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢٨

(२९) (आप) कह दीजिए कि वही परम दयालु है, हम तो उस पर ईमान ला चुके[5] तथा उसी पर हमने भरोसा किया ।[6] तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा कि स्पष्ट भटकावे में कौन है ?[7]

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٩

---

[1]رَاَوْهُ में अधिकांश व्याख्याकारों के विचार के अनुसार सर्वनाम क़यामत की यातना की ओर फिर रहा है ।

[2]अर्थात अपमान, भयानकता तथा डर से उनके चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी, जिस को दूसरे स्थान पर चेहरों के काले होने से व्यंजित किया गया है । (आले-इमरान,१०६)

[3]تَدَّعُوْنَ (तद्दऊन) तथा تَدْعُوْنَ (तुदऔन) दोनों एक ही अर्थ में हैं । अर्थात यह यातना जो तुम देख रहे हो वही है जिसकी तुम संसार में तुरन्त माँग कर रहे थे । जैसे सूरह साद,१६ तथा अल-अंफ़ाल,३२ आदि में है ।

[4]अभिप्राय यह है कि इन काफ़िरों को तो अल्लाह की यातना से कोई बचाने वाला नहीं है, चाहे अल्लाह अपने रसूल तथा उस पर ईमान लाने वालों को मौत अथवा हत्या द्वारा नाश कर दे अथवा उन्हें अवसर प्रदान कर दे । अथवा यह अर्थ है कि हम ईमान लाकर भी भय तथा आशा के बीच हैं "तो तुम्हारे क़ुफ़्र के बावजूद तुम्हें यातना से कौन बचायेगा ?"

[5]अर्थात उसकी एकता पर, इसीलिए उसके साथ साझी नहीं बनाते ।

[6]किसी और पर नहीं । हम अपने सभी मामले उसी को समर्पित करते हैं । किसी और को नहीं, जैसे मिश्रणवादी करते हैं ।

[7]तुम हो या हम, इसमें काफ़िरों के लिए कड़ी धमकी है ।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾

(३०) (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारे (पीने का) पानी धरती चूस जाये, तो कौन है, जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ पानी लाये ।[1]

सूरतुल क़लम-६८

سُورَةُ الْقَلَمِ

सूर: क़लम मक्के में अवतरित हुई, इसमें बावन आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु अत्यन्त कृपालु है ।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾

(१) नून॰[2] सौगन्ध है क़लम की[3] तथा उसकी जो कुछ कि वे (फ़रिश्ते) लिखते हैं ।[4]

---

[1] غَـــورًا (गौर) का अर्थ है सुख जाना अथवा इतनी गहराई में चला जाना कि वहाँ से पानी निकालना संभव न हो । अर्थात यदि अल्लाह तआला पानी सुखा दे कि उसका अस्तित्व ही न रह जाये या इतनी गहराई में कर दे कि पानी निकालने की सब मशीनें विफल हो जायें तो बताओ फिर कौन है जो प्रवाहित, स्वच्छ, निथरा जल सुलभ करा दे ? अर्थात कोई नहीं है । यह अल्लाह की दया है कि तुम्हारी अवज्ञा के उपरान्त भी वह तुम्हें जल से वंचित नहीं करता ।

[2] ن उसी प्रकार का अलग अक्षरों में से है, जैसे इससे पहले ص ، ق तथा अन्य सूरतों के आरम्भिक अक्षर गुज़र चुके हैं ।

[3] क़लम की सौगन्ध खाई जिसका इसलिए एक महत्व है कि इसके द्वारा वर्णन तथा व्याख्या होता है । कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य वह विशेष क़लम है जिसे अल्लाह ने सर्वप्रथम पैदा किया तथा उसे भाग्य लिखने का आदेश दिया । अत: उसने अंत तक सभी होने वाली चीज़ों को लिख दिया । (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूरते नून वल क़लम तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

[4] يَسْطُرُونَ में सर्वनाम लेखकों की ओर फिरता है जिसको क़लम शब्द बता रहा है, क्योंकि लिखने के यंत्र की चर्चा से लेखक का अस्तित्व आवश्यक होता है । अभिप्राय यह है कि उस लेख की भी सौगन्ध जो लेखक लिखते हैं, अथवा फिर सर्वनाम फ़रिश्ते की ओर फिरता है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है ।

مَآ أَنتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝٢
(२) आप अपने प्रभु की कृपा से पागल नहीं हैं ।[1]

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝٣
(३) तथा निःसंन्देह आपके लिए अनन्त बदला है ।[2]

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝٤
(४) तथा निःसंदेह आप अति (उत्तम) स्वभाव पर हैं ।[3]

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ۝٥
(५) तो अब आप भी देख लेंगे तथा यह भी देख लेंगे ।[4]

بِأَييِّكُمُ الْمَفْتُونُ ۝٦
(६) कि तुम में से भ्रष्ट कौन है ।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝٧
(७) निःसंदेह तेरा प्रभु अपने मार्ग से भटकने वालों को भली-भाँति जानता है, तथा वह सत्यमार्गियों को भी भली-भाँति जानता है ।

---

[1]यह सौगन्ध का उत्तर है, जिसमें काफ़िरों के कथन का खण्डन है, वह आप को दीवाना कहते थे ।

[2]नुबूवत (दूतत्व) के कर्तव्य को पूरा करने के लिए जो भी दुख आप ने सहन किये तथा शत्रुओं के व्यंग आप ने सुने हैं उस पर अल्लाह की ओर से अनंत बदला (प्रतिफल) आप के लिए है । مَنّ का अर्थ काटना है ।

[3]خُلُقٍ عَظِيمٍ से तात्पर्य इस्लाम धर्म अथवा पवित्र क़ुरआन है । अभिप्राय यह है कि तू उस स्वभाव पर है जिसका आदेश तुझे अल्लाह ने क़ुरआन में अथवा इस्लाम धर्म में दिया है । अथवा इससे अभिप्राय वह सभ्यता, शिष्टाचार, कोमलता, उदारता, अमानत, सत्यता, सहनशीलता, श्रेष्ठता तथा अन्य नैतिक गुण हैं, जिनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी होने से पहले विशेषता रखते थे तथा नबी होने के पश्चात भी उनमें अधिक ऊँचाई तथा विस्तार हुआ । इसीलिए जब आदरणीया आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आपके आचरण के बारे में प्रश्न किया गया तो फ़रमाया : «كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ». (मुस्लिम, किताबुल मुसाफ़िरीन, बाबु जामेए सलातिल लैले व मन नाम अन्हु औ मरेज़) आदरणीया आयेशा का उत्तर खुल्क़े अज़ीम (خُلُقٍ عَظِيمٍ) के उपरोक्त दोनों भावार्थों को घेरे हुए है ।

[4]अर्थ जब सत्य खुल जायेगा तथा सब पर्दे उठ जायेंगे और यह प्रलय के दिन होगा । कुछ ने इसे बद्र के रण से संबधित बताया है ।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑧

(८) तो आप झुठलाने वालों की (बात) स्वीकार न करें ।[1]

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ⑨

(९) वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो ये भी ढीले पड़ जायें ।[2]

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ⑩

(१०) तथा आप किसी ऐसे व्यक्ति का भी कहना न मानें जो अधिक सौगन्धें खाने वाला हीन हो ।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيْمٍ ⑪

(११) दुष्ट, दुराचारी तथा चुगली करने वाला हो ।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫

(१२) भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो ।

عُتُلٍّۢ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ⑬

(१३) घमंडी फिर साथ ही कुवंश हो ।[3]

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ⑭

(१४) (उसकी उद्दण्डता) केवल इसलिए है कि वह धनवान तथा पुत्रों वाला है ।[4]

---

[1]आज्ञापालन का अर्थ यहाँ वह कोमलता है जो इंसान अपनी अंतरात्मा के विपरीत दिखाता है । अर्थात मुशरिकों (बहुदेववादियों) की ओर झुकने तथा उनसे कोमलता करने की आवश्यकता नहीं है ।

[2]अर्थात वह तो चाहते हैं कि तू उनके पूज्यों के सम्बन्ध में कोमल स्वभाव अपनाये । किन्तु असत्य के साथ कोमल स्वभाव का परिणाम यह होगा कि असत्य के पुजारी अपनी अनृत की पूजा छोड़ने में ढीले हो जायेंगे । अत: सत्य के विषय में आलस्य, धर्म के प्रचार के विषय में नीति एवं नुबूवत (दूतत्व) के कार्य के लिए अति हानिकारक है ।

[3]यह उन काफ़िरों के नैतिक पतन की चर्चा है जिनके कारण पैग़म्बर को आलस्य करने से रोका जा रहा है । यह दुगुर्ण किसी एक व्यक्ति के वर्णन किये गये हैं अथवा साधारण काफ़िरों के ? पहली बात का श्रोत यद्यपि कुछ रिवायतें हैं, परन्तु वे अप्रमाणिक हैं । अत: उद्देश्य साधारण है अर्थात प्रत्येक वह व्यक्ति है जिसमें उक्त गुण पाये जायें । زَنِيْم हरामी अथवा कुख्यात एवं बदनाम है ।

[4]अर्थात उक्त दुराचार का काम वह इसलिए करता है कि अल्लाह ने उसे धन एवं संतान के वरदानों से सम्पन्न किया है, अर्थात वह कृतज्ञता के बदले कृतघ्नता करता है । कुछ ने इसे وَلَا تُطِعْ से सम्बन्धित किया है, अर्थात जिसमें यह बुराईयां हों उसकी बात केवल इस लिये मान ली जाये कि वह धन तथा संतान वाला है ।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑮

(१५) जब उसके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये तो पूर्व के लोगों की कथायें हैं।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ⑯

(१६) हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग देंगे ।[1]

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ⑰

(१७) नि:संदेह हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली,[2] जिस प्रकार हमने बाग़ वालों की परीक्षा ली थी ।[3] जबकि उन्होंने सौगन्ध खायी कि प्रात: होते ही उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे ।[4]

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ⑱

(१८) तथा इंशा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा ।

---

[1]कुछ के निकट इस का संबंध संसार से है, कहा जाता है कि बद्र के रण में उन काफ़िरों की नाकों को तलवारों का निशाना बनाया गया । कुछ कहते हैं कि यह क़यामत के दिन नरकवासियों का चिन्ह होगा कि उनकी नाकों को दाग दिया जायेगा, अथवा इसका अभिप्राय चेहरों की कालिमा है, जैसाकि काफ़िरों के चेहरे उस दिन काले होंगे । कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का यह परिणाम लोक-परलोक दोनों जगह संभव है ।

[2]अभिप्राय मक्कावासी हैं । उन्हें धन एवं संतान दिया ताकि वह अल्लाह की कृतज्ञता दिखायें, परन्तु उन्होंने कृतघ्नता तथा घमण्ड का मार्ग अपनाया तो हमने उन्हें भूख तथा अकाल की परीक्षा में डाल दिया, जिसमें वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के कारण कुछ दिन फंसे रहे ।

[3]बाग़ वालों की कथा अरबों में प्रसिद्ध थी । यह बाग़ सन्आ (यमन) से दो फरसंग (छ: मील) की दूरी पर था । उसका स्वामी उसकी उपज में से कुछ भाग ग़रीबों तथा निर्धनों पर भी ख़र्च करता था जब उसकी संतान उसकी उत्तराधिकारी बनी तो उन्होंने कहा कि हमारा ख़र्च ही कठिनाई से पूरा होता है तो हम उसकी आय ग़रीबों तथा दरिद्रों को कैसे दें इसलिए अल्लाह ने उस बाग़ ही को ध्वस्त कर दिया । कहते हैं कि यह घटना आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम के आकाश पर उठाये जाने के कुछ समय पश्चात ही हुई । (फ़तहुल क़दीर) यह सभी विवरण तफ़सीर वाली रिवायतों का है ।

[4]صرم का अर्थ है, फल और खेती का काटना, مُصبِحِين अवस्थावाचक है, अर्थात सुबह होते ही फल उतार लेंगे और पैदावार काट लेंगे ।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तो उस पर तेरे प्रभु की ओर से एक बला चारों ओर से घूम गयी तथा वे सो ही रहे थे ।[1]

فَأَصْبَحَتْ كَٱلصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾

(२०) तो वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती ।[2]

فَتَنَادَوْا۟ مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾

(२१) अब प्रात: होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ें दीं ।

أَنِ ٱغْدُوا۟ عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰرِمِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर प्रात:काल ही चल पड़ो ।

فَٱنطَلَقُوا۟ وَهُمْ يَتَخَٰفَتُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले ।[3]

أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا ٱلْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾

(२४) कि आज के दिन कोई निर्धन तुम्हारे पास न आये ।[4]

وَغَدَوْا۟ عَلَىٰ حَرْدٍ قَٰدِرِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जल्दी-जल्दी प्रात:काल ही पहुँच गये (समझ रहे थे) कि हम क़ाबू पा गये ।[5]

---

[1]कुछ कहते हैं कि उसे रातों-रात आग लग गई, कुछ कहते हैं कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर उसका सत्यानाश कर दिया ।

[2]अर्थात जैसे खेती कटने के पश्चात सूख जाती है, उसी प्रकार पूरा बाग़ उजड़ गया । कुछ ने अनुवाद किया है, 'काली रात की भाँति हो गया' अर्थात जलकर ।

[3]अर्थात बाग़ की ओर जाने के लिए एक तो सवेरे निकले, दूसरे चुपके-चुपके बातें करते हुए ताकि किसी को उनके जाने का ज्ञान न हो ।

[4]अर्थात वह एक-दूसरे से कहते रहे कि आज कोई बाग में आकर हमसे कुछ न माँगे जैसे हमारे बाप के समय आया करते थे तथा अपना भाग ले जाते थे ।

[5]حَرْدٌ (हर्द) का एक अर्थ तो शक्ति तथा बल किया गया है जिसको अनुवादक ने 'लपके हुए' से व्यंजित किया है । कुछ ने क्रोध तथा द्वेष किया है, अर्थात निर्धनों पर क्रोध दिखाते वा ईर्ष्या करते हुए । قَادِرِينَ अवस्थावाचक है । अर्थात अपने मामले का उन्होंने अनुमान लगा लिया अथवा अपने विचार में उन्होंने अपने बाग़ पर सामर्थ्य प्राप्त कर लिया । अथवा अभिप्राय यह है कि उन्होंने गरीबों पर क़ाबू पा लिया ।

(२६) फिर जब उन्होंने बाग़ देखा[1] तो कहने लगे कि नि:संदेह हम मार्ग भूल गये ।[2]

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۝

(२७) नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिये गये ।[3]

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝

(२८) उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि मैं तुम सबसे न कहता था कि तुम (अल्लाह की) तस्बीह क्यों नहीं करते ?[4]

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ۝

(२९) (तो) सब कहने लगे कि हमारा प्रभु पवित्र है, नि:संदेह हम ही अत्याचारी थे ।[5]

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

(३०) फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा-भला कहने लगे ।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝

(३१) कहने लगे हाय अफ़सोस ! नि:संदेह हम उद्दण्ड थे ।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ۝

(३२) क्या विचित्र है कि हमारा प्रभु हमें इससे उत्तम बदला दे दे, नि:संदेह हम अब[6] अपने

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝

---

[1]अर्थात बाग़ के स्थान को राख का ढेर अथवा उसे ध्वस्त देखा।

[2]प्रथम तो एक-दूसरे को कहा।

[3]फिर जब सोच-विचार किया तो जान गये कि यह आपदाग्रस्त तथा ध्वस्त बाग़ हमारा ही है, जिसे अल्लाह ने हमारे करतूत के बदले ऐसा कर दिया है तथा वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

[4]कुछ ने यहाँ तस्बीह का अर्थ "इन्शा अल्लाह" कहना लिया है।

[5]अर्थात अब उन्हें प्रतीत हुआ कि हमने अपने बाप के तरीके के विपरीत काम करके ग़लती की है, जिसका दण्ड अल्लाह ने हमको दिया है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि पाप का संकल्प तथा उसके लिए आरम्भिक कार्य भी पाप ही के समान अपराध है जिस पर पकड़ हो सकती है, केवल वह इरादा क्षम्य है जो मनोगति की सीमा तक रहता है।

[6]कहते हैं कि उन्होंने आपस में यह संकल्प लिया कि अब यदि अल्लाह ने हमें धन दिया तो अपने बाप के समान ग़रीबों तथा दरिद्रों को भी हिस्सा देंगे। इसलिए पश्चाताप तथा क्षमायाचना के साथ अपने प्रभु से आशायें भी संबधित कीं।

प्रभु से ही कामना (आशा) रखते हैं।

(३३) इसी प्रकार प्रकोप आता है,[1] तथा परलोक का प्रकोप बहुत बड़ा है। काश ! उन्हें बुद्धि होती।[2]

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٣

(३४) निःसंदेह सदाचारियों के लिए उनके प्रभु के पास उपहारों वाले स्वर्ग हैं।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٣٤

(३५) क्या हम मुसलमानों को पापियों के समान कर देंगे।[3]

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۝٣٥

(३६) तुम्हें क्या हो गया, कैसे निर्णय कर रहे हो ?

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝٣٦

(३७) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है[4] जिस में तुम पढ़ते हो ?

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ۝٣٧

(३८) कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों ?

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ۝٣٨

(३९) अथवा हमसे तुमने कुछ ऐसी सौगन्धें ली हैं जो क़यामत (प्रलय के दिन) तक शेष रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

---

[1]अर्थात अल्लाह के आदेश का विरोध तथा अल्लाह के दिये हुए माल में कंजूसी करने वालों का वदला हम संसार में इसी प्रकार देते हैं। (यदि हम चाहते हों)

[2]किन्तु खेद का विषय है कि वह इस तथ्य को नहीं समझते, इसलिए इसकी परवाह नहीं करते।

[3]मक्का के मुशरिक कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हम मुसलमानों से अच्छे ही होंगे, जैसे संसार में मुसलमानों से अधिक सुखी हैं। अल्लाह ने उनके उत्तर में फ़रमाया कि यह कैसे संभव है कि हम मुसलमानों अर्थात अपने आज्ञाकारियों को अपराधियों अर्थात अवज्ञाकारियों के समान कर दें। अभिप्राय है कि यह कभी नहीं हो सकता कि अल्लाह न्याय एवं औचित्य के विपरीत दोनों को समान कर दे।

[4]जिसमें यह बात लिखी हो जिसका तुम दावा कर रहे हो, कि वहाँ भी तुम्हारे लिए वह कुछ होगा जिसे तुम चाहते हो ?

لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾

अपनी ओर से निर्धारित कर लो ?[1]

سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का उत्तरदायी (एवं दावेदार) है ।[2]

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

(४१) क्या उनके कुछ साझीदार हैं ? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आयें यदि ये सच्चे हैं ।[3]

يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी तथा सजदा करने के लिए बुलाये जायेंगे तो (सजदा) न कर सकेंगे ।[4]

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ

(४३) उनकी आँखें नीची होंगी तथा उन पर अपमान (तथा अनादर) आच्छादित हो रहा

---

[1]अथवा हमने तुम्हें दृढ़ वचन दे रखा है, जो क़यामत तक शेष रहने वाला है कि तुम्हारे लिए वही कुछ होगा जिसका तुम अपने सम्बन्ध में निर्णय करोगे ।

[2]कि वह क़यामत के दिन उनके लिए वही कुछ निर्णय करायेगा जो अल्लाह मुसलमानों के लिए करेगा ।

[3]अथवा जिनको उन्होंने अल्लाह का साझी बना रखा है, वे उनकी सहायता करके उनको अच्छा स्थान दिलायेंगे ? यदि उनके साझीदार ऐसे हैं तो उन्हें सामने लायें ताकि उनकी सच्चाई स्पष्ट हो ।

[4]कुछ ने पिंडली खोलने का अर्थ क़ियामत की कठिनाईयाँ तथा भयानकता ली हैं, किन्तु एक सहीह हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार वर्णित हुई है कि क़यामत के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा (जैसे उसकी महिमा के योग्य है) तो प्रत्येक मोमिन पुरूष तथा स्त्री उसके आगे सजदे में गिर जायेंगे । हाँ, वह लोग शेष रह जायेंगे जो दिखावे तथा नाम के लिए सजदे किया करते थे । वह सजदा करना चाहेंगे तो उनकी रीढ़ की अस्थि तख़्ते के समान बन जायेगी जिसके कारण उनका झुकना असंभव हो जायेगा । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरे नून वल क़लम) अल्लाह यह पिंडली कैसे खोलेगा तथा यह कैसी होगी ? यह हम न जान सकते हैं न ब्यान कर सकते हैं । इसलिए जिस प्रकार किसी उपमा के बिना हम उसके कान, आँखों तथा हाथ आदि पर विश्वास रखते हैं, ऐसे ही पिंडली की बात भी कुरआन तथा हदीस में है । जिस पर बिना उपमा के विश्वास रखना आवश्यक है । यही सलफ़ एवं मुहद्देसीन (हदीस के विशेषज्ञों का मत है)

وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

होगा,[1] हालांकि ये सजदे के लिए (उस समय भी) बुलाये जाते थे जब भले-चंगे थे ।[2]

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) तो मुझे तथा इस बात को झुठलाने वाले को छोड़ दे,[3] हम उन्हें इस प्रकार धीरे-धीरे खींचेंगे कि उन्हें ज्ञात भी न होगा ।[4]

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा मैं उन्हें ढील दूंगा, नि:संदेह मेरी योजना बड़ी दृढ़ है ।[5]

اَمْ تَسْـَٔـلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) क्या तू उनसे कोई पारिश्रमिक चाहता है, जिसके भार से ये दबे जाते हों ।[6]

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) अथवा क्या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है जिसे वे लिखते हों ।[7]

---

[1]अर्थात दुनिया के विपरीत उनका मामला होगा। संसार में अभिमान तथा घमंड से उनकी गर्दनें अकड़ी होती थीं।

[2]अर्थात स्वस्थ तथा शक्तिवान थे। अल्लाह की उपासना में कोई चीज़ उनके लिए बाध्य नहीं थी, किन्तु संसार में अल्लाह की उपासना से दूर रहे।

[3]अर्थात मैं ही उनसे निपट लूंगा। तू उनकी चिन्ता न कर।

[4]यह उसी ढील देने का वर्णन है जिसे क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है तथा हदीस में भी स्पष्ट किया गया है कि अवज्ञा के बावजूद धन तथा साधन का प्राचुर्य अल्लाह की दया नहीं है, उसके अवसर देने के नियम का परिणाम है। फिर जब वह पकड़ने पर आता है तो कोई बचाने वाला नहीं होता।

[5]यह विगत विषय ही पर बल है। كَيْد (कैद) गुप्त उपाय तथा षड़यन्त्र को कहते हैं। अच्छे उद्देश्य के लिए हो तो कोई बुराई नहीं।

[6]यह संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है। किन्तु फटकार उनको की जा रही है जो आप पर ईमान नहीं ला रहे थे।

[7]अर्थात क्या परोक्ष (अदृश्य) का ज्ञान उनके पास है। लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तिका) उनके अधिकार में है कि उसमें जो बात चाहें लिख लेते हैं, इसलिए यह तेरा आज्ञापालन तथा तुझ पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं समझते। इसका उत्तर यह है कि नहीं, ऐसा नहीं है।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

(४८) तो तू अपने प्रभु के आदेश का धैर्य से (प्रतीक्षा कर)[1] तथा मछली वाले की भाँति न हो जा,[2] जबकि उसने दुख की अवस्था में पुकारा ।[3]

لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

(४९) यदि उसे उसके प्रभु की कृपा न पा लेती तो निःसंदेह वह बुरी अवस्था में ऊसर धरती पर डाल दिया जाता ।[4]

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) तो उसे उसके प्रभु ने फिर निर्वाचित किया[5] तथा उसको सदाचारियों में कर दिया ।[6]

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ

(५१) तथा निकट है कि (ये) काफ़िर अपनी

---

[1] فَاصْبِرْ में अक्षर 'फ़ा' यह बताने के लिये है कि हे नबी जब वास्तव में ऐसा नहीं तो रिसालत (संदेश पहुँचाने) का कर्तव्य पूरा करता रह तथा इन झुठलाने वालों के संदर्भ में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर ।

[2]जिन्होंने अपनी जाति के झुठलाने के आचरण को देखते हुए उतावलापन से काम लिया तथा प्रभु के निर्णय बिना ही अपने-आप अपनी जाति को छोड़कर निकल गये ।

[3]जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें मछली के पेट में जबकि वह शोक तथा चिन्ता से ग्रस्त थे, अपने प्रभु को सहायता के लिए पुकारना पड़ा । जैसाकि विवरण पहले गुज़र चुका है ।

[4]अर्थात यदि अल्लाह तआला उन्हें क्षमा-याचना तथा विनय की सन्मति न देता तथा उनकी प्रार्थना स्वीकार न करता तो उन्हें साग़र तट के बदले जहाँ उनकी छाया एवं आहार के लिए लतादार वृक्ष उगा दिया गया, किसी बंजर भूमि में फेंक दिया जाता तथा अल्लाह के समीप उनकी हैसियत भी निंदित रहती, जबकि प्रार्थना की स्वीकृति के पश्चात वह प्रशंसनीय हो गये ।

[5]इसका अभिप्राय यह है कि उन्हें शक्तिशाली तथा स्वस्थ करने के पश्चात फिर रिसालत से सम्मानित करके उन्हें अपनी जाति की ओर भेजा गया, जैसा कि सूरह साफ़्फ़ात १४६ से भी स्पष्ट है ।

[6]इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई यह न कहे कि मैं यूनुस पुत्र मत्ता से उत्तम हूँ (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाएल बाबुन फ़ी ज़िक्रे यूनुस ...) तथा विशेष देखिये सूरः बक़रः की आयत न॰ २५३ की व्याख्या ।

بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝

(तीव्र) दृष्टि से आपको फिसला दें[1] जब कभी क़ुरआन सुनते हैं, तथा कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है ।[2]

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

(५२) तथा वास्तव में यह (क़ुरआन) तो अखिल जगत वालों के लिए पूर्ण शिक्षा ही है ।[3]

سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ

सूरतुल हाक़्क़:-६९

सूर: हाक़्क़: मक्का में अवतरित हुई, इसमें बावन आयतें तथा दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

اَلْحَآقَّةُ ۝

(१) सिद्ध होने वाली ।[4]

---

[1]अर्थात यदि तुझे अल्लाह की सहायता तथा सुरक्षा प्राप्त न होती तो इन काफ़िरों की ईर्ष्यापूर्ण निगाहों से तू बुरी नज़र का शिकार हो जाता, अर्थात उनकी नज़र तुझे लग जाती । इमाम इब्ने कसीर ने इसका यही भावार्थ वर्णन किया है । विशेष लिखते हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि नज़र का लग जाना तथा अल्लाह की आज्ञा से उसका दूसरों पर प्रभावकारी होना सत्य है । जैसाकि अनेक हदीसों से भी सिद्ध है तथा हदीसों में उससे बचने के लिए प्रार्थनाओं का वर्णन भी है । तथा यह भी कहा गया है कि तुम्हें कोई चीज़ अच्छी लगे तो ماشاء الله (माशा अल्लाह) अथवा بارك الله (बारकल्लाह) कहा करो ताकि उसे नज़र न लगे । ऐसे ही किसी को नज़र लग जाये तो फ़रमाया कि उसे स्नान करा कर उसका जल उस पर डाला जाये जिसको उसकी नज़र लगी है । (विस्तार के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर तथा हदीस की पुस्तकें) कुछ ने इसका भावार्थ यह किया है कि यह तुझे धर्म का प्रचार करने से फेर देते ।

[2]अर्थात ईर्ष्या के रूप में भी तथा इस आशय से भी कि लोग इस क़ुरआन से प्रभावित न हों, अपितु उससे दूर ही रहें । अर्थात आँखों से भी यह काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्षति पहुँचाने का प्रयास करते तथा ज़बानों से भी आपको दुख पहुँचाते तथा आपके दिल को आहत करते ।

[3]जब तथ्य यह है कि यह क़ुरआन जिन्नों तथा इंसानों के मार्गदर्शन तथा निर्देश के लिए आया है तो फिर इसको लाने तथा वर्णन करने वाला उन्मत्त (दीवाना) कैसे हो सकता है ?

[4]यह प्रलय के नामों में से एक नाम है । इसमें अल्लाह का आदेश सिद्ध होगा तथा यह

مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾

(२) क्या है व्याप्त (सिद्ध) होने वाली ।[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾

(३) तथा तुझे क्या पता है कि वह सिद्ध होने वाली क्या है ?[2]

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

(४) उस खड़का देने वाली को समूदियों तथा आदियों ने झुठला दिया था ।[3]

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾

(५) (जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो अत्यन्त तीव्र (एवं भयानक उच्च) ध्वनि से नष्ट कर दिये गये ।[4]

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

(६) तथा आद अत्यन्त तीव्रगति की पाले वाली आँधी से नष्ट कर दिये गये ।[5]

स्वयं भी होने वाला है, इसलिए इसे अलहाक्क़: से व्यंजित किया ।

[1]यह शाब्दिक रूप से प्रश्न है किन्तु इसका आशय प्रलय का महत्व तथा गंभीरता का वर्णन करना है ।

[2]अर्थात किस माध्यम से तुझे इसकी पूर्ण वास्तविकता का ज्ञान हो ? अभिप्राय इस के ज्ञान का इंकार है । मानो तुमको इसका ज्ञान नहीं, क्योंकि तूने उसे अभी देखा है न उसकी भयानकता का दर्शन किया है । मानो वह सृष्टि के ज्ञान की परिधि से बाहर है । (फ़तहुल क़दीर) कुछ कहते हैं कि क़ुरआन में जिसके संदर्भ में भूत का रूप مَا أَدْرَاكَ प्रयोग किया गया है, उसे बयान कर दिया गया है तथा जिसे भविष्य के रूप وَمَا يُدْرِيكَ के द्वारा वर्णन किया गया है, उसका ज्ञान लोगों को नहीं दिया गया है । (फ़तहुल क़दीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]इसमें क़यामत को खड़का देने वाली कहा है, क्योंकि वह अपनी भयानकता से लोगों को जागृत कर देगी ।

[4]طَاغِيَة ऐसी ध्वनि जो सीमा पार कर जाये । अर्थात अति भयावह तथा उच्च ध्वनि से समूद के समुदाय को विनष्ट किया गया, जैसाकि पहले अनेक स्थानों पर गुज़रा ।

[5]صَرْصَر (सरसर) पाले की हवा, عَاتِيَة (आतियह) उद्दण्ड, किसी के वश में न आने वाली । अर्थात अति तीव्र तथा प्रचंड, आँधी के द्वारा ईशदूत हूद अलैहिस्सलाम की जाति आद को नष्ट किया गया ।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعٰى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

(७) जिसे उन पर निरन्तर सात रात तथा आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाये रखा[1] तो तुम देखते कि ये लोग धरती पर इस प्रकार पछाड़े गये हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों ।[2]

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

(८) तो क्या उनमें से कोई भी तुझे शेष दिखायी दे रहा है ?

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾

(९) फ़िरऔन तथा उससे पूर्व के लोग एवं जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं,[3] उन्होंने भी त्रुटियाँ (पाप) कीं ।

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾

(१०) तथा अपने प्रभु के सन्देष्टा की अवज्ञा की, (अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) पकड़ में ले लिया ।[4]

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

(११) जब पानी में बाढ़ आ गयी तो[5] उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया ।[6]

---

[1] حُسُمٌ (हसम) का अर्थ काटना तथा अलग-अलग कर देना है तथा कुछ ने حُسُومًا का अर्थ निरन्तर किया है ।

[2] इससे उनके शारीरिक आकार की लम्बाई की ओर भी संकेत है خَاوِيَةٌ (खावेयह) खोखले, निर्जीव शरीर को खोखले तने से उपमा दी है ।

[3] इससे लूत की जाति अभिप्राय है ।

[4] رَابِيَةٌ यह رَبَا يَرْبُو से है, जिसका अर्थ अधिक है, अर्थात उनकी ऐसी पकड़ की जो अन्य समुदायों की पकड़ से अधिक अर्थात सबसे कड़ी थी । मानो أَخْذَةً رَابِيَةً का भावार्थ हुआ अति कड़ी पकड़ ।

[5] अर्थात पानी ऊँचाई में सीमा पार कर गया अर्थात पानी खूब चढ़ गया ।

[6] كُمْ से सम्बोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के लोग हैं, मतलब है कि तुम जिन पूर्वज की पुश्तों से हो हमने उन्हें नाव में सवार करके बिफरे हुए पानी से बचाया था الْجَارِيَةِ से मुराद नूह अलैहिस्सलाम की नाव है ।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

(१२) ताकि उसे तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद (तथा यादगार) बना दें[1] तथा (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें ।[2]

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

(१३) तो जब नरसिंघा में एक फूँक फूँकी जायेगी ।[3]

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿١٤﴾

(१४) तथा धरती एवं पर्वत उठा लिये जायेंगे[4] तथा एक ही चोट में कण-कण बना दिये जायेंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

(१५) उस दिन हो पड़ने वाली घटना (प्रलय) हो पड़ेगी।

وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

(१६) तथा आकाश फट जायेगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण हो जायेगा ।[5]

وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ

(१७) और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे[6] तथा तेरे प्रभु का अर्श (आसन) उस दिन आठ

---

[1]अर्थात यह कार्य कि काफ़िरों को जलमग्न कर दिया तथा मोमिनों को नाव में चढ़ाकर बचा लिया, तुम्हारे लिये उसको शिक्षा तथा सदुपदेश बना दिया ताकि उससे शिक्षा ग्रहण करो तथा अल्लाह की अवज्ञा से बचो।

[2]अर्थात सुनने वाले उसे सुन कर याद रखें तथा वह भी उससे शिक्षा प्राप्त करें।

[3]झुठलाने वालों का परिणाम वर्णन करने के पश्चात अब बताया जा रहा है कि यह الحاقة (होनी) कैसे होगी इस्राफ़ील की एक ही फूँक से यह व्याप्त हो जायेगी।

[4]अर्थात अपने स्थानों से उठा लिये जायेंगे तथा अल्लाह के सामर्थ्य से अपने स्थानों से उन्हें उखाड़ लिया जायेगा।

[5]अर्थात उसमें बल तथा दृढ़ता नहीं रह जायेगी। जो चीज फटकर खंड-खंड हो जाये उसमें दृढ़ता कैसे रह सकती है।

[6]अर्थात आकाश तो खंड-खंड हो जायेंगे फिर आकाशीय सृष्टि फ़रिश्ते कहाँ रहेंगे ? फ़रमाया, वह आकाशों के किनारों पर होंगे। इसका एक अभिप्राय तो यह हो सकता है कि फ़रिश्ते आकाश के फटने के पूर्व अल्लाह के आदेश से धरती पर आ जायेंगे तो मानो वे धरती के किनारे पर होंगे, अथवा यह अभिप्राय हो सकता है कि आकाश टूट-फूटकर अनेक खंडों में होगा तो उन खण्डों पर जो धरती के किनारों में तथा अपनी जगह स्थित होंगे उन पर होंगे (फ़तहुल क़दीर)

फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे ।[1]

يَوْمَئِذٍ ثَمَٰنِيَةٌ ۝١٧

(१८) उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत किये जाओगे,[2] तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा ।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨

(१९) तो जिसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा[3] तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो ।[4]

فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَٰبِيَهْ ۝١٩

(२०) मुझे तो पूर्ण विश्वास था कि में अपना हिसाब पाने वाला हूँ ।[5]

إِنِّى ظَنَنتُ أَنِّى مُلَٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠

(२१) तो वह एक सुखद जीवन में होगा ।

فَهُوَ فِى عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٢١

(२२) उच्च (एवं भव्य) स्वर्ग में ।[6]

فِى جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝٢٢

---

[1]अर्थात इन विशेष फ़रिश्तों ने अल्लाह के अर्श (आसन) को अपने सिरों पर उठाया होगा । यह भी संभव है कि इस अर्श से अभिप्राय वह अर्श हो जो निर्णय के लिए धरती पर रखा जायेगा जिस पर अल्लाह का अवतरण होगा । (इब्ने कसीर)

[2]यह पेशी इसलिए नहीं होगी कि अल्लाह जिन्हें नहीं जानता उन्हें जान ले, वह तो सभी को जानता है । यह पेशी स्वयं इंसानों पर तर्क स्थापित करने के लिए होगी, अन्यथा अल्लाह से कोई वस्तु छिपी नहीं है ।

[3]जो उसके सौभाग्य, मुक्ति तथा सफलता का प्रमाण होगा ।

[4]अर्थात वह प्रसन्न होकर प्रत्येक से कहेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ लो, मेरा कर्मपत्र तो मुझे मिल गया है । इसलिए कि उसे पता होगा कि उसमें उसका पुण्य ही पुण्य होगा । कुछ दोष होंगे तो अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया होगा अथवा उन दोषों को भी पुण्य में बदल दिया होगा । जैसाकि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ दया तथा कृपा के यह विभिन्न रूप अपनायेगा ।

[5]अर्थात परलोक के हिसाब-किताब पर मुझे पूर्ण विश्वास था ।

[6]स्वर्ग में विभिन्न श्रेणियाँ होंगी । प्रत्येक श्रेणी के बीच बड़ी दूरी होगी । जैसे मुजाहिदीन के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्वर्ग में सौ श्रेणियाँ हैं जो अल्लाह ने मुजाहिदीन के लिए तैयार किये हैं । दो श्रेणियों के बीच आकाश तथा धरती जितनी दूरी होगी ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल इमारः, सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद)

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

(२३) जिसके फल झुके पड़े होंगे ।[1]

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى ٱلْأَيَّامِ ٱلْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

(२४) (उनसे कहा जायेगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कर्मों के बदले जो तुमने पूर्वकाल में किये ।[2]

وَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

(२५) परन्तु जिसे उसका कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता ।[3]

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है ।[4]

يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ ٱلْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

(२७) काश ! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती ।[5]

مَآ أَغْنَىٰ عَنِّى مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾

(२८) मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया ।

هَلَكَ عَنِّى سُلْطَٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾

(२९) मेरा अधिपत्य भी मुझसे जाता रहा ।[6]

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾

(३०) (आदेश होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक़ पहना दो ।

---

[1]अर्थात अति समीप होंगे अर्थात कोई लेटे-लेटे भी तोड़ना चाहेगा तो संभव होगा । قُطُوفٌ बहुवचन है قِطْفٌ का, चुने अथवा तोड़े हुए, अभिप्राय फल है । ما يُقْطَفُ مِنَ الثمار

[2]अर्थात संसार में पुण्य के कर्म किये । यह स्वर्ग उनका प्रतिकार है ।

[3]क्योंकि कर्म-पत्र का बायें हाथ में मिलना दुर्भाग्य का लक्षण होगा ।

[4]अर्थात मुझे बतलाया ही न जाता, क्योंकि पूरा हिसाब उसके प्रतिकूल होगा ।

[5]अर्थात मौत ही निर्णायक होती तथा पुन: जीवित न किया जाता ताकि यह बुरा दिन न देखना पड़ता ।

[6]अर्थात जैसे मेरा माल काम न आया, मान-मर्यादा तथा आधिपत्य एवं राज्य भी मेरे काम न आया । आज मैं अकेला ही यहाँ दण्ड भुगतने पर विवश हूँ ।

(३१) फिर उसे नरक में डाल दो ।[1] ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿٣١﴾

(३२) फिर उसे ऐसी ज़ंजीर में जिसकी नाप सत्तर हाथ की है, जकड़ दो ।[2] ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾

(३३) नि:संदेह यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था ।[3] إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾

(३४) तथा निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था ।[4] وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾

(३५) तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है, فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾

(३६) तथा न पीप के अतिरिक्त उसका कोई भोजन है ।[5] وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿٣٦﴾

(३७) जिसे पापियों के अतिरिक्त उसको कोई नहीं खायेगा ।[6] لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) तो मुझे सौगन्ध है उन वस्तुओं की जिन्हें तुम देखते हो । فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾

---

[1]यह अल्लाह तआला नरक के फ़रिश्तों को आदेश देगा ।

[2]यह ذراعٌ ज़िराअ (हाथ) किसका हाथ होगा, तथा कितना होगा ? इसकी व्याख्या संभव नहीं । फिर भी इससे इतना ज्ञात हुआ कि जंजीर की लम्बाई सत्तर हाथ होगी ।

[3]यह उपरोक्त यातना के कारण अथवा अपराधी के अपराध का वर्णन है ।

[4]अर्थात इबादत तथा अनुपालन के द्वारा अल्लाह का हक़ अदा न करता था न दायित्व जो बंदों का बंदों पर है । मानो ईमानवालों में यह बात होती है कि वह अल्लाह के हक़ तथा बंदों के हक़ दोनों को पूरा करते हैं ।

[5]कुछ कहते हैं कि यह नरक में कोई वृक्ष है । कुछ कहते हैं कि ज़क्कूम को ही यहाँ 'गिसलीन' कहा गया है । तथा कुछ कहते हैं कि यह नरकवासियों की पीप अथवा उनके शरीर से निकला रक्त होगा तथा दुर्गन्धित पानी होगा, अल्लाह हमें उससे शरण में रखे ।

[6]خاطئون से अभिप्राय नरकवासी हैं, जो कुफ़्र तथा शिर्क के कारण नरक में प्रवेश करेंगे, क्योंकि यही ऐसे पाप हैं जो नरक में सदा रहने के कारण हैं ।

(३९) तथा उन वस्तुओं कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।[1]

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝٣٩

(४०) कि निःसंदेह यह (क़ुरआन) प्रतिष्ठित सन्देष्टा का कथन है ।[2]

إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝٤٠

(४१) यह किसी कवि का कथन नहीं,[3] (अफ़सोस) तुम बहुत कम विश्वास रखते हो ।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝٤١

(४२) तथा न किसी ज्योतिषी का कथन है,[4] (अफ़सोस) तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण कर रहे हो ।[5]

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝٤٢

(४३) (यह तो) अखिल जगत के प्रभु का अवतरित किया हुआ है ।[6]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَٰلَمِينَ ۝٤٣

---

[1]अर्थात अल्लाह की पैदा की हुई वस्तुयें जो अल्लाह के अस्तित्व तथा सामर्थ्य एवं शक्ति का प्रतीक हैं, जिन्हें तुम देखते हो अथवा नहीं देखते । उन सबकी सौगन्ध है आगे सौगन्ध का उत्तर है ।

[2]प्रतिष्ठित रसूल से तात्पर्य मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं तथा कथन से अभिप्राय पढ़ना है, अर्थात सम्मानित रसूल का पढ़ना । अथवा कथन से तात्पर्य ऐसा कथन है जो यह प्रतिष्ठित रसूल अल्लाह की ओर से तुम्हें पहुँचाता है, क्योंकि क़ुरआन रसूल अथवा जिब्रील का कथन नहीं है । अपितु अल्लाह का कथन है जो उसने फ़रिश्ते के द्वारा पैग़म्बर पर उतारा है, फिर पैग़म्बर उसे लोगों तक पहुँचाता है ।

[3]जैसाकि तुम समझते तथा कहते हो, क्योंकि यह न कविता के प्रकारों में है न उसके समान है । फिर यह किसी कवि का कथन कैसे हो सकता है ?

[4]जैसाकि कभी-कभी तुम यह दावा भी करते हो जबकि कहानत भी एक अन्य वस्तु है ।

[5]'कमी' दोनों जगह न होने के अर्थ में है । अर्थात तुम क़ुरआन पर न ईमान लाते हो न उससे शिक्षा ग्रहण करते हो ।

[6]अर्थात रसूल के मुख से अदा होने वाला यह कथन सर्वलोक के प्रभु का अवतरित किया हुआ है । तुम उसे कभी कविता तथा कभी ज्योतिष का कथन कहकर झुठलाते हो ?

(४४) तथा यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता ।[1]

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾

(४५) तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,[2]

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾

(४६) फिर उसके दिल की नस काट लेते ।[3]

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾

(४७) फिर तुममें से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता ।[4]

فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) नि:संदेह यह (क़ुरआन) सदाचारियों के लिए शिक्षा है ।[5]

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

---

[1]अर्थात अपनी ओर से गढ़कर हमसे संबन्धित कर देता, अथवा उसमें कमी-बेशी कर देता, तो तुरन्त हम उसकी पकड़ करते तथा उसे ढील न देते जैसाकि आगामी आयतों में फ़रमाया ।

[2]अथवा दायें हाथ से उसकी पकड़ करते, क्योंकि दायें हाथ से पकड़ कड़ी होती है तथा अल्लाह के तो दोनों हाथ ही सीधे हैं, जैसाकि हदीस में है ।

[3]ध्यान रहे कि यह यातना विशेषकर आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में आई है जिसका उद्देश्य आपकी सत्यता दिखाना है । इसमें यह नियम नहीं बताया गया है कि जो भी नुबूवत का झूठा दावा करेगा तो नुबूवत के झूठे दावेदार को हम तुरन्त दण्ड देंगे । अत: इससे किसी झूठे नबी को सच्चा नहीं कहा जा सकता कि वह संसार में अल्लाह की यातना से सुरक्षित रहा । घटनायें भी साक्षी हैं कि अनेक लोगों ने नुबूवत के झूठे दावे किये तथा अल्लाह ने उन्हें ढील दी तथा वह सांसारिक पकड़ से साधारणत: सुरक्षित ही रहे । इसलिए यदि इसे नियम मान लिया जाये तो फिर अनेक नुबूवत के झूठे दावेदारों को 'सच्चा नबी' मानना पड़ेगा ।

[4]इससे विदित हुआ कि महा ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य दूत थे, जिनको अल्लाह ने दण्ड नहीं दिया, बल्कि प्रमाणों, चमत्कारों एवं अपने विशेष समर्थन तथा सहायता से उन्हें सम्मानित किया ।

[5]क्योंकि इससे वही लाभ प्राप्त करते हैं, अन्यथा पवित्र क़ुरआन तो सभी की शिक्षा के लिये आया है ।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा हमें पूर्ण ज्ञान है कि तुम में से कुछ उसके झुठलाने वाले हैं।

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) नि:संदेह (यह झुठलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।[1]

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾

(५१) तथा नि:संदेह यह विश्वसनीय सत्य है।[2]

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

(५२) तो तू अपने महिमावान प्रभु की पवित्रता का वर्णन कर।[3]

सूरतुल मआरिज-७०

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

सूर: मआरिज मक्का में अवतरित हुई, इसमें चव्वालिस आयतें तथा दो रूकूअ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾

(१) एक माँग करने वाले ने[4] उस प्रकोप की

---

[1]अर्थात क़यामत के दिन इस पर पछतायेंगे कि काश हम क़ुरआन को झुठलाये न होते। अथवा यह क़ुरआन स्वयं उनके पछतावे का कारण होगा जब वह ईमानवालों को क़ुरआन का पुण्य मिलते देखेंगे।

[2]अर्थात क़ुरआन का अल्लाह की ओर से होना निश्चित है, इसमें बिल्कुल किसी संदेह का स्थान नहीं है, अथवा क़यामत के विषय में जो सूचना दी जा रही है वह सर्वथा सत्य तथा सच है।

[3]जिसने क़ुरआन जैसी महान किताब अवतरित की।

[4]कहा जाता है कि यह नज़र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल था, जिसने कहा था।

﴿اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ﴾

"हे अल्लाह यदि यह तेरी ओर से सत्य ही है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा।" (अल-अन्फ़ाल -३२)

जैसाकि यह व्यक्ति बद्र के रण में मारा गया। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, जिन्होंने अपने समुदाय को शाप दिया था, तथा उसके परिणाम स्वरूप मक्कावासियों पर अकाल आ पड़ा था।

माँग की जो (स्पष्टत:) होने वाला है ।

(२) काफ़िरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं ।

لِّلْكَٰفِرِينَ لَيْسَ لَهُۥ دَافِعٌ ۝٢

(३) उस अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों वाला है ।[1]

مِّنَ ٱللَّهِ ذِى ٱلْمَعَارِجِ ۝٣

(४) जिसकी ओर फ़रिश्ते तथा रूह चढ़ते हैं[2] एक दिन में जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष की है ।[3]

تَعْرُجُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ إِلَيْهِ فِى يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُۥ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝٤

---

[1]अथवा पदों वाला, ऊँचाइयों वाला है, जिसकी ओर फ़रिश्ते चढ़ते हैं ।

[2]रूह (आत्मा) से अभिप्राय जिब्रील (फ़रिश्ता) हैं, उनकी प्रधानता के कारण उनका अलग विशेष रूप से वर्णन किया गया है, अन्यथा फ़रिश्तों में वह भी सम्मिलित हैं । अथवा रूह से अभिप्राय इंसानी आत्मायें हैं जो मृत्यु के पश्चात आकाश पर ले जाई जाती हैं, जैसाकि कुछ रिवायतों (हदीसों) में है ।

[3]उस दिन के निर्धारण में बहुत मतभेद है, जैसाकि अलिफ़॰लाम॰मीम अस्सजदा के आरम्भ में हम वर्णन कर आये हैं । यहाँ इमाम इब्ने कसीर ने चार कथन लिखे हैं । प्रथम कथन है कि इससे वह दूरी अभिप्राय है जो विशाल अर्श (आसन) से पाताल (धरती के सातवें परत) तक है । यह दूरी पचास हज़ार वर्ष की यात्रा की है । दूसरा कथन है कि यह संसार की पूरी अवधि है सृष्टि के आरम्भ से प्रलय के घटित होने तक । इसमें से कितनी अवधि व्यतीत हुई तथा कितनी शेष है, इसे मात्र अल्लाह तआला ही जानता है । तीसरा कथन यह है कि यह लोक तथा परलोक के मध्य की दूरी है । चौथा कथन यह है कि यह क़्यामत के दिन की मात्रा है । अर्थात काफ़िरों पर हिसाब का दिन पचास हज़ार वर्ष की भाँति भारी होगा, किन्तु मोमिन के लिए संसार में एक फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ पढ़ने से भी संक्षिप्त होगा । (मुसनद अहमद ३\७५) इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है, क्योंकि हदीसों से भी इसे समर्थन प्राप्त है । जैसाकि एक हदीस में ज़कात (देयदान) न चुकाने वाले को प्रलय के दिन जो यातना दी जायेगी उसकी चर्चा करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«حَتَّى يَحْكُمَ اللهُ بَيْنَ عِبَادِهِ، فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ».

"यहाँ तक कि अल्लाह अपने बन्दों के बीच निर्णय कर देगा, ऐसे दिन में जिसकी अवधि तुम्हारी गिनती के अनुसार पचास हज़ार साल होगी ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाबु इस्मे मानेइज़ ज़कात)

(५) तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख।	فَاصۡبِرۡ صَبۡرًا جَمِيۡلًا ۝٥
(६) नि:संदेह ये उस (प्रकोप) को दूर समझ रहे हैं।	اِنَّهُمۡ يَرَوۡنَهٗ بَعِيۡدًا ۝٦
(७) तथा हम उसे निकट ही देखते हैं।[1]	وَّنَرٰىهُ قَرِيۡبًا ۝٧
(८) जिस दिन आकाश तेल की तलछट की भाँति हो जायेगा।	يَوۡمَ تَكُوۡنُ السَّمَآءُ كَالۡمُهۡلِ ۝٨
(९) तथा पर्वत रंगीन ऊन के समान हो जायेंगे।[2]	وَتَكُوۡنُ الۡجِبَالُ كَالۡعِهۡنِ ۝٩
(१०) तथा कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।	وَلَا يَسۡـَٔلُ حَمِيۡمٌ حَمِيۡمًا ۝١٠
(११) (यद्यपि) एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे,[3] पापी उस दिन की यातना के बदले प्रतिदान में अपने पुत्रों को देना चाहेगा।	يُّبَصَّرُوۡنَهُمۡ ؕ يَوَدُّ الۡمُجۡرِمُ لَوۡ يَفۡتَدِىۡ مِنۡ عَذَابِ يَوۡمِئِذٍۢ بِبَنِيۡهِ ۝١١
(१२) अपनी पत्नी को तथा अपने भाई को।	وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيۡهِ ۝١٢
(१३) एवं अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।	وَفَصِيۡلَتِهِ الَّتِىۡ تُـئْوِيۡهِ ۝١٣
(१४) तथा धरती के सभी लोगों को, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।[4]	وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ۙ ثُمَّ يُنۡجِيۡهِ ۝١٤

इस व्याख्यानुसार فِي يَوم का संम्बन्ध عذاب (यातना) से होगा, अर्थात वह घटित होने वाली यातना क़यामत (प्रलय) के दिन होगी जो काफ़िरों पर पचास हज़ार वर्ष के समान होगी।

[1]दूर से अभिप्राय असंभव तथा निकट से उसका निश्चय घटित होना है, अर्थात काफ़िर प्रलय को असंभव समझते हैं तथा मुसलमानों का विश्वास है कि वह अवश्य आकर रहेगी, इसलिए कि كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيبٌ "प्रत्येक आगामी वस्तु समीप है।"

[2]अर्थात धुनी रूई के समान जैसे, सूरतुल क़ारिआ में है ﴿كَالۡعِهۡنِ الۡمَنۡفُوۡشِ﴾

[3]किन्तु प्रत्येक को अपनी-अपनी पड़ी होगी, इसलिए परिचय तथा पहचान के उपरान्त एक-दूसरे को नहीं पूछेंगे।

[4]अर्थात संतान, पत्नी, भाई तथा परिवार यह सभी इंसान को अति प्रिय होते हैं। परन्तु

(१५) (परन्तु) कदापि यह न होगा। निःसंदेह वह शोले (ज्वाला) वाली (अग्नि) है।[1]

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾

(१६) जो मुख तथा सिर की खाल खींच लेने वाली है।[2]

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾

(१७) वह प्रत्येक उस व्यक्ति को पुकारेगी जो पीछे हटता तथा मुख मोड़ता है।

تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾

(१८) तथा एकत्रित करके संभाल रखता है।[3]

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾

(१९) निःसंदेह मनुष्य अत्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।[4]

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

(२०) जब उसे कष्ट पहुँचता है तो हड़बड़ा जाता है।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

क़यामत (प्रलय) के दिन अपराधी चाहेगा कि यह प्रिय वस्तुयें उससे प्रतिदान में स्वीकार कर ली जायें तथा उसे मुक्त कर दिया जाये। فَصِيلَةٌ फ़सील:, परिवार को कहते है, क्योंकि वह क़बीले से अलग होता है।

[1]अर्थात वह नरक, यह उसकी घोर तपन का वर्णन है।

[2]अर्थात मांस तथा ख़ाल को जलाकर रख देगी। इंसान मात्र हड्डियों का ढाँचा रह जायेगा।

[3]अर्थात जो संसार में सत्य से पीठ फेरता तथा मुख मोड़ता है तथा धन एकत्र करके ख़ज़ानों में सैंत-सैंत कर रखता था, उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करता था न उसमें से ज़कात (धर्मदान) निकालता था। अल्लाह तआला नरक को बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा वह अपने मुख से बोलेगी तथा ऐसे लोगों को पुकार कर कहेगी जिनके कर्मों के बदले नरक अनिवार्य होगा। कुछ कहते हैं कि पुकारेंगे तो फ़रिश्ते ही किन्तु उसे नरक की ओर सम्बन्धित कर दिया गया है। कुछ कहते हैं कि कोई नहीं पुकारेगा, यह केवल रूपक स्वरूप ऐसा कहा गया है। अभिप्राय यह है कि उक्त व्यक्तियों का आवास नरक होगी।

[4]अत्यन्त लोभी तथा बहुत रोने वाले को هَلُوعٌ (हलूअ) कहा जाता है, जिसे अनुवाद में बड़े कच्चे दिल वाला कहा गया है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही कंजूस, लोभी तथा अति रोने चिल्लाने वाला होता है। आगे उसका गुण बताया गया है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

(२१) तथा जब सुख प्राप्त होता है तो कंजूसी करने लगता है।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

(२२) परन्तु वह नमाज़ी।

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।[1]

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा जिनके धन में निर्धारित भाग है।[2]

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

(२५) माँगनेवालों का भी तथा प्रश्न करने से बचने वालों का भी।[3]

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।[4]

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा जो अपने प्रभु के प्रकोप से डरते रहते हैं।[5]

---

[1]अभिप्राय हैं पूरे मोमिन एकेश्वरवादी। उनमें उक्त नैतिक क्षीणता नहीं होती, अपितु इसके विपरीत वह सदगुणों के रूप होते हैं। नित्य नमाज़ पढ़ने का अर्थ है वह नमाज़ में आलस्य नहीं करते। वह प्रत्येक नमाज़ उसके समय पर बड़ी पाबंदी से पढ़ते हैं। कोई कार्य उन्हें नमाज़ से नहीं रोकता तथा कोई साँसारिक लाभ उन्हें नमाज़ से विमुख नहीं करता।

[2]अर्थात अनिवार्य ज़कात (धर्मदान)। कुछ के निकट यह साधारण है, इसमें अनिवार्य तथा ऐच्छिक दोनों दान सम्मिलित हैं।

[3]محروم (महरूम) में वह व्यक्ति भी सम्मिलित है जो जीविका ही से वंचित है, वह भी जो किसी आकाशीय अथवा साँसारिक आपदा की मार में आकर अपनी पूँजी से वंचित हो गया तथा वह भी जो ज़रूरत होने के बावजूद न माँगने के कारण लोगों के दान-दक्षीणा से वंचित रहता है।

[4]अर्थात वह उसका इंकार करते हैं न उसमें शंका तथा संदेह का प्रदर्शन।

[5]अर्थात आज्ञापालन तथा सत्कर्मों के उपरान्त अल्लाह की महानता तथा प्रताप के कारण उसकी पकड़ से भयभीत तथा कंपित रहते हैं, तथा विश्वास रखते हैं कि जब तक अल्लाह की दया हमें अपने दामन में छिपा न ले, हमारे यह कर्म मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं होंगे, जैसाकि इस भावार्थ की हदीस पहले गुज़र चुकी है।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

(२८) नि:संदेह उनके प्रभु का प्रकोप निर्भय होने की बात नहीं ।[1]

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा जो लोग अपने गुप्तांगों की (अवैध से) रक्षा करते हैं ।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) परन्तु उनकी पत्नियों एवं दासियों के विषय में जिनके वे स्वामी हैं, वे निन्दित नहीं ।[2]

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

(३१) अब जो कोई इसके अतिरिक्त (मार्ग) ढूँढेगा, तो ऐसे लोग सीमा उल्लंघन करने वाले होंगे ।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जो अपनी अमानतों का तथा अपने वचन एवं प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं ।[3]

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा जो अपनी गवाहियों पर सीधे (तथा अडिग) रहते हैं ।[4]

---

[1]यह उपरोक्त विषय पर बल देने के लिए है कि अल्लाह की यातना से किसी को निर्भय नहीं होना चाहिए, अपितु प्रत्येक समय उसे डरते रहना तथा उससे बचाव का यथा संभव उपाय अपनाना चाहिए ।

[2]अर्थात इंसान की कामवासना की तृप्ति के लिए अल्लाह ने दो वैध माध्यम रखे हैं, एक पत्नी, तथा दूसरा दासी । वर्तमान युग में दासी का मामला इस्लाम की बतलाई नीति के अनुसार लगभग समाप्त हो गया है, फिर भी वैधानिक रूप से उसे इसलिए समाप्त नहीं किया गया है कि भविष्य में यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाये तो इससे लाभ उठाया जा सकता है । जो भी हो ईमानवालों की एक विशेषता यह भी है कि कामवासना की वे पूर्ति तथा तृप्ति के लिए अवैध साधन नहीं अपनाते ।

[3]अर्थात उनके पास लोगों की जो अमानतें (धरोहर) होती हैं उसमें विश्वासघात नहीं करते तथा लोगों से जो प्रतिज्ञा (वचन) करते हैं उन्हें तोड़ते नहीं है, अपितु उनका ख़्याल रखते हैं ।

[4]अर्थात उसे सही-सही अदा करते हैं, चाहे उसकी मार में उनके निकट संबन्धी ही क्यों न आ जायें । इसके सिवा उसे छुपाते भी नहीं, न उसमें परिवर्तन ही करते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) यही लोग स्वर्ग में आदर (एवं सम्मान) वाले होंगे।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वे तेरी ओर दौड़ते आते हैं।

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) दायें तथा बायें से गुट के गुट।[1]

أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾

(३८) क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे सुख-सुविधा वाले स्वर्ग में प्रवेश पा जायेंगे ?

كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) (ऐसा) कदापि न होगा,[2] हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।[3]

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) तो मुझे सौगन्ध है पूर्वों एवं पश्चिमो[4] के प्रभु की, (कि) हम निश्चित रूप से सामर्थ्यवान है।

---

[1]यह नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के काफ़िरों की चर्चा है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस (सभा) में दौड़े-दौड़े आते, किन्तु आप की बातें सुनकर अनुपालन करने की जगह उनका परिहास करते तथा टोलियों में बँट जाते, तथा दावा यह करते कि यदि मुसलमान स्वर्ग में गये तो हम उनसे पहले स्वर्ग में जायेंगे। अल्लाह ने आगामी आयत में उनके इस भ्रम का खंडन किया।

[2]अर्थात यह कैसे हो सकता है कि मोमिन तथा काफ़िर दोनों ही स्वर्ग में जायें, रसूल के अनुयायी तथा विरोधी दोनों को परलोक का सुख प्राप्त हो, ऐसा कदापि संभव नहीं।

[3]अर्थात ماء مهين (हीन बूंद) से। जब यह बात है तो क्या अहंकार इंसान को शोभा देता है जिसके कारण से ही वह अल्लाह तथा उसके रसूल को झुठलाते भी हैं ?

[4]प्रत्येक दिन सूर्य अलग-अलग स्थान से उदय होता है तथा अलग-अलग स्थल में अस्त होता है। इस आधार पर पूर्व भी बहुत हैं तथा पश्चिम भी उतने ही। विवरण के लिए सूरह साफ़्फ़ात ५ देखिये।

عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾

(४१) इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आयें,[1] तथा हम विवश नहीं हैं ।[2]

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें[3] यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वायदा किया जाता है ।

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) जिस दिन क़ब्रों से ये दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी थान की ओर तीव्र गति से जा रहे हैं ।[4]

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी,[5] उन पर अपमान आच्छादित हो रहा होगा,[6] यह है वह दिन जिसका उनसे वायदा किया जाता था ।[7]

---

[1]अर्थात उन्हें विलय करके एक नई सृष्टि आबाद कर देने पर हम समर्थ हैं ।

[2]जब ऐसा है तो क्या क़यामत के दिन हम उन्हें पुनः जीवित करके उठा नहीं सकते ।

[3]अर्थात व्यर्थ तथा बेकार विवादों में फँसें तथा अपनी दुनिया में मग्न रहें । फिर भी आप धर्म-प्रचार का काम जारी रखें । उनका आचरण आपको अपने कर्तव्य से लापरवाह व हताश न कर दे ।

[4]أَجْـدَاثٌ बहुवचन है । جَدَثٌ का अर्थ क़ब्र है । نُصُبٌ अर्थात थान, जहाँ देवताओं के नाम पर पशु की बली चढ़ाई जाती है, तथा मूर्तियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । यहाँ इसी दूसरे अर्थ में है । मूर्तियों के पुजारी सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मूर्तियों की ओर दौड़ते कि कौन सर्वप्रथम उन्हें चुम्बन करता है । कुछ इसे यहाँ عَلَمٌ के अर्थ में लेते हैं कि जैसे संग्राम क्षेत्र में सैनिक अपने عَلَمٌ (झंडे) की ओर दौड़ते हैं । इसी प्रकार क़यामत (प्रलय) के दिन क़ब्रों से अति तीव्रगति से निकलेंगे । يُوفِضُونَ यह يُسْرِعُون के अर्थ में है ।

[5]जिस प्रकार अपराधियों की आँखें झुकी होती हैं, क्योंकि उन्हें अपनी करतूतों का ज्ञान होता है ।

[6]अर्थात घोर अपमान उन्हें अपनी लपेट में ले रहा होगा तथा उसके मुख भय के मारे काले होंगे । इसी से غُلَامٌ مُرَاهِقٌ का योग है जो युवा अवस्था से निकट हो, अर्थात غَشِيَهُ الاحْتِلَام (फ़तहुल क़दीर)

[7]अर्थात रसूलों के मुख से तथा आकाशीय धर्मशास्त्रों के द्वारा ।

सूरतु नूह-७१

سُوْرَةُ نُوْحٍ

सूरः नूह मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अ ठाईस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

(१) निःसंदेह हमने नूह (अलैहिस्सलाम)को उनके समुदाय की ओर भेजा[1] कि अपने समुदाय को डरा दो (तथा सचेत कर दो) इससे पूर्व कि उनके पास कष्टदायी यातना आ जाये।[2]

قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ②

(२) (नूह अलैहिस्सलाम ने) कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।[3]

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ③

(३) कि तुम अल्लाह की इबादत करो[4] तथा उसी से डरो[5] एवं मेरा कहना मानो।[6]

---

[1]आदरणीय नूह महान ईशदूतों में से हैं। सहीह मुस्लिम आदि की शफ़ाअत (अभिस्तावना) वाली हदीस में है कि यह प्रथम ईशदूत हैं। यह भी कहा जाता है कि उन्ही की जाति से शिर्क (वहुदेववाद) का आरम्भ हुआ। अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने उन्हें अपनी जाति के मार्गदर्शन के लिए भेजा।

[2]क़्यामत के दिन अथवा सांसारिक प्रकोप के आने से पहले, जैसे इस जाति पर तूफ़ान आया।

[3]अल्लाह की यातना से, यदि तुम ईमान न लाये। इसीलिए यातना से मुक्ति का नुसख़ा तुम्हें वतलाने आया हूँ, जो आगे वर्णन हो रहा है।

[4]तथा शिर्क त्याग दो। केवल एक अल्लाह की इबादत करो।

[5]अल्लाह की अवज्ञा से बचो जिनसे तुम अल्लाह की यातना के पात्र बन सकते हो।

[6]अर्थात मैं तुम्हें जिन वातों का आदेश दूँ, उसमें मेरा अनुपालन करो, क्योंकि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल तथा उसका प्रतिनिधि बनकर आया हूँ।

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ④

(४) तो वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा ।[1] निःसंदेह अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रुकता नहीं ।[2] काश (यदि) तुम्हें ज्ञात होता ।[3]

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑤

(५) (नूह ने) कहा कि हे मेरे प्रभु ! मैंने अपने समुदाय को रात-दिन तेरी ओर बुलाया है ।[4]

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ⑥

(६) परन्तु मेरे बुलाने से ये लोग भागने में और बढ़ते ही गये ।[5]

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا

(७) तथा मैंने जब कभी उन्हें तेरे क्षमादान के लिए बुलाया[6] उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने

---

[1]इसका अर्थ यह है कि ईमान लाने की स्थिति में तुम्हारी मौत की अवधि जो नियमित है, उसे टालकर तुम्हें अधिक आयु प्रदान करेगा, तथा वह प्रकोप तुमसे दूर कर देगा जो ईमान न लाने की दशा में तुम्हारा भाग्य था । इस आयत से तर्क निकालते हुए कहा गया है कि आज्ञापालन, सदाचार तथा संबधियों के साथ अच्छे व्यवहार से वास्तव में आयु बढ़ती है । हदीस में भी है «صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمُرِ» "संबन्धियों से सदव्यवहार आयू के बढ़ने का कारण है ।" (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं टालने का अर्थ बरकत है । ईमान से आयु में शुभ होगा । ईमान नहीं लाओगे तो इस शुभ से वंचित रहोगे ।

[2]अपितु निश्चित रूप से घटित होकर रहता है । अतः तुम्हारी भलाई इसी में है कि ईमान तथा आज्ञापालन का मार्ग तुरन्त अपना लो । देर करने में ख़तरा है कि अल्लाह के प्रकोप के वचन की लपेट में न आ जाओ ।

[3]अर्थात यदि तुम्हें ज्ञान होता तो तुम उसे अपनाने में जल्दी करते जिसका मैं तुम्हें आदेश कर रहा हूँ अथवा यदि तुम यह बात जानते होते कि अल्लाह का प्रकोप जब आ जाता है तो टलता नहीं है ।

[4]अर्थात तेरी आज्ञा का पालन करने में बिना आलस्य के रात-दिन मैंने तेरा संदेश अपनी जाति को पहुँचाया है ।

[5]अर्थात मेरी पुकार के कारण यह ईमान से और अधिक दूर हो गये हैं । जब कोई समुदाय गुमराही के अंतिम कगार पर पहुँच जाये तो उसकी यही दशा होती है, उसे जितना अल्लाह की ओर बुलाओ वह उतना ही दूर भागता है ।

[6]अर्थात ईमान तथा आज्ञापालन की ओर, जो कारण का हेतु है ।

ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ अपने कानों में डाल लीं[1] तथा अपने कपड़ों को ओढ़ लिया[2] एवं अड़ गये[3] तथा बड़ा अहंकार किया ।[4]

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ (८) फिर मैं ने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया ।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ (९) तथा निःसंदेह मैं ने उनसे खुल कर भी कहा तथा चुपके-चुपके भी ।[5]

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ (१०) तथा मैं ने कहा कि अपने प्रभु से अपने पापों को क्षमा करवा लो ।[6] (तथा क्षमा माँगो) निःसंदेह वह बड़ा क्षमाशील है ।[7]

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ (११) वह तुम पर आकाश को खूब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा ।[8]

---

[1]ताकि मेरी आवाज़ न सुन सकें ।

[2]ताकि मेरा मुख न देख सकें अथवा अपने सिरों पर कपड़े डाल लिये ताकि मेरी बात न सुन सकें । यह उनकी ओर से कड़ी शत्रुता का तथा शिक्षा-दिक्षा से निश्चिन्तता का प्रदर्शन है । कुछ कहते हैं कि अपने को कपड़ों से ढाँक लेने का उद्देश्य यह था कि पैग़म्बर (संदेष्टा) उनको पहचान न सके तथा उन्हें आमंत्रण स्वीकार करने पर बाध्य न करे ।

[3]अर्थात कुफ़्र (इंकार) पर अडिग रहे, उसे छोड़ा नहीं तथा पश्चाताप नहीं किया ।

[4]सत्य के स्वीकार तथा आज्ञा के पालन करने से उन्होंने घोर अहंकार किया ।

[5]अर्थात विभिन्न रूप तथा ढंग से उन्हें आमंत्रण दिया । कुछ कहते हैं कि सभाओं तथा समारोहों में भी उन्हें आमन्त्रण दिया तथा घरों में व्यक्तिगत रूप से भी तेरा संदेश पहुँचाया ।

[6]अर्थात ईमान तथा आज्ञापालन का पथ अपना लो, तथा अपने प्रभु से विगत पापों की क्षमा माँग लो ।

[7]वह तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार करने वाला दयानिधि तथा क्षमावान है ।

[8]कुछ विद्वानों ने इसी आयत के कारण इस्तिसक़ा (वर्षा के लिये) नमाज़ में सूरह नूह पढ़ने को अच्छा कहा है । रिवायत है कि आदरणीय उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु भी एक बार इस्तिसक़ा की नमाज़ के लिये मंच पर चढ़े तो केवल आयाते इस्तिग़फ़ार, (क्षमा-याचना वाली आयतें) पढ कर मंच से उतर आये, तथा फ़रमाया कि मैंने वर्षा को वर्षा के उन

(१२) तथा तुम्हें खूब माल तथा सन्तान में बढ़ा देगा तथा तुम्हें बाग़ देगा तथा तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा ।[1]

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا ﴿١٢﴾

(१३) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की सर्वोच्चता पर विश्वास नहीं करते ।[2]

مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

(१४) यद्यपि उसने तुम्हें विभिन्न प्रकार से पैदा किया है ।[3]

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾

(१५) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिये हैं ।[4]

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

मार्गों से माँगा है जो आकाशों में हैं, जिनसे वर्षा धरती पर उतरती है । (इब्ने कसीर) आदरणीय हसन बसरी के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनसे आकर किसी ने अकाल की शिकायत की तो उन्होंने उसे इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) का निर्देश दिया, किसी दूसरे ने दरिद्रता तथा भूखमरी की शिकायत की तो उसे भी यही उपचार बताया एक अन्य व्यक्ति ने अपने बाग़ के सूख जाने की शिकायत की तो उससे भी कहा कि क्षमा-याचना कर । किसी ने जब उनसे कहा कि सबको आपने क्षमा-याचना ही का निर्देश क्यों दिया ? तो आपने यही आयत पढ़कर कहा कि मैंने अपनी ओर से यह बात नहीं की । यह वह उपचार है जो इन सबके लिये अल्लाह ने बताया है । (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात क्षमा-याचना से तुम्हें परलौकिक सुख-सुविधायें ही नहीं मिलेंगी, अपितु सांसारिक धन-सम्पत्ति तथा पुत्रों की अधिकता से भी सुशोभित किये जाओगे ।

[2]وقار बना है توقير (तौक़ीर) से अर्थात मर्यादा । तथा رجاء भय के अर्थ में है, अर्थात उसकी मर्यादा के अनुसार उससे डरते क्यों नहीं हो, उसे एक क्यों नहीं मानते तथा उसकी आज्ञापालन क्यों नहीं करते ?

[3]पहले वीर्य, फिर रक्त का थक्का फिर माँस का टुकड़ा, फिर अस्थियाँ, माँस और फिर पूरी पैदाईश, जैसाकि सूरह *अम्बिया-५*, *अल-मोमिनून-१४*, तथा *अल-मोमिन-६७* आदि में विवरण गुज़रा ।

[4]जो उसके सामर्थ्य तथा कारीगरी की निपुणता को व्यक्त करते तथा इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उपास्य मात्र वही एक अल्लाह है ।

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ⑯

(१६) तथा उनमें चन्द्रमा को खूब जगमगाता बनाया है[1] तथा सूर्य को प्रकाशमान दीप बनाया है ।[2]

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ⑰

(१७) तथा तुमको धरती से (एक विशेष विधि से) उगाया है[3] (तथा पैदा किया है) ।

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ⑱

(१८) फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा तथा (एक विशेष विधि से) फिर तुम्हें निकालेगा ।[4]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ⑲

(१९) तथा तुम्हारे लिये धरती को अल्लाह (तआला) ने फ़र्श बनाया है ।[5]

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ⑳

(२०) ताकि तुम उसके विस्तृत मार्गों में चलो फिरो ।[6]

---

[1]जो धरती को प्रकाशित करने वाला तथा उसके माथे का झूमर है।

[2]ताकि इंसान उसके प्रकाश में जीविका उपार्जन के लिए, जो उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है, प्रयास तथा परिश्रम कर सके।

[3]अर्थात तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम को, जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उसमें अल्लाह ने आत्मा फूँकी । अथवा यदि सभी मानव जाति को संबोधित समझा जाये तो अभिप्राय यह होगा कि तुम जिस वीर्य से पैदा होते हो वह उसी आहार से बनता है जो धरती से प्राप्त होता है इस आधार पर सभी की उत्पत्ति इसी धरती से सिद्ध होती है।

[4]अर्थात मरकर फिर उसी मिट्टी में जाना है, फिर प्रलय के दिन उसी धरती से तुम्हें जीवित करके निकाला जायेगा।

[5]अर्थात उसे फ़र्श (शय्या) के समान बिछा दिया है। तुम उस पर ऐसे चलते-फिरते तथा उठते-बैठते हो जैसे अपने घर में बिछे बिस्तर पर।

[6]سُبُل बहुवचन है سَبِيْل का तथा فِجَاج बहुवचन है فَجّ (विस्तृत मार्ग) का। अर्थात उसने धरती पर बड़े-बड़े विस्तृत मार्ग बना दिये हैं ताकि मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान, एक नगर से दूसरे नगर तथा एक देश से दूसरे देश में जा सके। इसलिए यह मार्ग भी इंसान की व्यवसायिक तथा सामाजिक आवश्यकता है, जिसकी व्यवस्था करके अल्लाह ने मानव पर एक महान अनुग्रह किया है।

(२१) नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि हे मेरे प्रभु ! उन लोगों ने मेरी अवहेलना की[1] तथा ऐसों का आज्ञापालन किया जिनके माल तथा संतान ने उनको (नि:संदेह) हानि ही में बढ़ाया ।[2]

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

(२२) तथा उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया ।[3]

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

(२३) तथा उन्होंने कहा कि कदापि अपने देवताओं को न छोड़ना तथा न वद्द, सुवाअ, यगूस, यअुक एवं नस्र को (छोड़ना ।[4]

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾

---

[1]अर्थात मेरी अवहेलना पर अड़े हुए हैं तथा मेरे निमन्त्रण को स्वीकार नहीं कर रहे हैं।

[2]अर्थात उनके छोटों ने अपने बड़ों तथा धनवानों ही का अनुगमन किया जिनके धन तथा संतानों ने उनके लोक तथा परलोक की हानि ही को बढ़ाया है।

[3]यह धोखा तथा छल क्या था ? कुछ ने कहा कि उनका कुछ लोगों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या करने पर उभारना था। कुछ कहते हैं कि धन तथा संतान के कारण जिस स्वार्थ के धोखे में वह ग्रस्त हुए, यहाँ तक कि उनमें से कुछ ने कहा कि यदि यह सत्य पर न होते तो इनको यह सुख-सुविधायें क्यों प्राप्त होतीं ? कुछ के विचार में उनके प्रमुखों का यह कहना था कि तुम अपने देवताओं की उपासना न छोड़ना तथा कुछ के विचार में उनका कुफ़्र (इंकार) ही बड़ा धोखा था।

[4]यह नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के "पाँच सदाचारी व्यक्ति" थे जिनकी वह उपासना करते थे, तथा उनकी इतनी शुहरत हुई कि अरब में भी उनकी पूजा-अर्चना होती रही। जैसे 'वद्द' दूमतुल जनदल (स्थान) में क़बीला कल्ब का, 'सुवाअ' समुद्र तट के क़बीला हुज़ैल का, 'यगूस' सबा के निकट जुर्फ नाम के स्थान में मुराद तथा बनू गुतैफ़ का। 'यऊक' हमदान क़बीले का तथा 'नस्र' हिम्यर जाति का क़बीला जुल कलाअ का उपास्य रहा। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) यह पाँचों नूह की जाति के नेक लोगों के नाम थे। जब यह मर गये तो शैतान ने उनके श्रृद्धालुओं से कहा कि उनके चित्र बनाकर अपने घरों तथा दूकानों में रख लो ताकि वह याद रहें तथा उन का ध्यान करके तुम भी सत्कर्म करते रहो। जब यह चित्र बनाकर रखने वाले मर गये तो उनके वंश को शैतान ने यह कहकर शिर्क में लिप्त कर दिया कि तुम्हारे पूर्वज तो इनकी उपासना करते थे, जिनके चित्र तुम्हारे घरों में लटक रहे हैं। अत: उन्होंने उनकी पूजा आरम्भ कर दी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नूह)

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया,[1] (हे प्रभु !) तू उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।

مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾

(२५) ये लोग अपने पापों के कारण[2] (पानी में) डूबो दिये गये तथा नरक में पहुँचा दिये गये और अल्लाह के अतिरिक्त उन्होंने अपना कोई सहायता करने वाला न पाया।

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि हे मेरे प्रभु ! तू धरती पर किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़ ![3]

إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

(२७) यदि तू उन्हें छोड़ देगा तो नि:संदेह ये तेरे अन्य भक्तों को भी भटका देंगे तथा ये कुकर्म काफ़िरों ही को जन्म देंगे।

رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ

(२८) हे मेरे प्रभु ! तू मुझे तथा मेरे माता-पिता तथा जो भी ईमान लाकर मेरे घर में आये तथा समस्त ईमानवाले पुरूषों तथा समस्त ईमानवाली महिलाओं को क्षमा कर

---

[1] أَضَلُّوا क्रिया का कर्ता नूह की जाति के प्रमुख हैं। अर्थात उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया अथवा उसका कर्ता यही उपरोक्त पाँच बुत (देवता) हैं। इसका अभिप्राय यह है कि बहत से लोग इनके कारण गुमराही में लीन हुए। जैसे ईशदूत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी कहा था।

﴿رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ﴾

"हे मेरे प्रभु, उन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया है।" (इब्राहीम-३६)

[2] مِمَّا में ما अधिक है مِنْ خَطِيئَاتِهِم का अर्थ مِنْ أجلها و بِسَبَبِهَا أغرقوا بالطوفان है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह शाप उस समय दिया जब ईशदूत नूह अलैहिस्सलाम उनके ईमान लाने से बहुत निराश हो गये तथा अल्लाह ने भी सूचित कर दिया कि अब उनमें से कोई ईमान नहीं लायेगा।

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

दे[1] तथा काफ़िरों को विनाश के अतिरिक्त अन्य किसी बात में न बढ़ा ।[2]

سُوْرَةُ الْجِنِّ

सूरतुल जिन्न-७२

सूरः जिन्न मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अट्ठाईस आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾

(१) (हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप कह दें कि मुझे प्रकाशना की गयी है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (क़ुरआन) सुना ।[3] तथा कहा कि हम ने विचित्र क़ुरआन सुना है ।[4]

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ

(२) जो सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन देता है[5] हम तो उस पर ईमान ला चुके,[6] (अब)

---

[1]काफ़िरों को शाप दिया तो अपने तथा मोमिनों के लिए क्षमा की प्रार्थना की ।

[2]यह शाप क़यामत तक आने वाले अत्याचारियों के लिए है, जैसे उपरोक्त प्रार्थना सभी ईमान वाले पुरूषों तथा स्त्रियों के लिए है ।

[3]यह घटना सूरह अहकाफ़ २९ में गुज़र चुका है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वादिये नख़ला में सहाबा केराम को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे कि कुछ जिन्नों का वहाँ से गुज़र हुआ तो उन्होंने आपका क़ुरआन सुना, जिससे वे प्रभावित हुए । यहाँ बतलाया जा रहा है कि उस समय जिन्नों के क़ुरआन सुनने का ज्ञान आप को नहीं हुआ, अपितु प्रकाशना द्वारा आपको इससे सूचित किया गया ।

[4]عَجَبًا धातु है अतिशय के रूप में, अथवा सम्बन्ध लुप्त है ذَاعَجَبٍ अथवा धातु कर्ता संज्ञा مُعْجِبٌ के अर्थ में है । अर्थात हमने ऐसा क़ुरआन सुना है जो प्रभाव तथा वाक्य-शैली में विचित्र है, अथवा शिक्षा के आधार पर विचित्र है, अथवा बरकत (शुभ) में आश्चर्यजनक है । (फ़तहुल क़दीर)

[5]यह क़ुरआन की दूसरी विशेषता है कि वह सत्य मार्ग अर्थात सत्य एवं औचित्य को स्पष्ट करता अथवा अल्लाह का ज्ञान प्रदान करता है ।

[6]अर्थात हमने तो उसे सुनकर इस बात की पुष्टि कर दी कि वास्तव में यह ईशवाणी है,

وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ

हम कदापि अपने प्रभु का किसी अन्य को साझीदार न बनायेंगे ।[1]

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ

(३) तथा निःसंदेह हमारे प्रभु की महिमा महान है, न उसने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है तथा न सन्तान ।[2]

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ

(४) तथा निःसंदेह हम में का मूर्ख अल्लाह के विषय में झूठी बातें कहता था ।[3]

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ

(५) तथा हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि मनुष्य तथा जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगायें ।[4]

किसी मनुष्य की बात नहीं । इसमें काफ़िरों को फटकार है कि जिन्न तो एक बार सुनकर ही इस क़ुरआन पर ईमान लाये । थोड़ी सी आयत सुनकर ही उनकी काया पलट हो गई तथा वह समझ गये कि यह किसी मनुष्य की बनाई बात नहीं । किन्तु मनुष्य को विशेष रूप से इनके प्रमुखों को ही इससे कोई लाभ नहीं हुआ, जबकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से कई बार क़ुरआन सुना । इसके सिवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं उन्हीं में से थे तथा उन्हीं की भाषा में उनको क़ुरआन सुनाते थे ।

[1]न उसकी सृष्टि में से, न किसी अन्य उपास्य को, इसलिए कि वह अपने प्रभुत्व में अकेला (अद्वितीय) है ।

[2]جَدّ का अर्थ महानता एवं प्रताप है, अर्थात हमारे प्रभु की श्रेष्ठता इससे उच्चतम है कि उसके संतान अथवा पत्नी हो । मानो जिन्नो ने इन मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) की त्रुटि खोल दी जो अल्लाह से पत्नी और संतान को संबधित करते थे । उन्होंने दोनों कमजोरियों से प्रभु की प्रवित्रता एवं स्वच्छता का वर्णन किया ।

[3]سَفِيْهُنَا (हमारे मूर्ख) से अभिप्राय कुछ ने शैतान लिया है, कुछ ने उनके साथी जिन्न तथा कुछ ने सामान्य रूप से प्रत्येक वह व्यक्ति लिया है जो यह ग़लत भ्रम रखता है कि अल्लाह की संतान है । شَطَطًا के कई अर्थ लिये गये हैं, अत्याचार, झूठ, अनृत, कुफ्र में अतिशय आदि । उद्देश्य संतुलित मार्ग से दूरी तथा सीमा पार कर जाना है । अभिप्राय यह है कि यह बात कि अल्लाह की संतान है उन मूर्खों की बात है जो संतुलित तथा सीधे मार्ग से दूर, सीमा से परे, मिथ्यावादी तथा मिथ्यारोपी हैं ।

[4]इसलिए हम उसकी पुष्टि करते रहे तथा अल्लाह के विषय में यह आस्था रखे रहे यहाँ

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾

(६) वास्तविकता यह है कि कुछ मनुष्य कुछ जिन्नों से शरण माँगते थे,[1] जिससे जिन्नात अपनी उद्दण्डता में और बढ़ गये ।[2]

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾

(७) तथा (मनुष्यों) ने भी जिन्नों की तरह ये समझ लिया था कि अल्लाह कदापि किसी को नहीं भेजेगा। (अथवा किसी को पुन: जीवित न करेगा)[3]

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾

(८) तथा हमने आकाश को टटोल कर देखा तो उसको अत्यन्त चौकस सुरक्षा कर्मियों एवं तीव्र शोलों (ज्वालाओं) से पूर्ण पाया ।[4]

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾

(९) तथा इस से पूर्व हम बातें सुनने के लिए आकाश में स्थान-स्थान पर बैठ जाया करते थे ।[5] अब जो भी कान लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है ।[6]

तक कि हमने क़ुरआन सुना तो फिर हम पर इस आस्था का मिथ्या होना खुल गया।

[1]अज्ञानकाल में एक प्रथा यह भी थी कि वे कहीं यात्रा पर जाते तो जिस वादी में रुकते वहाँ जिन्नों से शरण माँगते, जैसे क्षेत्र के प्रमुख तथा बड़े से शरण माँगी जाती है। इस्लाम ने इसको समाप्त किया तथा मात्र एक अल्लाह से शरण माँगने पर बल दिया।

[2]अर्थात जब जिन्नों ने देखा कि इंसान हमसे डरते हैं तथा हमारी शरण माँगते हैं तो उनके अभिमान तथा उद्दण्ता में और अधिकता हो गई। رَهَقًا यहाँ अहंकार, उपद्रव, अवज्ञाकारिता के अर्थ में है। इसका मूल अर्थ है पाप तथा निषेध को ढकना अर्थात उनको करना।

[3]بَعْث के दोनों अर्थ हो सकते हैं, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है।

[4]حرس ، حارس (चौकीदार, रक्षक) का तथा شهب ،شهاب (ज्वाला) का बहुवचन है। अर्थात आकाशों पर फ़रिश्ते चौकीदारी करते हैं कि आकाशों की कोई बात कोई अन्य न सुन ले तथा यह तारे आकाश पर जाने वाले शैतानों पर ज्वाला बनकर गिरते हैं।

[5]तथा आकाशवाणी की कुछ सुन-गुन पाकर काहिनों ज्योतिषियों को बता दिया करते थे, जिनमें वह अपनी ओर से सौ झूठ मिला दिया करते थे।

[6]किन्तु मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजने के पश्चात यह क्रम समाप्त कर

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾

(१०) और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी बुराई का विचार किया गया है अथवा उनके प्रभु का विचार उनके साथ भलाई का है।[1]

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَاۗىِٕقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾

(११) तथा यह कि (नि:संदेह) कुछ तो हममें से सदाचारी हैं तथा कुछ उसके विपरीत भी हैं। हम विभिन्न प्रकार से विभाजित हैं।[2]

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾

(१२) तथा हमें पूर्ण विश्वास हो गया[3] कि हम अल्लाह तआला को धरती में कदापि विवश नहीं कर सकते तथा न हम भागकर उसे पराजित कर सकते हैं।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾

(१३) तथा हम मार्गदर्शन की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, तथा जो भी अपने प्रभु पर ईमान लायेगा उसे न किसी हानि का भय है न अत्याचार (तथा दुख) का।[4]

दिया गया। अब जो भी इस विचार से ऊपर जाता है अग्नि की लपट उसकी ताक में रहती है तथा टूटकर उस पर गिरती है।

[1]अर्थात इस आकाश की सुरक्षा से उद्देश्य धरती वासियों के लिए किसी बुरी योजना की पूर्ति है अर्थात उन पर प्रकोप उतारना है, अथवा भलाई का विचार अर्थात रसूल (संदेष्टा) भेजना है।

[2]قِـدَدٌ (वस्तु का खंड) صَارَ القومُ قِدَدًا उस समय बोलते हैं जब उनकी अवस्थायें परस्पर भिन्न हों, अर्थात हम विभिन्न समूहों तथा विभिन्न विचारों में विभाजित हैं। अर्थात जिन्नों में भी मुसलमान, काफ़िर, यहूदी, ईसाई, मजूसी आदि हैं। कुछ कहते हैं कि उनमें भी मुसलमानों की भाँति कदरिया, मुरजिया, राफ़िज़ा आदि हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यहाँ ظَنٌّ विश्वास के अर्थ में है, जैसे कि और भी कुछ स्थानों पर है।

[4]अर्थात न इस बात का संदेह है कि उनके पुण्यों तथा प्रत्युपकारों में कोई कमी कर दी जायेगी और न इस बात का भय कि उनकी बुराईयों में कुछ बढ़ा दिया जायेगा।

(१४) तथा, हम में से कुछ मुसलमान हैं तथा कुछ अन्यायी हैं ।[1] तो जो मुसलमान हो गये उन्होंने सीधे मार्ग की खोज कर ली ।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝14

(१५) तथा जो अत्याचारी हैं वे नरक का ईधन बन गये ।[2]

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝15ۙ

(१६) तथा यह कि यदि ये लोग सीधे मार्ग पर दृढ़ रहते तो अवश्य हम उन्हें बहुत अधिक जल पिलाते ।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَي الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ۝16ۙ

(१७) ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा ले लें[3]

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ

---

[1]अर्थात जो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत (दूतत्व) के प्रति ईमान ले आये वह मुसलमान तथा जिन्होंने इंकार किया वह अन्यायी हैं। قَاسِطٌ अत्याचारी, अन्यायी, مُقْسِطٌ न्यायकारी, अर्थात सुलासी मुजर्रद (तीन अक्षर के शब्द से जिसमें अधिक अक्षर न हों) से हो तो अत्याचार करने के अर्थ में तथा मज़ीद फीह (जिसमें अधिक अक्षर हों) से हो तो न्याय करने के।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि इंसानों की भाँति जिन भी स्वर्ग तथा नरक में जायेंगे। उनमें से काफ़िर नरक में तथा मुसलमान स्वर्ग में। यहाँ तक जिन्नों की बात पूरी हो गई। अब आगे फिर अल्लाह का कथन है।

[3]أَن لَّوِ اسْتَقَامُوا का संयोजन أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ से है, अर्थात यह बात भी मुझे प्रकाशना द्वारा बताई गई है कि.... الطَّرِيقَةِ से तात्पर्य सीधा मार्ग इस्लाम है। غَدَقٌ का अर्थ अधिक है। अधिक जल से अभिप्राय सांसारिक सम्पन्नता है, अर्थात संसार को देकर हम उनकी परीक्षा लेते, जैसे अन्य स्थान पर कहा है : ﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ﴾ (*अल-आराफ़-९६*)

यही बात अहले किताब (यहूद तथा नसारा) के संदर्भ में भी फ़रमाई गई है। (सूरह *मायेदः-६६*) कुछ कहते हैं कि इस आयत का अवतरण उस समय हुआ था जब कुरैश के काफ़िरों पर अकाल आच्छादित कर दिया गया। الطَّرِيقَةِ का दूसरा अर्थ गुमराही का मार्ग किया गया है। इस अर्थ के अनुसार यह भौतिक वैभव ढील देने स्वरूप होगा। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ﴾

"क्या ये (यूँ) समझ बैठे हैं कि हम जो भी उनके धन एवं सन्तान बढ़ा रहे हैं वह

عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

तथा जो व्यक्ति अपने प्रभु के स्मरण से मुख मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर यातना में डाल देगा ।[1]

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

(१८) तथा यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिए (विशेष) हैं, तो अल्लाह (तआला) के साथ किसी अन्य को न पुकारो ।[2]

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा जब अल्लाह का बंदा (भक्त) उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो निकट था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें ।[3]

उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं (नहीं, नहीं) बल्कि ये समझते नहीं ।" (*अल-मोमिनून-५५,५६*)

इमाम इब्ने कसीर के विचार से यह दूसरा भावार्थ उचित है जबकि इमाम शौकानी के विचार से प्रथम भावार्थ अधिक सहीह है ।

[1] صَعَدًا अर्थात عذاباً شاقًا شديداً موجعًا مؤلمـاً (इब्ने कसीर) "अति घोर दुखदायी यातना ।"

[2] مسجد का अर्थ सजदे का स्थान है । सजदा भी नमाज़ का एक रुक्न (स्तम्भ, अनिवार्य कर्म) है इसीलिए नमाज़ पढ़ने के स्थान को मस्जिद कहा जाता है । आयत का भावार्थ स्पष्ट है कि मस्जिदों का लक्ष्य मात्र एक अल्लाह की इबादत है । इसलिए मस्जिदों में किसी अन्य की उपासना, किसी अन्य से प्रार्थना, विनय तथा किसी और से गुहार अथवा उसे सहायता के लिए पुकारना वैध नहीं । यदि यहाँ भी अल्लाह के सिवा किसी को पुकारा जाने लगे तो यह अति बुरा तथा अत्याधिक अत्याचार होगा । किन्तु दुर्भाग्य से नाम के मुसलमान अब मस्जिदों में भी अल्लाह के साथ दूसरों को सहायतार्थ पुकारते हैं, अपितु मस्जिद में ऐसे शिला-लेख लटकायें हुए हैं जिन में अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सहायतार्थ पुकारा गया है । हाय ! فَلْيَبْكِ على الإسلامِ مَنْ كانَ بَاكِيًا

[3] عَبْدُ الله (अल्लाह के दास) से अभिप्राय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, तथा अभिप्राय यह है कि जिन्न तथा इंसान मिलकर चाहते हैं कि अल्लाह के इस प्रकाश को अपनी फूंकों से बुझा दें । इसके अन्य भावार्थ भी वर्णन किये गये हैं किन्तु इमाम इब्ने कसीर ने इसे प्रधानता दी है ।

قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ بِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٠﴾

(२०) (आप) कह दीजिए कि मैं तो केवल अपने प्रभु को ही पुकारता हूँ तथा उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता।[1]

قُلْ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

(२१) कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का अधिकार नहीं।[2]

قُلْ إِنِّى لَن يُجِيرَنِى مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

(२२) कह दीजिए कि मुझे कदापि कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता[3] तथा मैं कदापि उसके अतिरिक्त शरण का स्थान भी नहीं पा सकता।

إِلَّا بَلَٰغًا مِّنَ ٱللَّهِ وَرِسَٰلَٰتِهِۦ ۚ وَمَن يَعْصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَإِنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ﴿٢٣﴾

(२३) परन्तु (मेरा काम) तो केवल अल्लाह की बात तथा उसका सन्देश (लोगों को) पहुँचा देना है,[4] (अब) जो भी अल्लाह तथा उसके संदेष्टा की अवहेलना करेगा उसके लिए नरक की अग्नि है जिसमें ऐसे लोग सदैव रहेंगे।

حَتَّىٰٓ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ

(२४) यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको वचन दिया[5] जाता है, तो निकट भविष्य

---

[1]अर्थात जब सभी आप की शत्रुता पर एक मत हो गये तथा तुल गये हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने प्रभु की उपासना करता हूं, उसी से शरण माँगता तथा उसी पर भरोसा करता हूं।

[2]अर्थात मुझे तुम्हारे मार्गदर्शन अथवा गुमराही एवं लाभ-हानि का अधिकार नहीं, मैं तो मात्र एक का भक्त हूँ, जिसे अल्लाह ने प्रकाशना तथा रिसालत के लिये निर्वाचित कर लिया है।

[3]यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ तथा वह मुझे यातना देना चाहे।

[4]यह لا أملك لكم से अनुबंधित (अलग) है। यह भी संभव है कि لن يجيرني से अनुबंध हो, अर्थात अल्लाह की यातना से कोई चीज़ बचा सकती है तो वह यही है कि मैं धर्म प्रचार-प्रसार के कर्तव्य को पूरा करूँ, जिसे पूरा करना अल्लाह ने मुझ पर अनिवार्य किया है। رسالات का संयोजन अल्लाह पर है अथवा بلاغًا पर, अथवा फिर वाक्य इस प्रकार है। إلا أبلغ عن الله و أعمل برسالته (फ़तहुल क़दीर)

[5]अथवा अभिप्राय यह है कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों की शत्रुता तथा अपने कुफ्र पर डटे रहेंगे, यहां तक कि वह लोक-परलोक में वह यातना देख लें, जिसका उन्हें वचन दिया जाता है।

مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۝٢٤

में जान लेंगे कि किस का सहायक क्षीण तथा किसका गिरोह कम है ।[1]

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ۝٢٥

(२५) (आप) कह दीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका वादा तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मेरा प्रभु उसके लिए दूर की अवधि निर्धारित करेगा ।[2]

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٦

(२६) वह परोक्ष का जानने वाला है तथा अपने परोक्ष पर वह किसी को अवगत नहीं कराता ।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝٢٧

(२७) अतिरिक्त उस संदेष्टा के जिसे वह प्रिय बना ले,[3] इसलिए कि उसके भी आगे-पीछे रक्षक निर्धारित कर देता है ।[4]

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ

(२८) ताकि ज्ञान हो जाये कि उन्होंने अपने प्रभु

---

[1]अर्थात उस समय उनको पता लगेगा कि मुसलमानों का सहायक दुर्बल है अथवा मुश्रिकों (बहुदेववादियों) का तथा एकेश्वरवादियों की संख्या कम है अथवा अल्लाह के अलावा के पुजारियों की ? अभिप्राय यह है कि मुश्रिकों का तो सिरे से कोई सहायक ही नहीं होगा तथा अल्लाह की असंख्य सेना के आगे इन मुश्रिकों की संख्या भी आटे में नमक के बराबर ही होगी ।

[2]अभिप्राय यह है कि प्रकोप अथवा प्रलय का ज्ञान, यह परोक्ष (अदृश्य) से सम्बन्ध रखता है जिसे अल्लाह ही जानता है कि वह दूर है या निकट ।

[3]अर्थात अपने पैग़म्बर (संदेष्टा) को कुछ परोक्ष की बातों से सूचित कर देता है, जिसका सम्बन्ध या तो संदेश पहुँचाने से होता है अथवा उनके संदेष्टा होने का प्रमाण होते हैं । तथा खुली बात है कि अल्लाह के सूचित करने से संदेष्टा परोक्ष का जानने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि यदि पैग़म्बर को भी परोक्ष का ज्ञान होता तो फिर अल्लाह की ओर से उसे परोक्ष से सूचित करने का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता । अल्लाह तआला अपना परोक्ष उसी समय अपने रसूल पर व्यक्त करता है जब उसे पहले से इस परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, अतः परोक्षज्ञ मात्र अल्लाह ही है, जैसाकि यहाँ भी इसे स्पष्ट किया गया है ।

[4]अर्थात प्रकाशना उतरने के समय पैग़म्बर के आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं जो जिन्नों तथा शैतानों को प्रकाशना की बातें नहीं सुनने देते ।

رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

के संदेश पहँचा दिये,[1] अल्लाह (तआला) ने उनके निकटवर्ती वस्तुओं को घेर रखा है[2] तथा प्रत्येक वस्तु की संख्या की गणना कर रखी है।[3]

सूरतुल मुज़्ज़म्मिल-७३

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूर: मुज़्ज़म्मिल मक्का में अवतरित हुई तथा उसमें बीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾

(१) हे चादर में लिपटने वाले ![4]

---

[1] لِيَعْلَمَ में सर्वनाम किसकी ओर फिरता है? कुछ के विचार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु वसल्लम हैं, ताकि आप जान लें कि आप से पहले रसूलों ने भी अल्लाह का संदेश इसी प्रकार पहुँचाया जिस प्रकार आप ने पहुँचाया, अथवा रक्षक फ़रिश्तों ने अपने प्रभु का संदेश पैग़म्बर को पहुँचा दिया है। कुछ ने उसे अल्लाह की ओर फिराया है, इस स्थिति में अभिप्राय यह होगा कि अल्लाह अपने फ़रिश्तों के द्वारा अपने पैग़म्बरों की सुरक्षा करता है ताकि वह रिसालत (संदेश पहुँचाने) के कर्तव्य का पालन उचित ढंग से कर सकें। वह उस प्रकाशना की भी रक्षा करता है जो पैग़म्बरों को की जाती है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने प्रभु के संदेश लोगों तक सही-सही पहुँचा दिये हैं, अथवा फ़रिश्तों ने पैग़म्बरों तक प्रकाशना पहुँचा दी है। अल्लाह तआला को यद्यपि प्रत्येक वस्तु का ज्ञान पहले ही से है। किन्तु ऐसे अवसरों पर अल्लाह के जानने का अभिप्राय उसके अस्तित्व में आने का साधारण अवलोकन है, जैसे ﴿لِنَعْلَمَ مَن يَتَّبِعُ الرَّسُولَ﴾ "कि हम जान लें कि संदेष्टा का सत्य अनुयायी कौन है।" (*अल-बक़र:-१४३*) तथा ﴿وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ﴾ (*अनकबूत-११*) आदि आयतों में है (इब्ने कसीर)

[2] फ़रिश्तों के पास की अथवा पैग़म्बरों के पास की।

[3] क्योंकि वही परोक्ष का ज्ञान रखता है, जो हो चुका तथा जो भविष्य में होगा। सबको उसने गिन रखा है, अर्थात उसके ज्ञान में है।

[4] जिस समय इन आयतों का अवतरण हुआ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चादर ओढ़ कर लेटे हुए थे। अल्लाह ने आपकी इसी स्थिति की चर्चा करते हुए संबोधित किया। अभिप्राय यह है कि अब चादर छोड़ दें तथा रात में थोड़ा खड़े रहें अर्थात तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। कहा जाता है कि इस आदेशानुसार तहज्जुद की नमाज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी। (इब्ने कसीर)

قُمِ الَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ۝٢

(२) रातों को उठ खड़े हो जाओ, (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) परन्तु थोड़ी देर।

نِّصْفَهُۥٓ أَوِ ٱنقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۝٣

(३) आधी रात्रि अथवा उससे भी कुछ कम।

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ ٱلْقُرْءَانَ تَرْتِيلًا ۝٤

(४) अथवा उस पर बढ़ा दे[1] तथा क़ुरआन को ठहर-ठहर कर (स्पष्ट) पढ़ा कर।[2]

إِنَّا سَنُلْقِى عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝٥

(५) नि:संदेह हम तुझ पर बहुत भारी बात शीघ्र ही अवतरित करेंगे।[3]

إِنَّ نَاشِئَةَ ٱلَّيْلِ هِىَ أَشَدُّ وَطْـًٔا وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝٦

(६) नि:संदेह रात्रि का उठना मन की एकाग्रता के लिए अत्योचित है[4] तथा बात को अति उचित करने वाला है।[5]

---

[1]यह قَلِيلًا से बदल है अर्थात यह खड़ा होना (नमाज़ के लिए) आधी रात से कम (तिहाई) अथवा कुछ अधिक (दो तिहाई) हो तो कोई आपत्ति नहीं।

[2]जैसाकि हदीसों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पढ़ना रुक-रुक कर साफ़-साफ़ होता था। तथा आपने अपने अनुयायियों को भी तरतील के साथ अर्थात रुक-रुक कर पढ़ने का निर्देश दिया।

[3]रात का (क़याम) खड़ा रहना चूँकि इन्सानी मन के लिए सामान्यत: कठिन है। अत: यह मध्यवर्ती वाक्य के रूप में कहा कि हम इससे भी भारी बात तुम पर अवतरित करेंगे, अर्थात क़ुरआन, जिस के आदेशों तथा कर्तव्यों पर कार्यरत होना, इसकी सीमाओं की आवद्धता तथा उस का प्रचार-प्रसार एक भारी तथा प्राणघातक कार्य है। कुछ ने बोझ (भारीपन) से वह बोझ अभिप्राय लिया है जो प्रकाशना के समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पड़ता था, जिसके कारण कड़े जाड़े में भी आप पसीने से भीग जाते थे। (इब्ने कसीर)

[4]इसका दूसरा भावार्थ है कि रात के एकांत में कान क़ुरआन के अर्थों को समझने में दिल का अधिक साथ देते हैं जो एक नमाज़ी तहज्जुद में पढ़ता है।

[5]दूसरा भावार्थ यह है कि दिन की अपेक्षा रात को क़ुरआन पढ़ना अधिक स्पष्ट तथा मन के लगाव के लिए अधिक प्रभावशाली है, इसलिए कि उस समय दूसरी आवाज़ें नहीं होतीं, वातावरण शान्त होता है, उस समय नमाज़ी जो पढ़ता है वह आवाज़ों तथा शोर एवं सांसारिक कोलाहल की भेंट नहीं होता, बल्कि नमाज़ी उससे सुरक्षित रहता है तथा उसके प्रभाव का संवेदन करता है।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝٧

(७) नि:संदेह तुझे दिन में बहुत से कार्य होते हैं।[1]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝٨

(८) तथा तू अपने प्रभु के नाम का जप किया कर तथा समस्त सृष्टि से अलग होकर उसकी ओर ध्यानमग्न हो जा।[2]

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝٩

(९) पूर्व तथा पश्चिम का प्रभु जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तू उसी को अपना संरक्षक बना ले।

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝١٠

(१०) तथा जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह तथा उन्हें अच्छी प्रकार से छोड़ रख।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝١١

(११) तथा मुझे एवं उन झुठलाने वाले समृद्धि प्राप्त लोगों को छोड़ दे तथा उन्हें तनिक अवसर दे।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝١٢

(१२) नि:संदेह हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं तथा सुलगता हुआ नरक है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝١٣

(१३) तथा गले में अटकने वाला भोजन है तथा दर्द देने वाली[3] यातना है।

---

[1] سَبْحٌ का अर्थ है الْجَرْيُ وَ الدَّوران (चलना तथा घूमना-फिरना) अर्थात दिन के समय सांसारिक कार्य होता है। यह पहली ही बात का समर्थन है। अर्थात रात को नमाज़ और तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) अधिक लाभप्रद तथा प्रभावी है। अर्थात इस पर नियमितता के साथ दिन हो अथवा रात अल्लाह की पवित्रता, प्रशंसा, महिमा तथा 'ला ईलाह इल्लल्लाह' पढ़ता रह।

[2] تَبَتُّل का अर्थ कटना तथा अलग होना है, अर्थात अल्लाह की उपासना तथा उससे प्रार्थना एवं विनय के लिए अकेला तथा पूर्णरूप से उसकी ओर ध्यानमग्न हो जा, यह रहबानियत (साधुत्व) से अलग चीज़ है। रहबानियत तो सांसारिक संबंधों के त्याग तथा बैराग का नाम है। تَبَتُّل नाम है सांसारिक कार्यों के पूरा करने के पश्चात उपासना में लग जाना तथा अल्लाह से प्रार्थना करना, जो इस्लाम में प्रशंसनीय है।

[3] انكال यह نِكْل का बहुवचन है। قيود (बेड़ियाँ) तथा कुछ ने اغلال के अर्थ में लिया है अर्थात तौक़। جحيما (भड़कती अग्नि) ذاغصة (गले में अटकने वाला), न गले से नीचे

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

(१४) जिस दिन धरती एवं पर्वत थरथरा जायेंगे तथा पर्वत भुरभुरी रेत के टीलों की भाँति हो जायेंगे।[1]

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

(१५) निःसंदेह हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला[2] संदेष्टा भेज दिया है, जैसा कि हमने फ़िरऔन की ओर संदेष्टा भेजा था।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾

(१६) तो फ़िरऔन ने उस संदेष्टा की अवज्ञा की तो हमने उसे घोर आपदा में पकड़ लिया।[3]

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

(१७) तुम यदि काफ़िर रहे तो उस दिन किस प्रकार बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।[4]

السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ

(१८) जिस दिन आकाश फट जायेगा,[5] अल्लाह

उतरे न ऊपर आये। यह زَقُّوْمٌ अथवा ضَرِيْعٌ का खाना होगा। ضَرِيْعٌ एक कटीली झाड़ी है जो अति दुर्गन्धित तथा विषैली होती है।

[1]अर्थात यह यातना उस दिन होगी, जिस दिन धरती तथा पर्वत भूँचाल से ऊपर-तले हो जायेंगे तथा बड़े-बड़े भारी भरकम पर्वत रेत के ढेरों के समान होकर रह जायेंगे। كَثِيبٌ रेत का टीला, مَهِيلًا भुरभुरी, पैरों के नीचे से निकल जाने वाली रेत।

[2]जो क़यामत के दिन तुम्हारे करतूतों की गवाही देगा।

[3]इसमें मक्कावासियों को चेतावनी है कि तुम्हारा परिणाम भी वही हो सकता है जो फ़िरऔन का मूसा अलैहिस्सलाम को झुठलाने के कारण हुआ।

[4]شِيبٌ (शीब) أَشْيَبُ (अशयब) का बहुवचन हैं। क़यामत के दिन की भयानकता के कारण वास्तव में बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, अथवा उपमा स्वरूप ऐसा कहा।

हदीस में भी आता है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला आदम अलैहिस्सलाम से कहेगा कि अपनी संतान में से नरक के लिए अलग निकाल ले। आदरणीय आदम कहेंगे कि हे अल्लाह ! किस प्रकार ? अल्लाह फ़रमायेगा कि प्रत्येक हज़ार में से ९९९। इस समय गर्भवती स्त्रियों के गर्भ गिर जायेंगे तथा बच्चे बूढ़े हो जायेंगे। (अलहदीस, अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल हज्ज)

[5]यह يوم का दूसरा विशेषण है, उस दिन भयानकता से आकाश फट जायेगा।

كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

(तआला) का यह वचन पूर्ण होकर ही रहेगा।[1]

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

(१९) निःसंदेह यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने प्रभु की ओर के मार्ग को अपना ले।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ

(२०) निःसंदेह तेरा प्रभु भली-भाँति जानता है कि तू तथा तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात्रि के तथा आधी रात्रि के एवं एक तिहाई रात्रि के (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं,[2] तथा रात्रि-दिन का पूर्ण अनुमान अल्लाह (तआला) को ही है,[3] वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे कदापि न निभा सकोगे[4] तो उसने तुम पर कृपा की,[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह तआला ने जो मौत के पश्चात जीवित करने, हिसाब-किताब एवं स्वर्ग-नरक का जो वादा किया है, यह निःसंदेह होकर रहना है।

[2]जब सूरह के आरम्भ में आधी रात अथवा उससे कम या अधिक क़ियाम (नमाज़ के लिए खड़े होने) का आदेश दिया गया तो आप तथा आप के साथियों का एक गिरोह रात में नमाज़ पढ़ने लगा, कभी दो तिहाई से कम, कभी आधी रात तथा कभी एक तिहाई रात जैसाकि यहाँ वर्णित है। किन्तु एक तो यह रात की नित्य नमाज़ अति कठिन थी, दूसरे समय का यह अनुमान आधी रात या तिहाइ अथवा दो तिहाई भाग नमाज़ पढ़ना इससे भी बड़ा कठिन था। इसलिए अल्लाह ने इस आयत में हलका करने का आदेश उतारा, जिसका अर्थ कुछ के विचार में तहज्जुद की नमाज़ छोड़ने की अनुमति है तथा कुछ के विचार में यह है कि उसके फ़र्ज़ (अनिवार्य होने) को इस्तिहबाब (उत्तम होने) से बदल दिया गया, अब यह न आपके अनुयाईयों के लिए अनिवार्य है, न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए। कुछ का कहना है कि यह छूट केवल अनुयाईयों के लिए है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इसका पढ़ना अनिवार्य था।

[3]अर्थात अल्लाह तो रात की घड़ियाँ गिन सकता है कि कितनी व्यतीत हो गयीं तथा कितनी शेष रह गई हैं। तुम्हारे लिए यह अनुमान असंभव है।

[4]जब तुम्हारे लिए, रात के गुज़रने का सही अनुमान संभव ही नहीं तो तुम नियमित समय तक तहज्जुद की नमाज़ में व्यस्त भी कैसे रह सकते हो ?

[5]अर्थात अल्लाह तआला ने कियामुल्लैल (तहज्जुद की नमाज़) का आदेश निरस्त कर दिया तथा अब केवल उसका उत्तम होना शेष रह गया है तथा वह भी समय की आबद्धता के

أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

अत: जितना क़ुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ अन्य धरती पर भ्रमण करके अल्लाह तआला की कृपा (अर्थात जीविका भी) खोजेंगे[2] तथा कुछ

बिना । आधी रात, तिहाई रात तथा दो तिहाई रात की आबद्धता भी अनिवार्य नहीं। यदि तुम थोड़ा समय लगाकर दो रकअत भी पढ़ लोगे तो अल्लाह के पास तहज्जुद की नमाज़ के पुण्य के पात्र बनोगे, फिर भी यदि कोई आठ रकअत तहज्जुद की नमाज़ का प्रबन्ध करे जैसे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा था तो यह अति उत्तम होगा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगामी होगा।

[1] فَاقْرَءُوا से अभिप्राय है فصلّوا तथा क़ुरआन से अभिप्राय الصَّلَاةَ (नमाज़) है। रात की नमाज़ में क़याम (खड़ा होना) लम्बा होता है तथा क़ुरआन अधिक पढ़ा जाता है, अत: तहज्जुद की नमाज़ को ही क़ुरआन कह दिया गया। जैसे नमाज़ में सूरह फ़ातिहा अति आवश्यक है, इसलिए अल्लाह ने हदीस क़ुदसी में, जो सूरह फ़ातिहा के भाष्य में गुज़र चुकी है, सूरह फ़ातिहा को नमाज़ से व्यंजित किया है। «قَسَمْتُ الصَّلاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي» (अल-हदीस) इस के लिए "जितना क़ुरआन पढ़ना सहज हो पढ़ लो" का अर्थ है, रात में जितनी नमाज़ पढ़ सकते हो पढ़ लो। इसलिए न समय की पाबंदी है और न रकअत की। इस आयत से कुछ लोग यह तर्क निकालते हैं कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी नहीं है, जितना तथा जहाँ से किसी के लिए सहज हो पढ़ लेगा तो नमाज़ हो जायेगी। किन्तु प्रथम तो यहाँ क़िराअत (पढ़ना) नमाज़ के अर्थ में है जैसाकि हमने वर्णन किया। इसलिए आयत का सम्बन्ध इससे नहीं कि नमाज़ में कितनी क़िराअत (क़ुरआन पढ़ना) आवश्यक है ? दूसरे यदि इसका सम्बन्ध क़िराअत से मान लिया जाये तब भी यह तर्क अपने भीतर कोई शक्ति नहीं रखता। क्योंकि مَا تَيَسَّرَ की व्याख्या स्वयं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कर दी है कि कम से कम क़िराअत जिसके बिना नमाज़ नहीं होगी वह सूरह फ़ातिहा है। इसलिए आपने फ़रमाया कि इसे अवश्य पढ़ो, जैसेकि सही एवं अति दृढ़ एवं स्पष्ट हदीसों में इसका आदेश है। नबी की इस व्याख्या के विपरीत यह कहना कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा अनिवार्य नहीं अपितु कोई भी सूरह तथा एक आयत पढ़ लो नमाज़ हो जायेगी बड़े दुष्साहस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों से विमुखता का धिक्कृत प्रदर्शन है। तथा इमामों के कथन के विपरीत भी जो उन्होंने धर्म-बोध (फ़िक़्ह) के नियम की किताबों में लिखा है कि इस आयत से इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा न पढ़ने का तर्क देना वैध नहीं, इसलिए कि यह दो आयतें परस्पर विपरीत हैं।

[2] अर्थात व्यापार तथा व्यवसाय के लिए यात्रा करना तथा एक नगर से दूसरे नगर अथवा एक देश से दूसरे देश जाना पड़ेगा।

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

अल्लाह तआला के मार्ग में धर्मयुद्ध भी करेंगे,[1] तो तुम सरलता पूर्वक जितना (क़ुरआन) पढ़ सकते हो पढ़ो ।[2] तथा नमाज़ नियमितता से पढ़ो[3] तथा जकात (भी) देते रहा करो तथा अल्लाह तआला को उत्तम ऋण दो,[4] तथा जो पुण्य तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह (तआला) के यहाँ सर्वोत्तम रूप से बदले में अत्याधिक पाओगे ।[5] और अल्लाह तआला से क्षमा माँगते रहो । नि:संदेह अल्लाह तआला क्षमा करने वाला कृपालु है ।

सूरतुल मुद्दस्सिर-७४

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ

सूर: मुद्दस्सिर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छप्पन आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾

(१) हे कपड़ा ओढ़ने वाले ।[6]

---

[1]इसी प्रकार जिहाद (धर्मयुद्ध) में भी कठिन यात्रायें करनी पड़ती हैं । यह तीनों बातें रोग, यात्रा तथा जिहाद बारी-बारी सबके सामने आती हैं । इसलिए अल्लाह तआला ने तहज्जुद में छूट दे दी है, क्योंकि इनमें कठिनाईयाँ हैं ।

[2]छूट के कारण के साथ छूट का यह आदेश पुन: ब्यान कर दिया गया ।।

[3]अर्थात पाँच नमाज़ें जो फ़र्ज़ हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह के मार्ग में आवश्यकतानुसार ख़र्च करो । इसे उत्तम ऋण कहा गया कि अल्लाह उसका वदला सात सौ गुना वल्कि उससे अधिक प्रदान करेगा ।

[5]अर्थात ऐच्छिक नमाज़ें, दान, दक्षीणा तथा जो अन्य पुण्य के कर्म करोगे उसका अल्लाह के पास उत्तम वदला पाओगे । अधिकतर भाष्यकारों ने इस सूर: के आधे भाग को मदनी तथा आधे भाग को मक्की माना है जिसका कारण आयत न॰ २० है जो मदनी है ।

[6]सर्वप्रथम जो प्रकाशना उतरी वह اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ है । उसके बाद प्रकाशना में

(२) खड़ा हो जा तथा सावधान कर दे ।[1]	قُمْ فَأَنْذِرْ ۝٢
(३) तथा अपने प्रभु ही की महिमा वर्णन कर ।	وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣
(४) तथा अपने वस्त्रों को पवित्र रखा कर ।[2]	وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤
(५) और अपवित्रता को छोड़ दे ।[3]	وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥
(६) तथा उपकार करके अधिक लेने की इच्छा न कर ।[4]	وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦
(७) तथा अपने प्रभु के मार्ग में धैर्य रख ।	وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧
(८) तो जब नरसिंघा में फूँका जायेगा ।	فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝٨
(९) तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा ।	فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝٩
(१०) (जो) काफ़िरों पर सरल न होगा ।[5]	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١٠

विलम्ब हो गया तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अति व्याकुल हो गये तथा चिंतित रहने लगे । एक दिन अकस्मात वही फ़रिश्ता जो हिरा (पर्वत) की गुफ़ा में प्रकाशना लेकर प्रथम बार आया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि धरती तथा आकाश के बीच एक कुर्सी पर विराजमान है, जिससे आप पर एक भय छा गया तथा घर जाकर घर वालों से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, अतः उन्होंने आपको एक कपड़ा ओढ़ा दिया । इसी स्थिति में यह प्रकाशना अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम सूरतुल मुद्दस्सिर तथा किताबुल ईमान) इस आधार पर यह दूसरी वह्यी (प्रकाशना) तथा प्रकाशना के विलम्ब के पश्चात प्रथम प्रकाशना है ।

[1] अर्थात मक्कावासियों को डरा यदि वह ईमान न लायें ।

[2] अर्थात मन तथा विचार के साथ कपड़े भी पवित्र रख । यह आदेश इसलिए दिया कि मक्का के मुशरिक पवित्रता का ध्यान नहीं रखते थे ।

[3] अर्थात मुर्तियों की पूजा त्याग दे । यह वास्तव में लोगों को आपके माध्यम से आदेश दिया जा रहा है ।

[4] अर्थात उपकार करके यह इच्छा न रख कि बदले में इससे अधिक मिलेगा ।

[5] अर्थात प्रलय का दिन काफ़िरों पर भारी होगा क्योंकि उस दिन कुफ़्र का परिणाम उन्हें भुगतना होगा जिसे वह संसार में करते रहे ।

(११) मुझे तथा उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है ।[1]

ذَرۡنِي وَمَنۡ خَلَقۡتُ وَحِيدٗا ١١

(१२) तथा उसे अत्याधिक धन दे रखा है ।

وَجَعَلۡتُ لَهُۥ مَالٗا مَّمۡدُودٗا ١٢

(१३) तथा उपस्थित रहने वाले पुत्र भी ।[2]

وَبَنِينَ شُهُودٗا ١٣

(१४) तथा मैंने उसे बहुत कुछ समृद्धि दे रखी है ।[3]

وَمَهَّدتُّ لَهُۥ تَمۡهِيدٗا ١٤

(१५) फिर भी उसकी कामना है कि मैं उसे और अधिक दूँ ।[4]

ثُمَّ يَطۡمَعُ أَنۡ أَزِيدَ ١٥

(१६) नहीं-नहीं,[5] वह हमारी आयतों का विरोधी है ।[6]

كَلَّآۖ إِنَّهُۥ كَانَ لِأٓيَٰتِنَا عَنِيدٗا ١٦

(१७) शीघ्र ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई[7] चढ़ाऊँगा ।

سَأُرۡهِقُهُۥ صَعُودًا ١٧

---

[1]यह शब्द चेतावनी तथा धमकी के लिए है कि उसे जिसे मैंने माँ के पेट से अकेला पैदा किया, उसके पास धन था न संतान, तथा मुझे अकेला छोड़ दो । अर्थात मैं स्वयं ही उससे निपट लूँगा । कहते हैं कि यह वलीद पुत्र मुगीरा की ओर संकेत है । यह कुफ्र तथा उपद्रव में बहुत बढ़ा हुआ था, इसलिए विशेष रूप से उसकी चर्चा की है ।

[2]उसे अल्लाह ने पुत्र प्रदान किये थे तथा वह प्रत्येक समय उसके पास ही रहते थे, घर में धन की अधिकता थी । इसलिए पुत्रों को व्यापार के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती थी । कुछ कहते हैं कि यह पुत्र सात थे, कुछ बारह तथा कुछ तेरह बताते हैं, इनमें से तीन मुसलमान हो गये थे, ख़ालिद, हिशाम तथा वलीद पुत्र वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हुम । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात धन-सम्पत्ति में, प्रधानता तथा प्रमुखता में एवं दीर्घायु में ।

[4]अर्थात कुफ्र तथा अवज्ञा के उपरान्त भी उसकी आकांक्षा है कि मैं उसे और अधिक दूँ ।

[5]अर्थात मैं उसे अधिक नहीं दूँगा ।

[6]यह كَلَّا का कारण है । عَنِيدٌ उस व्यक्ति को कहते हैं जो सत्य को जानते हुए उसका विरोध करे तथा उसका खण्डन करे ।

[7]अर्थात उसे ऐसी यातना में ग्रस्त करूँगा जिसे सहन करना अति कठिन होगा । कुछ कहते हैं कि नरक में अग्नि का पर्वत होगा जिस पर उसे चढ़ाया जायेगा । إِرْهَاقٌ का अर्थ है इंसान पर भारी चीज लाद देना (फ़तहुल क़दीर)

إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨

(१८) उसने विचार करके अनुमान किया ।[1]

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩

(१९) उसका नाश हो ! उसने कैसे अनुमान किया ?

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠

(२०) वह फिर नष्ट हो ! किस प्रकार अनुमान किया ?[2]

ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١

(२१) उसने फिर देखा ।[3]

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢

(२२) फिर मुख सिकोड़ लिया तथा मुँह बना लिया ।[4]

ثُمَّ أَدْبَرَ وَٱسْتَكْبَرَ ۝٢٣

(२३) फिर पीछे हट गया तथा गर्व किया ।[5]

فَقَالَ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝٢٤

(२४) तथा कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नक़ल किया जाता है ।[6]

إِنْ هَٰذَآ إِلَّا قَوْلُ ٱلْبَشَرِ ۝٢٥

(२५) (यह) मनुष्य के कथन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝٢٦

(२६) मैं शीघ्र ही उसे नरक में डालूँगा ।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧

(२७) तथा तुझे क्या पता[7] कि नरक क्या चीज है ?

---

[1]अर्थात पवित्र क़ुरआन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का संदेश सुनकर उसने इस विषय में सोचा कि मैं इसका क्या उत्तर दूँ ? तथा अपने मन में उसने वह तैयार किया ।

[2]यह उसके संवन्ध में अभिशाप के शब्द हैं कि नाश हो, मारा जाये, क्या बात उसने सोची है ?

[3]अर्थात फिर विचार किया कि क़ुरआन का खण्डन किस प्रकार संभव है ।

[4]अर्थात यह उत्तर विचारते समय मुख सिकोड़ लिया तथा बिसोर लिया, जैसाकि साधारणत: किसी गंभीर बात पर विचार करते समय इंसान ऐसे ही करता है ।

[5]अर्थात सत्य से मुँह फेर लिया तथा ईमान लाने से अहंकार किया ।

[6]अर्थात यह किसी से सीख आया तथा वहाँ से नकल कर लाया है और दावा कर दिया कि यह अल्लाह का अवतरित किया है ।

[7]नरक के नामों अथवा श्रेणियों में से एक का नाम "सक़र" भी है ।

(२८) न वह शेष रखती है तथा न छोड़ती है ।[1]

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

(२९) खाल को झुलसा देती है ।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

(३०) तथा उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते नियुक्त) हैं ।[2]

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

(३१) तथा हमने नरक के रक्षक केवल फ़रिश्ते रखे हैं । तथा हमने उनकी संख्या केवल काफ़िरों की परीक्षा के लिए निर्धारित कर रखी है,[3] ताकि अहले किताब विश्वास कर लें [4] तथा ईमान वाले ईमान में बढ़ जायें [5] तथा अहले किताब एवं मुसलमान संदेह न करें, तथा जिनके हृदय में रोग है वे तथा काफिर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह तआला का क्या तात्पर्य है ?[6] इसी

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۙ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ

---

[1]उनके शरीर पर मांस छोड़ेगी न अस्थि । अर्थात अभिप्राय यह है कि नरकवासियों को जीवित छोड़ेगी न मृत । لا يموت فيها و لا يحيي

[2]अर्थात नरक पर द्वारपाल के रूप में १९ फ़रिश्ते नियुक्त हैं ।

[3]यह कुरैश के मूर्तिपूजकों का खंडन है, जब नरक के अधिकारियों की अल्लाह ने चर्चा की तो अबूजहल ने कुरैश के समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि तुममें प्रत्येक दस व्यक्तियों का गिरोह एक-एक फ़रिश्ते के लिए काफ़ी नहीं होगा । कुछ कहते हैं कि किलदा नामक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था, कहा कि तुम सभी मात्र दो फ़रिश्ते संभाल लेना, १७ फ़रिश्तों को तो मैं अकेला ही देख लूँगा । कहते हैं कि उसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुश्ती की भी कई बार चुनौती दी तथा प्रत्येक बार पराजित हुआ परन्तु ईमान नहीं लाया । कहते हैं कि इस के सिवा रुकाना पुत्र अब्दे यज़ीद के साथ भी आपने कुश्ती लड़ी थी किन्तु वह पराजित होकर मुसलमान हो गये थे । (इब्ने कसीर) अभिप्राय यह है कि यह संख्या भी उनके परिहास अर्थात परीक्षा का हेतु बन गई ।

[4]अर्थात यह जान लें कि यह रसूल सत्य है तथा उससे वही बात की है जो पूर्व के ग्रंथों में भी अंकित है ।

[5]कि अहले किताब ने उनके पैग़म्बर की बात की पुष्टि की है ।

[6]दिल के रोगी से अभिप्राय मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं अथवा फिर वह हैं जिनके दिलों में

مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَن يَشَآءُ وَيَهْدِى مَن يَشَآءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِىَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

प्रकार अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटका देता है तथा जिसे चाहता है मार्गदर्शन देता है[1] तथा तेरे प्रभु की सेनाओं को उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता,[2] यह समस्त मनुष्य के लिए (साक्षात) शिक्षा (एवं उपदेश) है।[3]

كَلَّا وَٱلْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

(३२) कदापि नहीं ![4] चन्द्रमा की सौगन्ध।

وَٱلَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा रात्रि की जब वह पीछे हटे।

وَٱلصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा प्रातः की जब वह प्रकाशित हो जाये।

إِنَّهَا لَإِحْدَى ٱلْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

(३५) कि (निःसंदेह वह नरक) बड़ी वस्तुओं में से एक है।[5]

शंकायें थीं, क्योंकि मक्का में मुनाफ़िक नहीं थे अर्थात यह पूछेंगे कि उनकी संख्या को यहाँ चर्चा करने में अल्लाह की क्या हिक्मत है ?

[1]अर्थात विगत गुमराही की भाँति जिसे चाहता है कुमार्ग तथा जिसे चाहता है मार्गदर्शन करता है इसमें जो हिक्मत होती है उसे केवल अल्लाह ही जानता है।

[2]अर्थात यह काफ़िर तथा मुशरिक समझते हैं कि नरक में १९ फ़रिश्ते ही तो हैं, जिन पर क़ाबू पाना कौन सा बड़ा काम है? परन्तु उनको पता नहीं कि प्रभु की सेना तो इतनी है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं। केवल फ़रिश्ते ही इतनी संख्या में हैं कि ७० हज़ार फ़रिश्ते नित्य दिन अल्लाह की उपासना के लिए "बैतुल मामूर" में प्रवेश करते हैं, फिर प्रलय तक उनकी बारी नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम)

[3]अर्थात यह नरक तथा उस पर नियुक्त फ़रिश्ते इंसानों की शिक्षा एवं उपदेश के लिए हैं कि संभवतः वह अवज्ञा से रुक जायें।

[4]كَلَّا यह मक्कावासियों के भ्रम का इंकार है, अर्थात जो वह यह समझते हैं कि हम फ़रिश्तों को पराजित कर लेंगे कदापि ऐसा न होगा। सौगन्ध है चन्द्रमा की तथा रात की जब वह पीछे हटे अर्थात जाने लगे।

[5]यह सौगन्ध का उत्तर है। كُبَر (कुबर) كُبْرَىٰ (कुबरा) का बहुवचन है। अति महत्वपूर्ण चीज़ों की शपथ के पश्चात अल्लाह ने नरक की महानता तथा भयानकता का वर्णन किया है, जिससे उसकी महानता में कोई संदेह नहीं रहता।

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦

(३६) मनुष्य को डराने वाला ।[1]

لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝٣٧

(३७) उन व्यक्तियों के लिए जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे अथवा पीछे हटना चाहे ।[2]

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝٣٨

(३८) प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है ।[3]

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝٣٩

(३९) परन्तु दायें हाथ वाले ।[4]

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝٤٠

(४०) (कि) वे स्वर्गों में (बैठे हुए) प्रश्न करते होंगे ।[5]

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۝٤١

(४१) पापियों से ।

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۝٤٢

(४२) तुम्हें नरक में किस बात ने डाला ।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝٤٣

(४३) वे उत्तर देंगे कि हम नमाज़ी न थे ।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۝٤٤

(४४) न भूखों को खाना खिलाते थे ।[6]

---

[1]अर्थात यह नरक डराने वाली है अथवा उस डराने वाली से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अथवा पवित्र क़ुरआन है, क्योंकि क़ुरआन भी अपने वर्णन किये वचन तथा धमकी के आधार पर मानव जाति के लिए सचेत करने वाला है ।

[2]अर्थात ईमान तथा आज्ञाकारिता में आगे बढ़ना चाहे अथवा उससे पीछे हटना चाहे । अभिप्राय यह है कि चेतावनी प्रत्येक के लिए है जो ईमान लाये (विश्वास करे) अथवा कुफ़्र (इंकार) करे ।

[3]رهن गिरवी रखने को कहते हैं । अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का गिरवी है । वह कर्म उसे यातना से मुक्त करा लेगा (यदि सदाचारी होगा) अथवा नष्ट कर देगा । (यदि दुराचारी होगा)

[4]अर्थात वह अपने पापों के बंदी नहीं होंगे, अपितु अपने सत्कर्मों के कारण स्वतन्त्र होंगे ।

[5]فِي جَنَّاتٍ यह أَصْحَابُ الْيَمِينِ की स्थिति बताने के लिए है स्वर्गीय अटारियों में बैठ नरक वासियों से प्रश्न करेंगे ।

[6]नमाज़ अल्लाह के अधिकार में से है तथा निर्धनों का खिलाना बंदों के अधिकार में से है । अभिप्राय यह हुआ कि हमने अल्लाह के अधिकार पूरे किये न बंदों के ।

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा हम वाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ वाद-विवाद में व्यस्त रहा करते थे।[1]

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हम प्रतिफल के दिन को झुठलाते थे।

حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ﴿٤٧﴾

(४७) यहाँ तक कि हमारी मृत्यु आ गयी।[2]

فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) तो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश लाभप्रद न होगी।[3]

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन्हें क्या हो गया है कि वे शिक्षा से मुख मोड़ रहे हैं ?

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

(५०) जैसेकि वे भड़के हुए गधे हैं।

فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾

(५१) जो शेर से भागे हों।[4]

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

(५२) अपितु उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे स्पष्ट किताबें दी जायें।[5]

---

[1]विवाद तथा गुमराही का पक्ष में संलग्नता से भाग लेते थे।

[2]يقين (निश्चित) का अर्थ मौत है, जैसे अल्लाह ने दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ﴾

"अपने प्रभु की उपासना मृत्यु के आने तक करते रहो।" (*अल-हिज्र-९९*)

[3]अर्थात जो उपरोक्त दुर्गुणों से युक्त होगा उसे किसी की सिफ़ारिश भी लाभ नहीं पहुँचायेगी, क्योंकि वह कुफ़्र के कारण सिफ़ारिश के पात्र नहीं होंगे। सिफ़ारिश तो मात्र उनके लिए लाभप्रद होगी जो ईमान के कारण सिफ़ारिश के पात्र होंगे, अल्लाह की ओर से सिफ़ारिश की अनुमति भी उन्ही के लिए मिलेगी न कि प्रत्येक के लिए।

[4]अर्थात यह सत्य से भड़कने तथा मुख फेरने में ऐसे हैं, जैसे वन के भयभीत गधे सिंह से भागते हैं जब वह उनका शिकार करना चाहे। قَسْوَرَةٌ का अर्थ सिंह है। कुछ ने धनुर्धर (तीर चलाने वाला) अर्थ किया है।

[5]अर्थात प्रत्येक के हाथ में अल्लाह की ओर से एक खुली किताब उतरे जिसमें लिखा हो

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝٥٣

(५३) कदापि ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि ये क़ियामत (प्रलय) से निर्भय हैं ।[1]

كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ۝٥٤

(५४) कदापि नहीं ! यह (क़ुरआन) एक शिक्षा है ।[2]

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ۝٥٥

(५५) अब जो चाहे इससे शिक्षा प्राप्त करे ।

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝٥٦

(५६) तथा वे उस समय शिक्षा प्राप्त करेंगे, जब अल्लाह तआला चाहे,[3] वह इसी योग्य है कि उससे डरें तथा इस योग्य भी कि वह क्षमा करे ।[4]

सूरतुल क़ियाम:-७५

سُورَةُ الْقِيَامَةِ

सूर: क़ियाम: मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चालीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

कि मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं । कुछ ने यह भावार्थ किया है कि बिना कर्म के यह यातना से मुक्ति चाहते हैं, अर्थात प्रत्येक को मुक्ति-लेख मिल जाये । (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उनके उपद्रव का कारण आख़िरत (परलोक) के प्रति अविश्वास तथा उसका इंकार है जिसने उन्हें निर्भय कर दिया है ।

[2]परन्तु उसके लिए जो इस क़ुरआन के सदुपदेशों से शिक्षा ग्रहण करना चाहे ।

[3]अर्थात इस क़ुरआन से मार्गदर्शन तथा सदुपदेश उसे ही प्राप्त होगा जिसे अल्लाह चाहेगा ।

﴿وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾

"तथा तुम जगत के प्रभु के बिना चाहे कुछ नहीं चाह सकते ।" (*अत्तकवीर-२९*)

[4]अर्थात वह अल्लाह ही इस योग्य है कि उससे डरा जाये तथा वही क्षमादान के अधिकार रखता है । अत: वही इस बात के योग्य है कि उसके आज्ञा का पालन किया जाये तथा उसकी अवज्ञा से बचा जाये ताकि इंसान उसकी दया तथा क्षमा के योग्य बन सके ।

لَآ أُقۡسِمُ بِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ ١

(१) मैं सौगन्ध खाता हूँ क़ियामत (प्रलय) के दिन की ।[1]

وَلَآ أُقۡسِمُ بِٱلنَّفۡسِ ٱللَّوَّامَةِ ٢

(२) तथा सौगन्ध खाता हूँ उस मन की जो धिक्कार (निन्दा) करने वाला हो ।[2]

أَيَحۡسَبُ ٱلۡإِنسَٰنُ أَلَّن نَّجۡمَعَ عِظَامَهُۥ ٣

(३) क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उसकी अस्थियाँ एकत्रित करेंगे ही नहीं ।[3]

بَلَىٰ قَٰدِرِينَ عَلَىٰٓ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُۥ ٤

(४) हाँ, अवश्य करेंगे, हमको सामर्थ्य है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें ।[4]

بَلۡ يُرِيدُ ٱلۡإِنسَٰنُ لِيَفۡجُرَ أَمَامَهُۥ ٥

(५) अपितु मनुष्य तो चाहता है कि आगे-आगे अवज्ञा (एवं अवहेलना) करता जाये ।[5]

---

[1] أُقۡسِمُ में ﻻ अधिक है जो अरबी की एक भाषा-शैली है जैसे ﴿مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسۡجُدَ﴾ (अल-आराफ़-१२) तथा ﴿لِّئَلَّا يَعۡلَمَ أَهۡلُ ٱلۡكِتَٰبِ﴾ (अल-हदीद-२९) तथा अन्य बहुत से स्थान पर है । कुछ कहते हैं कि सौगन्ध से पहले काफ़िरों की बात का इंकार है, वे कहते थे कि मृत्यु के पश्चात कोई जीवन नहीं । ﻻ के द्वारा कहा गया कि जैसे तुम कहते हो बात ऐसी नहीं मैं प्रलय के दिन की सौगन्ध खाता हूँ । क़ियामत (प्रलय) के दिन की सौगन्ध खाने से उद्देश्य उसके महत्व तथा गंभीरता को स्पष्ट करना है ।

[2]अर्थात भलाई पर भी करता है कि अधिक क्यों नहीं की तथा बुराईयों पर भी कि इससे रुकता क्यों नहीं ? संसार में भी जिसकी अंतरात्मा जागरूक होती है उनकी आत्मा उन्हें धिक्कारती है, परन्तु आख़िरत (परलोक) में तो सभी की आत्मा धिक्कारेगी ।

[3]यह शपथ का उत्तर है । इंसान से अभिप्राय यहाँ काफ़िर तथा नास्तिक इंसान है जो क़यामत (प्रलय) को नहीं मानता, उसकी सोंच ग़लत है । अल्लाह तआला निश्चय इंसानों के अंश (अंग) को एकत्रित करेगा । यहाँ अस्थियों की विशेष रूप से चर्चा है इसलिए कि अस्थियाँ ही पैदाईश का मूल ढाँचा तथा गोलम्बर (फ़र्मा) हैं ।

[4]بَنَان हाथों एवं पैरों के उन किनारों को कहते हैं जो जोड़ों, नाख़ूनों तथा सूक्ष्म रगों एवं महीन अस्थियों पर स्थित होते हैं । जब यह महीन तथा सूक्ष्म वस्तुयें हम जोड़ देंगे तो बड़े-बड़े भागों (अंगों) को जोड़ देना हमारे लिए क्या कठिन होगा ?

[5]अर्थात इस आशा पर सत्य की अवहेलना तथा इंकार करता है कि कौन सी प्रलय आनी है ।

(६) पूछता है कि क़ियामत (प्रलय) का दिन कब आयेगा ।[1] يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝٦

(७) तो जिस समय आँखें पत्थरा जायेंगी ।[2] فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧

(८) तथा चाँद प्रकाशहीन हो जायेगा ।[3] وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨

(९) तथा सूर्य एवं चाँद एकत्रित कर दिये जायेंगे ।[4] وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩

(१०) उस दिन मनुष्य कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है ?[5] يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠

(११) नहीं-नहीं, कोई शरणास्थल नहीं ।[6] كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١

(१२) आज तो तेरे प्रभु की ओर ही ठिकाना है ।[7] اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ ۣالْمُسْتَقَرُّ ۝١٢

---

[1]यह प्रश्न इसलिए नहीं करता कि पापों से क्षमा माँगे, अपितु क़ियामत के घटित होने को असंभव समझते हुए प्रश्न करता है । इसलिए अवज्ञा तथा दुराचार से नहीं रुकता फिर भी आगामी आयत में अल्लाह तआला क़ियामत के आने का समय बता रहा है ।

[2]भय तथा आश्चर्य से जैसे मौत के समय साधारणत: होता है ।

[3]जब चाँद को गहन लगता है तो उस समय भी वह प्रकाशहीन हो जाता है । किन्तु यह चाँद गहन जो प्रलय के लक्षणों में से है जब होगा तो पत्पश्चात उसमें प्रकाश नहीं आयेगा ।

[4]अर्थात प्रकाशहीन होने से अभिप्राय है कि चाँद के समान सूरज का भी प्रकाश समाप्त हो जायेगा ।

[5]अर्थात जब यह घटनायें घटेंगी तो फिर अल्लाह से अथवा नरक की यातना से भागने का मार्ग खोजेगा, किन्तु उस समय भागने का रास्ता कहाँ होगा ?

[6]وَزَر पर्वत अथवा गढ़ को कहते हैं जहाँ मनुष्य शरण ले, वहाँ ऐसी कोई शरण की जगह नहीं होगी ।

[7]जहाँ वह बंदों के बीच निर्णय करेगा । यह संभव नहीं होगा कि कोई अल्लाह के इस न्यायालय से छिप जाये ।

يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ⑬

(१३) आज मनुष्य को उसके आगे भेजे हुए तथा पीछे छोड़े हुए से अवगत कराया जायेगा ।[1]

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ⑭

(१४) बल्कि मनुष्य स्वयं अपने आप पर प्रमाण है ।[2]

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ⑮

(१५) यद्यपि कितने ही बहाने पेश करे ।[3]

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ⑯

(१६) (हे नबी) आप क़ुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलायें ।[4]

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ⑰

(१७) उसको एकत्रित करना तथा (आप के मुख से) पढ़ाना हमारा दायित्व है ।[5]

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ⑱

(१८) हम जब उसे पढ़ लें,[6] तो आप उसके

---

[1]अर्थात उसको उसके सभी कर्मों से अवगत किया जायेगा, नया हो अथवा पुराना, प्रथम हो अथवा अंतिम, क्षुद्र हो अथवा महान । ﴿وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا﴾ (अल-कहफ़-४९)

[2]अर्थात उसके अपने हाथ, पांव, जीभ तथा अन्य अंग गवाही देंगे, अथवा यह अर्थ है कि इंसान अपने दोष स्वयं जानता है ।

[3]अर्थात लड़े-झगड़े, एक से एक बहाना करे, किन्तु ऐसा करना न उसके लिए लाभप्रद है तथा न वह अपने अंत:करण को शान्त कर सकता है ।

[4]आदरणीय जिब्रील जब वह्यी (प्रकाशना) लेकर आते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनके साथ शीघ्रता से पढ़ते जाते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें । अल्लाह ने आपको फ़रिश्ते के साथ-साथ इस प्रकार पढ़ने से रोक दिया । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल क़ियाम:) यह विषय पहले भी गुजर चुका है । ﴿وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ﴾ (सूरह ताहा-११४) अत: इस आदेश के पश्चात आप चुप होकर सुनते ।

[5]अर्थात आपके सीने में उसको एकत्रित कर देना तथा आप की ज़बान पर इसे जारी कर देना हमारा दायित्व है, ताकि उसका कोई भाग आपके स्मरण से न निकले तथा आपको न भूले ।

[6]अर्थात फ़रिश्ते (जिब्रील) के द्वारा जब हम उस का पाठ आप पर पूरा कर लें ।

पढ़ने का अनुकरण करें ।[1]

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾

(१९) फिर उसको स्पष्ट कर देना हमारा दायित्व है ।[2]

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

(२०) नहीं-नहीं, तुम तो शीघ्र प्राप्त होने वाले (संसार) से प्रेम रखते हो ।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा परलोक को छोड़ बैठे हो ।[3]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

(२२) उस दिन बहुत से मुख प्रफुल्लित (एवं प्रकाशित) होंगे ।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

(२३) अपने प्रभु की ओर देखते होंगे ।[4]

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा कितने मुख उस दिन (कुरूप एवं) उदास होंगे ।[5]

---

[1]अर्थात उसके आदेश तथा धर्म-विधान लोगों को पढ़कर सुनायें तथा उनका पालन भी करें ।

[2]अर्थात उसके जटिल स्थानों की व्याख्या तथा हलाल (वैध) एवं हराम (निषेध) का स्पष्टी-करण हमारा दायित्व है । इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन के संक्षेपों का जो वर्णन, मुब्हमों (गुढ़ों) की व्याख्या तथा उसके साधारण विषयों की जो विशेषता बताई है, जिसे हदीस कहा जाता है, यह भी अल्लाह की ओर से दिव्य वाणी तथा सुझाई बातें हैं इसलिए उन्हें भी क़ुरआन की भाँति मानना आवश्यक है ।

[3]अर्थात प्रलय के दिन को झुठलाना, ما أنزل الله का विरोध तथा सत्य से विमुखता इसलिए है कि तुमने सांसारिक जीवन को ही सब कुछ समझ रखा है तथा आख़िरत तुम्हें भूली हुई है ।

[4]यह ईमानवालों के चेहरे होंगे जो अपने शुभ परिणाम के कारण शान्त, प्रसन्न तथा प्रकाशित होंगे । फिर अल्लाह के दर्शन से भी आनंदित होंगे, जैसाकि सहीह हदीसों से स्पष्ट है तथा अहले सुन्नत का सर्वमान्य विश्वास है ।

[5]यह काफ़िरों के चेहरे होंगे । باسرة बदले हुए, पीले, शोक तथा चिन्ता से काले एवं कुरूप होंगे ।

(२५) समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जायेगा ।[1]	تَظُنُّ اَنۡ يُّفۡعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ ﴿۲۵﴾
(२६) नहीं-नहीं[2] जब (प्राण) हंसुली तक पहुँच जायेंगे ।[3]	كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِىَ ۙ ﴿۲۶﴾
(२७) तथा कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूँक करने वाला है ।[4]	وَقِيۡلَ مَنۡ ٜ رَاقٍ ۙ ﴿۲۷﴾
(२८) तथा उसने विश्वास कर लिया कि यह जुदाई का समय है ।[5]	وَّظَنَّ اَنَّهُ الۡفِرَاقُ ۙ ﴿۲۸﴾
(२९) तथा पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी ।[6]	وَالۡتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ ﴿۲۹﴾
(३०) आज तेरे प्रभु की ओर चलना है ।	اِلٰى رَبِّكَ يَوۡمَئِذِ ۨالۡمَسَاقُ ؕ ﴿۳۰﴾
(३१) तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज़ पढ़ी ।[7]	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ ﴿۳۱﴾

---

[1]तथा वह यही कि नरक में उनको फेंक दिया जायेगा ।

[2]अर्थात यह संभव नहीं कि काफ़िर प्रलय पर ईमान ले आयें ।

[3]تراقي यह تَرْقُوَة का बहुवचन है, यह गरदन के निकट सीने तथा कंधे के बीच एक हड्डी है अर्थात जब मौत का पंजा तुम्हें अपनी जकड़ में ले लेगा ।

[4]अर्थात उपस्थित लोगों में कोई है जो झाड़-फूँक के द्वारा तुम्हें मौत के पंजे से छुड़ा ले । कुछ ने इसका अर्थ यह भी किया है कि उसकी आत्मा (प्राण) लेकर कौन चढ़े ? दया के फ़रिश्ते अथवा यातना के ? इस स्थिति में यह वचन फ़रिश्तों का है ।

[5]अर्थात वह व्यक्ति विश्वास कर लेगा जिसके प्राण हँसुली तक पहुँच गए हैं कि अब धन, संतान तथा संसार की प्रत्येक वस्तु से विदाई का समय आ गया ।

[6]इससे या तो मौत के समय पिंडली का पिंडली से मिल जाना तात्पर्य है, अथवा निरन्तर दुख । सामान्य भाष्यकारों ने दूसरा अर्थ लिया है । (फ़तहुल क़दीर)

[7]अर्थात इस मनुष्य ने न अल्लाह तथा रसूल एवं कुरआन को माना, न नमाज़ पढ़ी, अर्थात अल्लाह की इबादत नहीं की ।

(३२) अपितु झुठलाया तथा पलट गया ।[1] وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

(३३) फिर अपने घरवालों की ओर इतराता हुआ गया ।[2] ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾

(३४) अफ़सोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर । اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

(३५) फिर दुख है तथा ख़राबी है तेरे लिए ।[3] ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾

(३६) क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे व्यर्थ छोड़ दिया जायेगा ।[4] اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

(३७) क्या वह एक गाढ़े पानी की बूँद न था, जो टपकाया जाता है ? اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

(३८) फिर वह रक्त का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया तथा ठीक रूप से बना दिया ।[5] ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾

(३९) फिर उससे युगल अर्थात नर-मादा बनाये । فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾

(४०) क्या (अल्लाह तआला) इस (बात) पर सामर्थ नहीं कि मृत को जीवित कर दे ।[6] اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

---

[1]अर्थात रसूल को झुठलाया तथा ईमान एवं आज्ञापालन नहीं किया ।

[2] يَتَمَطّٰى इतराता तथा अकड़ता हुआ ।

[3]यह धमकी का शब्द है । कहा जाता है कि यह वास्तव में أولاك الله ما تكرهه है, "अल्लाह तुझे ऐसी चीज़ में ग्रस्त कर दे जिसे तू अप्रिय माने ।"

[4]अर्थात उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा न किसी से रोका जायेगा, न उसका हिसाब लिया जायेगा, न दण्ड । अथवा उसे सदा के लिए क़ब्र में छोड़ दिया जायेगा तथा उसे पुन: जीवित नहीं किया जायेगा ।

[5] فَسَوّٰى अर्थात उसे ठीक-ठाक किया तथा उसकी पूर्ति की तथा उसमें आत्मा फूँकी ।

[6]अर्थात जो अल्लाह इंसानों को इस प्रकार अनेक स्थितियों से गुज़ार कर पैदा करता है क्या मरने के पश्चात उन्हें पुन: जीवित करने पर समर्थ नहीं है ?

सूरतुद्दहर-७६

سُورَةُ الدَّهْرِ

सूर: दहर* मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें इक्तीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ①

(१) निश्चय ही मनुष्य पर युग का एक वह समय भी गुजर चुका है[1] जबकि वह कोई वर्णन करने योग्य वस्तु न था।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ②

(२) नि:संदेह हमने मनुष्य को मिले जुले वीर्य से परीक्षा के लिए पैदा किया।[2] तथा उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया।[3]

---

*इसके मक्की तथा मदनी होने में मतभेद है। साधारण विद्वान इसे मदनी मानते हैं। कुछ कहते हैं कि अंतिम दस आयतें मक्की हैं, शेष मदनी हैं। (फ़तहुल क़दीर) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमअ: के दिन फ़ज्र की नमाज में الٓمٓ تَنزِيلُ السَّجْدَة (अलिफ़॰ लाम॰मीम तंजीलुस सजदा) तथा सूरह इंसान (दहर) पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:, बाबु मा युकरउ फ़ी यौमिल जुमुअते) इस सूर: को सूर: इंसान भी कहा जाता है।

[1] هَلْ यहाँ قَدْ के अर्थ में है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है। الإنسانُ से कुछ के निकट मानव-पिता अर्थात प्रथम मानव आदरणीय आदम अभिप्राय है। حِينٌ (एक समय) से अभिप्राय प्राण फूंके जाने से पूर्व का समय है जो चालीस वर्ष है तथा अधिकतर व्याख्याकारों के विचार से الإنسان शब्द मानव जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है, तथा حِينٌ (समय) से तात्पर्य गर्भ अर्थात माँ के गर्भ में रहने की अवधि है, जिसमें वह वर्णनीय वस्तु नहीं होता। इसमें मानो इंसान को सावधान किया गया है कि वह एक सुन्दर रूप में जब बाहर आता है तो प्रभु के आगे अकड़ता, इतराता है। उसे अपनी हैसियत याद रखनी चाहिए कि मैं तो वही हूँ, जब मैं नास्ति संसार में था, तो मुझे कौन जानता था ?

[2]मिश्रित का अभिप्राय नर-नारी दोनों के वीर्य का मिलना, फिर उनका विभिन्न स्थितियों से गुजरना है। पैदा करने का उद्देश्य इंसान की परीक्षा है। ﴿لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا﴾ (*अल-मुल्क-२*)

[3]अर्थात उसे सुनने तथा देखने की शक्ति प्रदान की, ताकि वह सब कुछ देख तथा सुन सके तथा तत्पश्चात आज्ञापालन अथवा अवज्ञा का मार्ग चुन सके।

إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ③

(३) हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न ।[1]

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۟ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ④

(४) नि:संदेह हमने काफ़िरों के लिए जंजीरें तथा तौक एवं भड़कती अग्नि तैयार कर रखी है ।[2]

إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ⑤

(५) नि:संदेह सदाचारी लोग उस प्याले से पियेंगे जिसमें काफ़ूर का मिश्रण है ।[3]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ ٱللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ⑥

(६) जो एक स्रोत है ।[4] जिससे अल्लाह के बंदे पियेंगे, उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे)[5]

---

[1]अर्थात उपरोक्त शक्तियों तथा योग्यताओं के अतिरिक्त हमने स्वयं भी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, अपनी किताबों तथा सत्य के प्रचारकों द्वारा सत्य के मार्ग को स्पष्ट कर दिया है ।अब यह उसकी पसन्द है कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करके कृतज्ञ बन्दा बन जाये अथवा अवज्ञा का मार्ग अपनाकर कृतघ्न बन जाये। जैसे एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया . «كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو: فَبَائِعٌ نَفْسَهُ، فَمُوبِقُهَا، أَوْ مُعْتِقُهَا» "प्रत्येक प्राणी अपने प्राण का क्रय-विक्रय करता है तो उसे नाश कर देता है अथवा उसे मुक्त करा लेता है" (सहीह मुस्लिम, किताबुत तहारत, बाबु फ़जलिल वज़ूए) अर्थात अपने कर्म तथा करतूत के द्वारा नष्ट अथवा मुक्त कराता है। यदि बुराई कमायेगा तो अपने प्राण को नाश तथा भलाई कमायेगा तो प्राण को मुक्त करा लेगा।

[2]यह अल्लाह की दी हुई स्वाधीनता के ग़लत प्रयोग का परिणाम है ।

[3]हतभागों के मुक़ाबिल यह भाग्यशाली लोगों की चर्चा है। كأس (कास) उस प्याले को कहते हैं जो भरा हुआ हो तथा छलक रहा हो। कपूर शीतल तथा एक विशेष सुगन्ध रखती है, उसके मिलाने से मदिरा का स्वाद दो गुना तथा सुगन्ध प्राण को सुगंधित कर देगी।

[4]अर्थात यह कपूर मिली मदिरा दो चार सुराहियों अथवा घड़ों में नहीं होगी, बल्कि उसकी एक नहर होगी, अर्थात यह समाप्त नहीं होगी।

[5]अर्थात उसे जिधर चाहेंगे मोड़ लेंगे, अपने महलों तथा घरों में, अपनी सभाओं तथा बैठकों में तथा बाहर मैदानों एवं मनोरंजन स्थानों में।

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝

(७) जो मन्नत पूरी करते हैं[1] तथा उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है।[2]

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝

(८) तथा अल्लाह (तआला) के प्रेम में भोजन कराते हैं, निर्धन, अनाथ एवं क़ैदियों को।

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝

(९) हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता के लिए[3] खिलाते हैं, तुमसे बदला चाहते हैं न कृतज्ञता।

إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝

(१०) नि:संदेह हम अपने प्रभु से उस दिन का डर रखते हैं[4] जो तंगी एवं कठोरता वाला होगा।

---

[1]अर्थात मात्र एक अल्लाह की उपासना करते हैं। मनौती भी मानते हैं तो मात्र अल्लाह के लिए, तथा फिर उसे पूरी करते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि मनौती पूरी करना भी आवश्यक है, प्रतिबंध यह है कि अवज्ञा की न हो। जैसाकि हदीस में है कि जिसने मन्नत मानी हो कि वह अल्लाह का आज्ञापालन करेगा तो उसका पालन करे तथा जिसने अल्लाह की अवज्ञा की मन्नत मानी हो तो वह अल्लाह की अवज्ञा न करे अर्थात उसे पूरी न करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान, बाबुन नज़्रे फित ताअते)

[2]अर्थात उस दिन से डरते हुए अवज्ञा तथा निषेध काम नहीं करते। बुराई फैल जाने का अभिप्राय यह है कि उस दिन अल्लाह की पकड़ से केवल वही बचेगा जिसे अल्लाह अपने क्षमा के दामन में ढक लेगा। शेष सभी उसकी बुराई की लपेट में होंगे।

[3]अथवा भोजन के प्रेम के उपरान्त, वह अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ग़रीबों को खाना खिलाते हैं। बंदी यदि मुसलमान न हो तब भी उसके साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया है। बद्र के काफ़िर बंदियों के विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को आदेश दिया कि उनका आदर करो, सहाबा पहले उन्हें खिलाते फिर स्वय खाते। (इब्ने कसीर) इसी प्रकार दास तथा नौकर-चाकर भी इसी के अधीन आते हैं जिनके साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया है। आपकी अंतिम वसीयत यही थी कि नमाज़ तथा अपने ग़ुलामों का ध्यान रखना। (इब्ने माजा, किताबुल वसाया, बाबु हल औसा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

[4]आदरणीय इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने قَمْطَرِيرٌ का अर्थ दीर्घ किया है। عَبُوسٌ कड़ा, अर्थात वह दिन अत्यन्त कठिन होगा तथा कड़ाई के कारण काफ़िरों पर बहुत ही लम्बा होगा। (इब्ने कसीर)

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝١١

(११) तो उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया[1] तथा उन्हें ताज़गी एवं प्रसन्नता पहुँचायी ।[2]

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝١٢

(१२) तथा उन्हें उनके धैर्य के बदले[3] स्वर्ग एवं रेशमी वस्त्र प्रदान किये ।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَاۤىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝١٣

(१३) ये वहाँ तख़्तों (आसनों) पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहाँ सूर्य की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता ।[4]

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝١٤

(१४) तथा उन (स्वर्ग) के साये उन पर झुके होंगे[5] तथा उनके (मेवे) एवं गुच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे ।[6]

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ

(१५) तथा उन पर चाँदी के बर्तनों एवं उन

---

[1]जैसाकि वह उसकी बुराई से डरते थे तथा उससे बचने के लिये अल्लाह की आज्ञा का पालन करते थे ।

[2]ताज़गी चेहरों पर होगी तथा प्रसन्नता दिलों में । जब मनुष्य का दिल प्रसन्न होता है तो उसका चेहरा भी प्रसन्नता से खिल जाता है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में आता है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रसन्न होते तो आपका चेहरा ऐसे प्रकाशमान होता मानो चाँद का टुकड़ा है । (अलबुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाबु ग़ज़्वते तबूक, मुस्लिम, किताबुत तौबा, बाबु हदीसे तौबते काब इब्ने मालिक)

[3]धैर्य का अर्थ है धर्म के मार्ग में जो कष्ट आयें उन्हें प्रसन्नतापूर्वक सहन करना, अल्लाह के मार्ग में मनोकांक्षा तथा स्वार्थों का त्याग तथा अवज्ञा से बचना ।

[4]زَمْهَرِيْر कड़े जाड़े को कहते हैं । अभिप्राय यह है कि वहाँ सदा एक ही ऋतु रहेगी, तथा वह है वसन्त ऋतु, न अति गर्मी तथा न कड़ी शीत ।

[5]यद्यपि वहाँ सूर्य का ताप नहीं होगा, उस के उपरान्त भी वृक्षों के साये उन पर झुके होंगे । अथवा अभिप्राय यह है कि उनकी शाखायें उनके निकट होंगी ।

[6]अर्थात वृक्षों के फल एक आज्ञाकारी के समान जब खाने की इच्छा होगी तो झुक कर इतने निकट हो जायेंगे कि बैठे, लेटे भी उन्हें तोड़ ले । (इब्ने कसीर)

وَّ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۟ ⑮

गिलासों का दौर चलाया जायेगा,[1] जो शीशे के होंगे।

قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ⑯

(१६) शीशे भी चाँदी के[2] जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान से नाप रखा होगा।[3]

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ ⑰

(१७) तथा उन्हें वहाँ वे पेय पदार्थ पिलाये जायेंगे जिनमें सोंठ का मिश्रण होगा।[4]

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ⑱

(१८) स्वर्ग की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है।[5]

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ⑲

(१९) तथा उनके चारों ओर वे कम आयु बच्चे घूमते-फिरते होंगे जो सदैव रहने वाले हैं,[6] जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे

---

[1]अर्थात नौकर (सेवक) उन्हें लेकर स्वर्गवासियों के बीच फिरेंगे।

[2]अर्थात यह बर्तन तथा प्याले चाँदी एवं शीशे से बने होंगे, अति सुन्दर तथा सूक्ष्म। मानो यह ऐसी बनावट है जिसकी कोई तुलना संसार में नहीं।

[3]अर्थात उनमें मदिरा ऐसे ढंग से डाली गई होगी कि जिससे वह तृप्त हो जायेंगे, प्यास का संवेदन न करें तथा प्यालों में भी शेष बची न रहे। अतिथि-सत्कार के इस ढंग में भी अतिथियों के आदर-सत्कार ही का प्रयोजन है।

[4]زَنْجَبِيل (सोंठ, सूखी अदरक) को कहते हैं। यह गर्म होती है, इसके मिश्रण से एक स्वादिष्ट कडूवापन आ जाता है। इसके सिवा यह अरबों की रूचिकर चीज़ है। इसलिए उनके क़हवे में भी अदरक का मिश्रण होता है। अभिप्राय है कि स्वर्ग में एक मदिरा वह होगी जो शीतल होगी जिसमें कपूर मिला होगा तथा दूसरी गर्म जिसमें सूखी अदरक का मिश्रण होगा।

[5]अर्थात सोंठ की इस शराब की भी नहर होगी जिसे सलसबील कहा जाता है।

[6]मदिरा के गुणों को वर्णन करने के पश्चात पिलाने वालों के गुण बताये जा रहे हैं। "सदा रहेंगे" का एक अर्थ तो यह है कि स्वर्गवासियों के समान उन सेवकों को भी मौत नहीं आयेगी। दूसरा यह कि उनकी बाल आयु तथा सुन्दरता सदा रहेगी, न वे बूढ़े होंगे न उनकी शोभा एवं सौन्दर्य में कोई परिवर्तन होगा।

हुए (सच्चे) मोती हैं ।[1]

(२०) तथा तू वहाँ जिस ओर भी दृष्टि डालेगा पूर्ण उपहार तथा महान राज्य ही देखेगा ।[2]

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

(२१) उन के (शरीर) पर हरे महीन तथा मोटे रेशमी वस्त्र होंगे[3] तथा उन्हें चाँदी के कंगन का आभूषण पहनाया जायेगा[4] तथा उन्हें उन का प्रभु शुद्ध एवं पवित्र शराब पिलायेगा ।

عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾

(२२) (कहा जायेगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला तथा तुम्हारे प्रयत्नों की प्रशंसा की गई ।

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾

(२३) नि:संदेह हमने तुझ पर क्रमश: क़ुरआन अवतरित किया है ।[5]

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿٢٣﴾

(२४) तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह[6] तथा उनमें से किसी पापी अथवा कृतघ्न

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾

---

[1]सुन्दरता, स्वच्छता तथा ताज़गी में वह मोतियों के समान होंगे, बिखरे हुए का अर्थ है सेवा के लिए सब ओर फैले हुए तथा अति तेज़ी के साथ सेवा में लीन होंगे ।

[2]ثَمَّ जगह के अर्थ में है وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ، أي: هُنَاكَ अर्थात वहाँ स्वर्ग में जहाँ कहीं भी देखोगे ।

[3]سُندُس (सुन्दुस) महीन रेशमी वस्त्र तथा إِسْتَبْرَق (इस्तब्रक़) मोटा रेशम ।

[4]जैसे एक युग में राजा, प्रमुख तथा वैभवशाली लोग पहना करते थे ।

[5]अर्थात एक ही बार न उतार कर आवश्यकतानुसार विभिन्न समयों में उतारा । इसका दूसरा अभिप्राय यह भी हो सकता है कि यह क़ुरआन हमने उतारा है, यह तेरा अपना गढ़ा हुआ नहीं है, जैसाकि मुशरिकीन दावा करते हैं ।

[6]अर्थात उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर । वह तेरी सहायता में कुछ देर कर रहा है तो इस में उसकी हिक्मत है । अत: धैर्य तथा साहस की आवश्यकता है ।

का कहना न मान ।[1]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّأَصِيلًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अपने प्रभु के नाम का प्रातः एवं सायं (काल) वर्णन किया कर ।[2]

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा रात्रि के समय उसके समक्ष सज्दे कर तथा बहुत रात तक उसकी महिमागान किया कर ।[3]

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾

(२७) निःसंदेह ये लोग शीघ्र प्राप्त होने वाली (दुनिया) को चाहते हैं[4] तथा अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं ।[5]

---

[1]अर्थात यदि यह तुझे अल्लाह के अवतरित किये आदेशों से रोकें तो उनका कहना न मान, अपितु धर्मप्रचार तथा शिक्षा-दीक्षा का काम जारी रख तथा अल्लाह पर भरोसा रख वह लोगों से तेरी रक्षा करेगा। آثم (पापी) जो कर्म में अल्लाह का अवज्ञाकारी हो كفور (कफ़ूर) जो दिल से कुफ़्र (इंकार) करता हो अथवा कुफ़्र में सीमा पार कर गया हो कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय वलीद बिन मुगीरा है, जिसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा था कि इस काम से रुक जा, हम तुझे तेरे कहने के अनुसार धन दे देते हैं तथा अरब की जिस सुंदरी से तू विवाह करना चाहे हम तेरा विवाह करा देते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]प्रातः एवं संध्या से अभिप्राय है, हर समय में अल्लाह का स्मरण कर। अथवा प्रातः से तात्पर्य फ़ज्र की नमाज़ तथा संध्या से अस्र की नमाज़ है।

[3]'रात में सजदा कर' से अभिप्राय कुछ ने मग़रिब तथा एशा की नमाज़ें ली हैं तथा تسبيح (तस्बीह) का अर्थ है कि जो बातें अल्लाह के योग्य नहीं उनसे उसकी पवित्रता का वर्णन कर। कुछ ने इससे रात की ऐच्छिक नमाज़ तहज्जुद लिया है। أمر (आदेश) यहाँ अच्छाई तथा उत्तम के लिए है।

[4]अर्थात यह मक्का के काफ़िर तथा इन जैसे अन्य लोग सांसारिक माया-मोह में लीन हैं तथा पूरा ध्यान इसी पर है।

[5]अर्थात प्रलय को उसकी गंभीरता तथा भयानकता के कारण उसे भारी दिन कहा, तथा त्याग देने का अर्थ है कि उसकी तैयारी नहीं करते न उसकी परवाह करते हैं।

نَحْنُ خَلَقْنَٰهُمْ وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَٰلَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हमने उन्हें पैदा किया तथा हमने ही उनके जोड़ (एवं बंधन) सुदृढ़ किये[1] तथा हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे अन्यों को बदल लायें ।[2]

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾

(२९) नि:संदेह यह तो एक शिक्षा है, तो जो चाहे अपने प्रभु का मार्ग प्राप्त कर ले ।[3]

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

(३०) तथा तुम न चाहोगे परन्तु यह कि अल्लाह तआला ही चाहे ।[4] नि:संदेह अल्लाह तआला ज्ञाता एवं हिक्मत वाला है ।[5]

يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًۢا ﴿٣١﴾

(३१) जिसे चाहे अपनी कृपा में सम्मिलित कर ले, तथा पापियों (अत्याचारियों) के लिए उसने कष्टदायी यातना तैयार कर रखी है ।[6]

---

[1]अर्थात उनकी पैदाईश को सुदृढ़ बनाया। उनके जोड़ों, रंगों तथा तन्तुओं से परस्पर मिला दिया है। दूसरे शब्दों में उनका माँझा कड़ा किया।

[2]अर्थात उनका विनाश करके उनकी जगह किसी अन्य समुदाय को पैदा कर दें। अथवा इसका अभिप्राय क़यामत के दिन पुन: जीवित होना है।

[3]अर्थात इस क़ुरआन से मार्गदर्शन प्राप्त करे।

[4]अर्थात तुममें से कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि वह स्वयं को संमार्ग पर लगा ले, अपने लिए कोई लाभ प्राप्त कर ले। हाँ, यदि अल्लाह चाहे तो ऐसा संभव है, उसके चाहे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। हाँ, सही संकल्प पर वह प्रतिफल अवश्य प्रदान करता है। «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى» "कर्म इरादे से होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए वह है जिस का वह इरादा करे।" (सहीह बुख़ारी, प्रथम हदीस)

[5]चूँकि वह ज्ञाता तथा हिक्मत वाला है अत: उसके प्रत्येक कार्य में हिक्मत होती है। इसी कारण मार्गदर्शन तथा गुमराही के निर्णय भी ऐसे ही अललटप नहीं होते, अपितु जिसे मार्गदर्शन दिया जाता है वह वास्तव में उसके योग्य होता है तथा जिसके भाग में गुमराही है, वह वास्तव में उसी योग्य होता है।

[6] الظَّالِمِينَ, कर्मकारक इसलिए है कि इससे पहले يُعَذِّبُ लुप्त है।

सूरतुल मुर्सलात-७७

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ

सूर: मुर्सलात* मक्का में अवतरित हुई, इसमें पचास आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ﴿۱﴾

(१) मनमोहक लगातार चलने वाली धीमी वायु की सौगन्ध ![1]

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾

(२) फिर ज़ोर से झोंका देने वालियों की सौगन्ध ![2]

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾

(३) तथा (बादल को) उभार कर फैलाने वालियों की सौगन्ध ![3]

---

*यह सूरह मक्की है जैसाकि सहीहैन (बुख़ारी एवं मुस्लिम) में रिवायत है। आदरणीय इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि हम मिना की एक गुफ़ा में थे कि आप पर सूरह मुर्सलात अवतरित हुई। आप उसे पढ़ रहे थे तथा मैं उसको आप से प्राप्त कर रहा था कि अकस्मात एक नाग आ गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे मार दो, किन्तु वह तेज़ी से भाग गया। आप ने फ़रमाया कि तुम उसकी बुराई से तथा वह तुम्हारी बुराई से बच गया। (बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुर्सलात, मुस्लिम, किताबु कतलिल हय्याते व ग़ैरहा) कभी-कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मग़रिब की नमाज़ में भी यह सूरह पढ़ी है (बुख़ारी, किताबुल अज़ाने, बाबुल क़िराअते फ़िल मग़रिब, मुस्लिम किताबुस सलाते बाबुल क़िराअते फ़िस सुबहे)

[1]इस भावार्थ के आधार पर عرفًا का अर्थ निरन्तर होगा। कुछ ने مُرْسلات से अभिप्राय अम्बिया अथवा फ़रिश्ता लिया है। इस स्थिति में عرفًا का अर्थ दैवी प्रकाशना अथवा धर्म विधान होगा।

[2]अथवा फ़रिश्ते अभिप्राय हैं जो कभी वायु के प्रकोप के साथ भेजे जाते हैं।

[3]अथवा उन फ़रिश्तों की सौगन्ध, जो बादलों को फैलाते हैं अथवा अन्तरिक्ष में अपने पंख फैलाते हैं। फिर भी इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम तबरी ने इन तीनों से वायु तात्पर्य लेने को अधिमान दिया है, जैसाकि अनुवाद में भी इसी को अपनाया गया है।

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۝٤

(४) फिर सत्य-असत्य को अलग-अलग करने वाले ।[1]

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝٥

(५) तथा प्रकाशना लाने वाले फ़रिश्तों की सौगन्ध ![2]

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝٦

(६) जो (प्रकाशना) आक्षेप निवारण अथवा सचेत कर देने के लिए होती है ।[3]

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۝٧

(७) निःसंदेह जिस वस्तु का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित रूप से होने वाली है ।[4]

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۝٨

(८) तो जब तारे प्रकाशहीन कर दिये जायेंगे ।[5]

---

[1]अर्थात उन फ़रिश्तों की सौगन्ध जो सत्य और असत्य के बीच अंतर करने वाले आदेश लेकर उतरते हैं, अथवा अभिप्राय क़ुरआन की आयतें हैं जिनसे वैध-निषेध, सत्य-असत्य का अंतर होता है, अथवा रसूल अभिप्राय हैं जो ईश्वरीय प्रकाशना द्वारा सत्य और असत्य के बीच अंतर स्पष्ट करते हैं ।

[2]जो अल्लाह की वाणी पैग़म्बरों को पहुँचाते हैं, अथवा अल्लाह के रसूल तात्पर्य हैं जो अल्लाह की ओर से अवतरित प्रकाशना को लोगों तक पहुँचाते हैं ।

[3]दोनों कारणवाची कर्म हैं لأجل الأعذار والإنذار अर्थात फ़रिश्ते प्रकाशना लेकर आते हैं ताकि लोगों पर तर्क स्थापित हो जाये तथा यह बहाना न शेष रहे कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का संदेश ही नहीं लाया, अथवा उद्देश्य डराना है उनको जो कुफ़्र अथवा इंकार करने वाले होंगे । अथवा अर्थ है ईमान वालों के लिए शुभसूचना तथा काफ़िरों के लिए चेतावनी । इमाम शौकानी फ़रमाते है कि عاصفات، مُرْسَلاتٌ तथा ناشِراتٌ से अभिप्राय वायु तथा فارِقاتٌ एवं مُلْقِياتٌ से फ़रिश्ते हैं । यही बात मान्य है ।

[4]सौगन्ध का अभिप्राय जिसकी सौगन्ध खाई जाये उसका महत्व लोगों पर स्पष्ट करना तथा उसकी सत्यता को व्यक्त करना होता है । जिसकी शपथ ली जा रही है वह (अथवा सौगन्ध का उत्तर) यह है कि तुमसे प्रलय का जो वादा किया जा रहा है वह निश्चय घटित होगी अर्थात उसमें संदेह करने की नहीं अपितु उसके लिए तैयारी करने की आवश्यकता है, यह प्रलय कब घटित होगी ? आगामी आयतों में स्पष्ट किया जा रहा है ।

[5]طَمْس का अर्थ मिट जाना तथा बिना चिन्ह होना है । अर्थात जब तारों का प्रकाश समाप्त बल्कि उनका चिन्ह तक मिट जायेगा ।

(९) तथा जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जायेगा।	وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
(१०) तथा जब पर्वत टुकड़े-टुकड़े कर के उड़ा दिये जायेंगे।[1]	وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾
(११) तथा जब संदेष्टाओं को निर्धारित समय पर लाया जायेगा।[2]	وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ﴿١١﴾
(१२) किस दिन के लिए (उन्हें) ठहराया गया है ?[3]	لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ﴿١٢﴾
(१३) निर्णय के दिन के लिए।[4]	لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾
(१४) तथा तुझे क्या ज्ञात कि निर्णय का दिन क्या है ?	وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾
(१५) उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।[5]	وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾

---

[1]अर्थात उन्हें धरती से उखाड़कर कण-कण कर दिया जायेगा तथा धरती पूर्ण रूप से स्वच्छ तथा समतल हो जायेगी।

[2]अर्थात निर्णय तथा न्याय के लिए, उनकी बातें सुनकर उनकी जातियों के बारे में निर्णय किया जायेगा।

[3]यह प्रश्न महानता तथा आश्चर्य के लिए है। अर्थात कैसे महान दिन के लिए, जिसकी कठोरता एवं गंभीरता लोगों के लिए बड़ी आश्चर्यजनक होगी, इन पैग़म्बरों को एकत्र होने का समय दिया गया है।

[4]अर्थात जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जायेगा, कोई स्वर्ग तथा कोई नरक में जायेगा।

[5]अर्थात विनाश हो ! कुछ कहते हैं कि وَيْل नरक की एक वादी का नाम है। यह आयत इस सूरह में बार-बार दुहराई गई है। इसलिए कि प्रत्येक झुठलाने वाले का अपराध दूसरे से भिन्न प्रकार का होगा तथा इसी हिसाब से यातनायें भी अनेक प्रकार की होंगी। इस विनाश के विभिन्न प्रकार हैं, जिन्हें झुठलाने वालों के लिए अलग-अलग वर्णन किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦﴾

(१६) क्या हमने पूर्व के लोगों को नष्ट नहीं किया ?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाये ।[1]

كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾

(१८) हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं ।[2]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾

(१९) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है ।

أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٢٠﴾

(२०) क्या हमने तुम्हें तुच्छ जल से (वीर्य से) पैदा नहीं किया ।

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿٢١﴾

(२१) फिर हमने उसे सुदृढ़ (एवं सुरक्षित) स्थान में रखा ।[3]

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾

(२२) एक निर्धारित समय तक ।[4]

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर हमने अनुमान लगाया[5] तो हम क्या अच्छा अनुमान लगाने वाले हैं ।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है ।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

(२५) क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं वनाया ?

---

[1]अर्थात मक्का के काफ़िर तथा उनसे सहमत लोग, जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाया ।

[2]अर्थात दण्ड देते हैं लोक में अथवा परलोक में ।

[3]अर्थात माता के गर्भाशय में ।

[4]अर्थात गर्भ की अवधि तक, छः अथवा नौ महीने ।

[5]अर्थात माँ के गर्भाशय में शारीरिक संरचना एवं बनावट का सहीह अनुमान किया कि दोनों आँखों, दोनों कानों, दोनों हाथों तथा पाँवों के बीच कितनी दूरी रहनी चाहिए ।

أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

(२६) जीवितों को भी तथा मृतकों को भी ।[1]

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा हमने उस में उच्च (एवं भारी) पर्वत बना दिये[2] तथा तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया ।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾

(२८) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है ।

انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) उस (नरक) की ओर जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे ।[3]

انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

(३०) चलो तीन शाखाओं वाले साये की ओर ।[4]

لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

(३१) जो वास्तव में न छाया देने वाली है तथा न ज्वाला से बचा सकती है ।[5]

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

(३२) नि:संदेह (नरक) चिंगारियाँ फेंकता है जो महल की भाँति हैं ।[6]

كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

(३३) जैसे कि वे पीले ऊँट हैं ।[7]

---

[1]अर्थात धरती जीवितों को अपने ऊपर तथा मुर्दों को अपने भीतर समेट लेती है ।

[2]رَوَاسِي، رَاسِيَةٌ का बहुवचन है । ثَوَابِتُ जमे हुए पर्वत, شَامِخَاتٌ ऊँचे ।

[3]यह फ़रिश्ते नरकवासियों से कहेंगे ।

[4]नरक से जो धूआँ उठेगा वह तीन दिशाओं में फैल जायेगा, अर्थात जैसे दीवार अथवा पेड़ की छाया होती है जिसमें इंसान सुख सुविधा प्रतीत करता है । इस धुआँ से वास्तव में इस प्रकार की छाया न होगी जिसमें नरकवासियों को सुख प्राप्त होगा ।

[5]अर्थात नरक की तपन से बचना भी संभव नहीं होगा ।

[6]इसका एक और अनुवाद है, जो लकड़ी के बोटे अर्थात भारी टुकड़े के समान हैं । (बोटा का अर्थ शहतीर के टुकड़े जिसे गैली भी कहते हैं)

[7]صُفْرٌ यह أَصْفَرُ (पीला) का बहुवचन है किन्तु अरब में इसका प्रयोग काले के अर्थ में भी है । इस अर्थ के आधार पर अभिप्राय यह है कि उसकी एक-एक चिंगारी इतनी बड़ी

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति है।

هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) आज (का दिन) वह दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे।[1]

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) न उन्हें उज्र (बहाना) करने की आज्ञा दी जायेगी।[2]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) यह है निर्णय का दिन, हमने तुम्हें तथा पूर्व के लोगों को (सब को) एकत्रित कर लिया है।[3]

فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾

(३९) तो यदि तुम मुझसे कोई चाल चल सकते हो तो चल लो।[4]

होगी जैसे महल अथवा दुर्ग। फिर प्रत्येक चिंगारी के इतने बड़े-बड़े खंड हो जायेंगे जैसे ऊँट होते हैं।

[1]महशर में काफ़िरों की विभिन्न दशायें होंगी। एक समय वह होगा जब वे वहाँ भी झूठ बोलेंगे, फिर अल्लाह तआला उनके मुखों पर मुहर लगा देगा तथा उनके हाथ-पाँव गवाही देंगे। फिर जिस क्षण उनको नरक में ले जाया जा रहा होगा उस समय व्याकुलता एवं व्यग्रता की स्थिति में उनकी ज़बानें गूँगी हो जायेंगी। कुछ कहते हैं कि बोलेंगे तो अवश्य, किन्तु उनके पास कोई तर्क नहीं होगा। मानो उन्हें बात करनी ही नहीं आती। जैसे हम दुनिया में भी ऐसे व्यक्ति के बारे में कहते हैं जिसके पास संतोषजनक तर्क नहीं होता, वह तो हमारे आगे बोल ही नहीं सका।

[2]अभिप्राय यह है कि उनके पास प्रस्तुत करने के लिए कोई उचित तर्क ही नहीं होगा जिसे वह प्रस्तुत करके मुक्त हो सकें।

[3]यह अल्लाह तआला बंदों को संबोधित करेगा कि हमने तुम्हें अपने पूर्ण सामर्थ्य से निर्णय करने के लिए एक ही मैदान में एकत्र कर लिया है।

[4]घोर धमकी तथा चेतावनी है कि यदि तुम मेरी पकड़ से निकल सकते हो तो निकलकर दिखाओ, परन्तु वहाँ किस में यह शक्ति होगी? यह आयत भी ऐसे ही है जैसे यह आयत है :

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) दुख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾

(४१) निःसंदेह सदाचारी लोग साये में हैं[1] तथा प्रवाहित स्रोतों में।

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें।[2]

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) (हे स्वर्गवालो!) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किये हुए कर्मों के बदले।[3]

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) निःसंदेह हम पुण्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।[4]

﴿ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا ﴾

हे जिन्न तथा मानव समूह, यदि तुम में आकाशों एवं धरती के किनारों से निकल जाने की शक्ति है तो निकल भागो। (*अर्रहमान*-३३)

[1]अर्थात पेड़ों तथा भवनों के साये, आग के धुयें का साया नहीं होगा, जैसे मुशरिकों के लिये होगा।

[2]प्रत्येक प्रकार के फल, जब भी इच्छा करेंगे आगे आ जायेंगे।

[3]यह अनुग्रह स्वरूप उनसे कहा जायेगा بِمَا كُنتُمْ में بِ कारणवाची है, अर्थात स्वर्ग के यह वरदान उन सत्कर्मों के कारण तुम्हें मिले हैं जो तुम संसार में करते रहे। इसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह की कृपा की प्राप्ति का साधन, जिसके कारण इंसान स्वर्ग में प्रवेश पायेगा, पुण्य के कर्म हैं। जो बिना अच्छे कर्म ही अल्लाह की दया तथा क्षमा के उम्मीदवार बन जाते हैं, उनका उदाहरण ऐसे ही है जैसे भूमि में हल चलाये और बीज बोये बिना उपज की आशा रखे, अथवा थूहड़ (काँटेदार पौधा) बोंकर स्वादिष्ट फल की आशा रखे।

[4]इसमें भी इस बात का प्रलोभन एवं निर्देश है कि यदि परलोक में शुभ परिणाम की इच्छा रखते हो तो दुनिया में नेकी (सत्कर्म) तथा भलाई का मार्ग अपनाओ।

وَيۡلٌ يَوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है ।[1]

كُلُوا۟ وَتَمَتَّعُوا۟ قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجۡرِمُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) (हे झुठलाने वालो !) तुम (संसार में) थोड़ा सा खा-पी लो तथा लाभ उठा लो, नि:संदेह तुम पापी हो ।[2]

وَيۡلٌ يَوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है ।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ٱرۡكَعُوا۟ لَا يَرۡكَعُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) उनसे जब कहा जाता है कि रूकूअ कर लो तो नहीं करते ।[3]

وَيۡلٌ يَوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है ।[4]

فَبِأَيِّ حَدِيثٍۭ بَعۡدَهُۥ يُؤۡمِنُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) अब इस (क़ुरआन) के पश्चात किस बात पर ईमान लायेंगे ?[5]

---

[1]कि सदाचारियों के भाग में तो स्वर्ग के सुख आये तथा इन के हिस्से में दुर्भाग्य ।

[2]यह प्रलय को झुठलाने वालों को संबोधित किया गया है, तथा यह आदेश धमकी तथा चेतावनी के लिए है । अच्छा कुछ दिन आनन्द ले लो, तुम जैसे अपराधियों के लिए यातना का शिकंजा तैयार है ।

[3]अर्थात उनको नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया जाता है तो नमाज़ नहीं पढ़ते ।

[4]अर्थात उनके लिए जो अल्लाह के आदेशों एवं आज्ञा तथा निषेधों को नहीं मानते ।

[5]अर्थात जब इस क़ुरआन के प्रति विश्वास नहीं करेंगे तो इसके पश्चात कौन सी वाणी है जिस पर ईमान लायेंगे ? यहाँ भी "हदीस" क़ुरआन को कहा गया है । एक कमज़ोर रिवायत में कहा गया है कि जो 'सूरह तीन' की अन्तिम आयत أَلَيْسَ الله .... الآية पढ़े तो वह उत्तर में कहे بلى وَ أنا على ذلك من الشّهدين तथा "सूरह क़ियाम:" के अंत के उत्तर में بَلَى तथा فبأىّ حديث بعده يُؤمِنُون के उत्तर में آمنّا بالله कहो । (अबू दाऊद, बाबु मिक्दारिर्रुकूअे वस सूजूद तथा ज़ईफु अबी दाऊद, लिल अलबानी) कुछ विद्वानों का विचार है कि जो सुने उसे भी उत्तर देना चाहिए ।